ग़ज़लधारा

ग़ज़ल का छंदशास्त्र

(पद्यभार आधारित पद्धति से छंद-रचना)

एवं

ग़ज़ल का तालशास्त्र

(ग़ज़ल के छंद और संगीत के ताल का समन्वय)

संशोधन-लेखन : उदय शाह

: प्रकाशक :

मनीषा शाह - धारा शाह

दादाटट्टू स्ट्रीट (सांई स्ट्रीट)

नवसारी-३९६४४५ (गुजरात)

Phone : (R) 02637-255511 & (M) 09428882632

प्रकाशक :

मनीषा शाह - धारा शाह

दादाटट्टू स्ट्रीट (सांई स्ट्रीट)
नवसारी-३९६४४५ (गुजरात)
Phone : (R) 02637-255511 & (M) 09428882632

सूचना :

‘ग़ज़लधारा’ पुस्तक के किसी भी अंश को कहीं और प्रकाशित करने के लिए ‘ग़ज़लधारा’ पुस्तक के रचयिता उदय शाह से अनुमति लेना आवश्यक नहीं है मगर उनको सूचित किया जाएगा तो ख़ुशी होगी।

उदय शाह

दादाटट्टू स्ट्रीट (सांई स्ट्रीट)
नवसारी-३९६४४५ (गुजरात)
Phone : (R) 02637-255511 & (M) 09428882632
Email : udayshah_ghazaldhara@yahoo.in

प्रथम आवृत्ति : मई-२०१५ (२०० पुस्तक)
द्वितीय आवृत्ति : जुलाई-२०१५ (१०० CD)
तृतीय आवृत्ति : जनवरी-२०१६ (e-book)

मेरी website : www.udayshahghazal.com से ‘ग़ज़लधारा’ की e-book (pdf file) निःशुल्क download की जा सकती है।

: मेरी बात :

मैं उदय शाह और मेरी पत्नी मनीषा शाह गायक-संगीतकार की हैसियत से कार्यरत हैं और उसमें ग़ज़ल हमारा मुख्य विषय रहा है। ग़ज़ल-गायन के साथ-साथ ग़ज़ल के छंदों का अभ्यास भी मेरे रस का विषय रहा है। छंद से काव्य-रचना में और ताल से संगीत-रचना में प्रवाहिता रहती है, इसलिए छंद और ताल के बीच घनिष्ठ संबंध है। इस जानकारी के आधार पर ग़ज़ल के छंद और संगीत के ताल के समन्वय के विषय पर मैं कुछ संशोधन कर सका हूं जिसे ग़ज़ल का तालशास्त्र कहा जा सकता है। इस विषय पर मेरे कुछ लेख सितंबर-२०११ से नवंबर-२०१२ के दरमियान संगीत विषय का मासिक 'संगीत कला विहार' के गुजराती विभाग में प्रकाशित हो चुके हैं तथा गुजराती त्रिमासिक 'कलाविमर्श' में जुलाई-२०१२ से ले कर अब तक नियमितरूप से प्रकाशित हो रहे हैं। 'ग़ज़ल के छंद और संगीत के ताल का समन्वय' विषय के संशोधन के दरमियान ग़ज़ल के छंदों की रचना के लिए अरूज़ से अलग और हिन्दी-गुजराती जैसी लिपिवाली भाषा के अनुरूप एक नयी पद्यभार आधारित पद्धति का भी मैं संशोधन कर पाया हूं। इस विषय पर मेरा लेख ग़ज़ल का गुजराती त्रिमासिक 'धबक' में सितंबर-२०१४ के अंक में प्रकाशित हो चुका है। हिन्दी-गुजराती जैसी भाषा के अनुरूप ग़ज़ल का छंदशास्त्र तथा ग़ज़ल के छंद और संगीत के ताल का समन्वय जो ग़ज़ल का तालशास्त्र है, मैं 'ग़ज़लधारा' पुस्तक के माध्यम से आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं। इस कार्य में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से मुझको सहायरूप होनेवाले सभी का मैं आभारी हूं।

'ग़ज़लधारा' पुस्तक हिन्दी-गुजराती जैसी लिपिवाली भाषा के लिए ग़ज़ल का छंदशास्त्र है जो ग़ज़लकारों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी तथा ग़ज़ल के छंद और संगीत के ताल के समन्वय की चर्चा ग़ज़ल का तालशास्त्र है जो गायक-संगीतकारों को उपयोगी सिद्ध होगी ऐसी मुझे श्रद्धा है। उर्दू में भी इस पद्धति से छंद-रचना करने पर कोई अड़चन नहीं होगी ऐसी मुझे श्रद्धा है। इस तरह 'ग़ज़लधारा' पुस्तक ग़ज़लकार, संगीतकार और गायक तीनों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

भविष्य में 'ग़ज़ल का बृहत् पिंगल' भी आपके सामने प्रस्तुत करने की इच्छा है कि जिसमें ग़ज़ल के और भी छंदों का समावेश करके सभी छंदों का और उनके संगीत के ताल के साथ समन्वय का विस्तृत वर्णन करुंगा। फ़िल-हाल 'ग़ज़लधारा' पुस्तक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए आनंद की अनुभूति करता हूं।

उदय शाह

दिनांक : १-५-२०१५

अनुक्रम

(१)
ग़ज़ल का स्वरूप

ग़ज़ल को काव्य के सभी प्रकार में उच्च स्थान पर रखा जा सकता है। कहते हैं कि ग़ज़ल तो महफ़िल की जान है। किसी एक निश्चित छंद (बहर) में एक जैसे रदीफ़ और काफ़िये वाले शेरों के समुह की रचना से एक ग़ज़ल की रचना होती है। एक ही ग़ज़ल के अलग-अलग शेर में अलग-अलग विषयों को पसंद किया जा सकता है। एक ही ग़ज़ल के अलग-अलग शेर का अपना अलग अस्तित्व होता है और हरेक शेर अपने आप में संपूर्ण होता है। एक ही ग़ज़ल के दो शेर एक-दूसरे से संबंधित नहीं होते। एक-दूसरे से संबंधित दो पंक्तियों (मिसरों) को मिला कर एक शेर बनता है कि जिसकी पहली पंक्ति को उला मिसरा और दूसरी पंक्ति को सानी मिसरा कहते हैं। एक ग़ज़ल में कम से कम पांच और ज़ियादा से ज़ियादा ग्यारह शेर होने चाहिए, मगर ग्यारह से ज़ियादा शेरों की ग़ज़लें भी पाई जाती हैं।

ग़ज़ल का पहला शेर कि जिसकी दोनों पंक्तियों में रदीफ़ (अनुप्रास) और काफ़िये (प्रास) का प्रयोग हुआ हो, उसे ग़ज़ल का मतला कहते हैं। एक ही ग़ज़ल में एक से ज़ियादा मतले कहे जा सकते हैं। मतला के अलावा बाक़ी के शेरों में सिर्फ़ दूसरी पंक्ति में ही रदीफ़ और काफ़िये को निभाना ज़रूरी है। ग़ज़ल के हरेक शेर की दूसरी पंक्ति के अंत में (मतले की दोनों पंक्ति के अंत में) रदीफ़ का प्रयोग होता है और रदीफ़ से पहले काफ़िये का प्रयोग किया जाता है। ग़ज़ल का अंतिम शेर कि जिसमें शायर ने अपने नाम या उपनाम (तख़ल्लुस) का प्रयोग किया हो, उसे ग़ज़ल का मक़ता कहते हैं। ग़ज़ल के अंतिम शेर में शायर ने अपने नाम या उपनाम का प्रयोग न किया हो तो उसे ग़ज़ल का मक़ता न कहते हुए ग़ज़ल का अंतिम शेर ही कहना चाहिए। यहां पर शायर रामप्रकाश गोयल की एक ग़ज़ल प्रस्तुत है।

सब्र हम से ज़रा नहीं होता
उनका वादा वफ़ा नहीं होता

प्यार जज़्बा है और जज़्बे का
यार कोई सिला नहीं होता

मरने जीने पे इख़्तियार नहीं
कोई इन्सां ख़ुदा नहीं होता

उसकी रहमत के इतने है एहसां
क़र्ज़ जिनका अदा नहीं होता

फ़ासिले फिर भी दिल में रहते हैं
जब कोई फ़ासिला नहीं होता

यूं मेरे दिल में बस गया है वो
अब नज़र से जुदा नहीं होता

मंज़िलें उस तरफ़ भी होती हैं
जिस तरफ़ रासता नहीं होता

(छंद : गालगागा लगालगा गागा)

उपरोक्त ग़ज़ल के रदीफ़ और काफ़िये इस प्रकार हैं।
रदीफ़ : नहीं होता। (जो हरेक शेर के अंत में सामान्य है।)
काफ़िये : ज़रा, वफ़ा, सिला, ख़ुदा, अदा, फ़ासिला, जुदा, रासता। (जो हरेक शेर में रदीफ़ से पहले आते हैं और सब के उच्चार का अंत एक जैसा है।)

उपरोक्त ग़ज़ल का पहला शेर कि जिसमें दोनों पंक्ति में रदीफ़ और काफ़िये का प्रयोग हुआ है वो ग़ज़ल का मतला कहलाएगा तथा ग़ज़ल का अंतिम शेर कि जिसमें शायर ने अपने नाम या उपनाम का प्रयोग नहीं किया है वो ग़ज़ल का मक़ता न कहलाते हुए ग़ज़ल का अंतिम शेर ही कहलाएगा।

ग़ज़ल की रचना में रदीफ़ अनिवार्य नहीं है मगर काफ़िये अनिवार्य है। काफ़िये के बिना ग़ज़ल नहीं बन सकती। बिना रदीफ़ की ग़ज़ल में मतले की दोनों पंक्ति के अंत में और बाक़ी के शेरों की दूसरी पंक्ति के अंत में काफ़िये का प्रयोग होता है। यहां पर शायर 'अरशद' मीनानगरी की एक ग़ज़ल प्रस्तुत है कि जिसमें रदीफ़ का प्रयोग हुआ नहीं है।

ये ख़ुशरंग चेहरा शगुफ़्ता कंवल
महकता सरापा मुरस्सा ग़ज़ल

मुहब्बत का पैकर सुलूक-ए-शजर
कि पत्थर के बदले में देता है फल

अगर सरफ़राज़ी की है आरज़ू
तो पहले तू अपनी अना से निकल

जो है आज का काम कर आज ही
मिलेगा नहीं तुझको ये आज कल

मुझे रोक लेना तो मुमकिन नहीं
अगर ज़र्फ़ है मुझसे आगे निकल

अंधेरे तो 'अरशद' फ़रेबी नहीं
मगर इस नयी रोशनी में संभल

(छंद : लगागा लगागा लगागा लगा)

उपरोक्त ग़ज़ल के काफ़िये इस प्रकार हैं।
काफ़िये : कंवल, ग़ज़ल, फल, निकल, कल, संभल।

उपरोक्त ग़ज़ल का पहला शेर मतला कहलाएगा क्योंकि उसकी दोनों पंक्ति में काफ़िये का प्रयोग हुआ है और अंतिम शेर मक़ता कहलाएगा क्योंकि उसमें शायर ने अपने तख़ल्लुस (नाम या उपनाम) का प्रयोग किया है।

***

(२)
हिन्दी-गुजराती जैसी भाषाओं के लिए ग़ज़ल के छंदशास्त्र की आवश्यकता

शेर, मतला, मक़ता, रदीफ़ और काफ़िये के बारे में चर्चा के बाद अब हम ग़ज़ल का महत्व का अंग ग़ज़ल के छंदों की चर्चा करेंगे। ग़ज़ल के छंदशास्त्र की रचना सब से पहले ख़लील इब्न अहमद बसरी ने अरबी भाषा में की, जिसे अरूज़ कहते हैं। अरबी, फ़ारसी और उर्दू भाषा की लिपि हिन्दी और गुजराती जैसी भाषा की लिपि से भिन्न होने की वजह से अरूज़ के नियमों के आधार पर हिन्दी-गुजराती जैसी भाषा में छंद-रचना करना असंभव है। खास तौर से अरूज़ में छंद-रचना के लिए ज़िहाफ़ की प्रक्रिया (मूल संधि को खंडित करके नयी संधि प्राप्त करने की प्रक्रिया) हिन्दी-गुजराती जैसी भाषा में असंभव है। इसलिए अरूज़ में दर्शाए गए ग़ज़ल के छंदों को लघु-गुरु रूप में परिवर्तित करके हिन्दी-गुजराती जैसी भाषा में दर्शाया जाता है कि जिसमें लघुअक्षर के लिए **ल** संज्ञा का और गुरुअक्षर के लिए **गा** संज्ञा का प्रयोग किया जाता है। इस तरह अरूज़ में दर्शाए गए ग़ज़ल के छंदों को लघु-गुरु माप में समझ कर ग़ज़ल की रचना करने में कोई अड़चन नहीं होती, फिर भी हिन्दी-गुजराती भाषा ने ग़ज़ल को अपने काव्य-प्रकार में अतिमहत्व का स्थान दिया है, इसलिए हिन्दी-गुजराती जैसी भाषा के लिए अलग से ऐसे ग़ज़ल के छंदशास्त्र की आवश्यकता रहती है जिसे हिन्दी-गुजराती जैसी भाषा का ग़ज़ल का छंदशास्त्र कह सकें और जिसमें छंद-रचना हिन्दी-गुजराती जैसी भाषा की लिपि के अनुरूप हो। अब अरूज़ के अभ्यास के दरमियान कुछ प्रश्न निरुत्तर रहे हैं जो यहां पर प्रस्तुत कर रहा हूं।

(१) अरूज़ में मूल संधि (जिसे रुकन या अरकान कहते हैं।) में कुल आठ संधि का समावेश किया गया है जो इस प्रकार है।

१	मुतक़ारिब	फ़ऊलुन	लगागा
२	मुतदारिक	फ़ाइलुन	गालगा
३	हज़ज	मफ़ाईलुन	लगागागा
४	रमल	फ़ाइलातुन	गालगागा
५	रजज़	मुस्तफ़इलुन	गागालगा
६	कामिल	मुतफ़ाइलुन	ललगालगा
७	वाफ़िर	मफ़ाइलतुन	लगाललगा
८	मुक़्तज़िब	मफ़्ऊलात	गागागाल

	उपरोक्त आठ संधि में से पहली दो संधि ५ मात्रा की (पंचकल संधि) है और बाक़ी की छह संधि ७ मात्रा की (सप्तकल संधि) है। ग़ज़ल के छंदों में लगालगा और ललगागा जैसी ६ मात्रा की (षट्कल संधि) का भी प्रयोग होता है तो फिर उसे मूल संधि में स्थान न दे कर ज़िहाफ़ की प्रक्रिया से प्राप्त करने का प्रयोजन क्या है यह समझना मुश्किल है।
(२)	लगालगा संधि ज़िहाफ़ की प्रक्रिया से प्राप्त की जाती है। लगागागा (हज़ज) और गागालगा (रजज़) इन दोनों मूल संधि में से ज़िहाफ़ की प्रक्रिया से (मूल संधि को खंडित करने से) लगालगा संधि को प्राप्त किया जा सकता है। अब इन दोनों में से किसके खंडित स्वरूप को आधार समझें? जैसे गणित में एक प्रश्न का जवाब एक से ज़ियादा तरीक़े से प्राप्त कर सकते हैं वैसे ही लगालगा संधि भी एक से ज़ियादा तरीक़े से प्राप्त कर सकते हैं ऐसा मान लेने पर भी लगालगा संधि ज़िहाफ़ की प्रक्रिया से प्राप्त करने के बजाय इसका मूल संधि में समावेश क्यूं नहीं किया गया यह मुख्य प्रश्न है।
(३)	अरूज़ में कुल १९ अखंडित मूलभूत छंदों (बहरों) का स्वीकार किया गया है और इसे ज़िहाफ़ की प्रक्रिया से खंडित करने से और भी बहुत सारे छंद (बहर) प्राप्त किये जा सकते हैं। इस १९ मूलभूत अखंडित छंदों में से एक छंद है मदीद छंद कि जिसकी संधि अरूज़ में 'गालगागा गालगा गालगागा गालगा' दर्शाई गई है और इस छंद की रचना को गालगागा (रमल) और गालगा (मुतदारिक) का अखंडित मिश्रित स्वरूप बताया गया है। अब एक और छंद 'ललगाल गालगागा ललगाल गालगागा' है कि जिसको अरूज़ में रमल छंद (गालगागा) के खंडित गणों के योग से रचा हुआ बताया गया है। अब इस छंद की संधि अलग तरीक़े से दर्शाता हूं, 'ललगालगा लगागा ललगालगा लगागा'। इस तरीक़े से देखा जाए तो यह छंद ललगालगा (कामिल) और लगागा (मुतक़ारिब) का अखंडित मिश्रित स्वरूप है तो फिर इस छंद का २० वीं मूलभूत अखंडित बहर (छंद) के रूप में स्वीकार करने के बजाय इसे रमल छंद के खंडित गणों से प्राप्त करने का क्या प्रयोजन है यह समझना मुश्किल है।

सामान्य तौर पर अरुज़ के छंदों को लघु-गुरु माप में परिवर्तित करके ही दर्शाया जाता है मगर मैंने ग़ज़ल के छंदों की रचना ले लिए अरुज़ से अलग एक नयी पद्यभार आधारित पद्धति का संशोधन किया है, जो हिन्दी-गुजराती जैसी लिपिवाली भाषा के अनुरूप है और मुझे यह श्रद्धा है कि उर्दू जैसी भाषा में भी ग़ज़ल के छंदों की रचना को समझने के लिए मेरी यह पद्यभार आधारित पद्धति ज़ियादा सरल साबित होगी। इस पुस्तक में मैं अपनी उसी पद्यभार आधारित पद्धति से ग़ज़ल के छंदों की रचना को समझाने का प्रयास करूंगा (किसी रचना के पठन या गायन में कुछ जगह पर विशेष ठनकार या आघात का अनुभव किया जा सकता है, उस विशेष ठनकार या आघात को पद्यभार कहते हैं।) तथा ग़ज़ल के छंद और संगीत के ताल के समन्वय के विषय पर मेरा जो संशोधन है उसे भी इस पुस्तक में प्रस्तुत कर रहा हूं।

***

(३)
पद्‌यभार आधारित पद्धति से ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि

उपलब्ध सर्जनों का अवलोकन करने के बाद नियमों को तार कर शास्त्र की रचना की जाती है और फिर उस शास्त्र के आधार पर नये सर्जन किये जाते हैं। ग़ैर-फ़िल्मी और फ़िल्मी ग़ज़ल के अलावा फ़िल्मी गानों में भी ग़ज़ल के छंदों का अच्छा प्रयोग हुआ है। तक़रीबन्‌ २००० से अधिक फ़िल्मी गानों का अभ्यास करने पर ५०० से अधिक गाने (फ़िल्मी गीत और ग़ज़ल दोनों को मिला कर) ऐसे मिले कि जिसमें ग़ज़ल के छंदों का प्रयोग हुआ हो और पूरा गाना एक ही छंद में हो। जिस गाने में एक से अधिक छंदों का प्रयोग हुआ हो उसे गिनती में लिया नहीं है। इसके अलावा ५०० से अधिक ग़ैर-फ़िल्मी रचनाओं का भी ग़ज़ल के छंदों के अनुसार वर्गीकरण किया है। इतने गीत-ग़ज़ल के अभ्यास करने पर ४० से अधिक छंद प्राप्त हुए जिसमें से ३० छंदों की रचना को मैं अपनी पद्‌यभार आधारित पद्धति से समझाने की कोशिश करुंगा। मेरे अभ्यास की ९५% से अधिक रचनाएं इन ३० छंदों में ही है।

ग़ज़ल के छंदों के मेरे अब तक के अभ्यास के दरमियान कुछ तारण निकले हैं उसे प्रस्तुत करता हूं।

(१)	**ल** = लघुअक्षर = १ मात्राकाल में उच्चारण **गा** = गुरुअक्षर = २ मात्राकाल में उच्चारण
(२)	लघु-गुरु अक्षरों की गिनती में (अक्षरों का लघु-गुरु वज़न मापने में) अक्षर ह्रस्व स्वरयुक्त है या दीर्घ स्वरयुक्त है इसके बजाय अक्षर के उच्चारण समय को ही ध्यान में लिया जाएगा। जैसे कि ‘कविता’ शब्द का वज़न ललगा होता है मगर ग़ज़ल के छंदों में उच्चारण समय के आधार पर उसे ललगा (क-वि-ता) और लगागा (क-वी-ता) दोनों वज़न में प्रयोग में ले सकते हैं।
(३)	ग़ज़ल के छंदों में एक गुरुअक्षर के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग किया जा सकता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग वर्जित है। जैसे कि ‘ग़ज़ल’ शब्द का वज़न लगा (ग़-ज़ल) ही होता है, मगर ‘कविता’ शब्द का गागा वज़न में (कवि-ता) प्रयोग नहीं कर सकते।

	ग़ज़ल के छंदों में जहां दो लघुअक्षरों का प्रयोग हो वहां दो स्पष्ट लघुअक्षरों का ही प्रयोग करना होगा, दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग या एक गुरुअक्षर का प्रयोग वर्जित है। जैसे कि ललगा वज़न में 'कविता' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं, मगर 'परदा' शब्द का प्रयोग ललगा वज़न में (प-र-दा) नहीं कर सकते क्योंकि 'परदा' शब्द का वज़न गागा (पर-दा) ही होता है।
(४)	ग़ज़ल के छंदों में एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं होता। ग़ज़ल के प्रचलित होने में एक वजह ग़ज़ल के छंदों की प्रवाहिता भी है। एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग छंद की प्रवाहिता को कम कर देता है।
(५)	सिर्फ़ गुरुअक्षर के प्रयोगवाले छंदों में एक गुरुअक्षर के स्थान पर (पद्यभारवाले गुरुअक्षर के सिवा) दो स्पष्ट लघुअक्षरों का भी प्रयोग करने की छूट है, मगर इस छूट को इस तरह से निभाना होगा कि दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षर एकसाथ न आएं यानि कि एकसाथ एक ही गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग कर सकते हैं। एक गुरुअक्षर के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों के प्रयोग के लिए यह नियम बाधक नहीं है। ज़ियादातर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग पद्यभारवाले गुरुअक्षर से पहलेवाले या बादवाले गुरुअक्षर के स्थान पर ही किया जाता है।
(६)	ग़ज़ल के छंदशास्त्र के अनुसार पंक्ति (मिसरा) के अंत में आनेवाले लघुअक्षर को वज़न में अलग से न गिनते हुए उसे उससे पहलेवाले गुरुअक्षर में ही समाविष्ट कर दिया जाता है और उस लघुअक्षर को उसी गुरुअक्षर के साथ संयुक्त तरीक़े से ही उच्चारा जाता है।
(७)	ग़ज़ल के छंदों की रचना की मेरी पद्यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त सभी संधि का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही होगा।

ग़ज़ल के छंद लगात्मक रूपवाले मात्रामेल छंद (मात्रिक छंद) है कि जिसमें लघु-गुरु का वज़न मापने के लिए ध्वनिमेल का सहारा लिया जाता है। हमारे भारतीय मात्रामेल छंदों में एक गुरुअक्षर के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का भी प्रयोग कर सकते हैं और दो स्पष्ट लघुअक्षरों का भी प्रयोग कर सकते हैं तथा दो लघुअक्षरों के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का भी प्रयोग कर सकते हैं और दो संयुक्त उच्चारवाले लघुअक्षरों का भी प्रयोग कर सकते हैं। यहीं पर ग़ज़ल के छंद हमारे मात्रामेल छंद से अलग दिखाई देते हैं। हमारे मात्रामेल छंद में पंक्ति के अंत में आनेवाले लघुअक्षर को गुरुअक्षर गिनने की वजह से भी ग़ज़ल के छंद हमारे मात्रामेल छंद से अलग दिखाई देते हैं। मात्रामेल छंदों का संगीत के ताल के साथ सीधा संबंध है। मेरी पद्यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ ग़ज़ल के छंदों में

पंचकल, षट्कल, सप्तकल और अष्टकल संधि प्रयुक्त होती है कि जिसका पद्यभार संगीत के ताल के आधार से निश्चित किया जा सकता है। लघुअक्षर की १ मात्रा और गुरुअक्षर की २ मात्रा गिनने पर पंचकल संधि की ५ मात्रा, षट्कल संधि की ६ मात्रा, सप्तकल संधि की ७ मात्रा और अष्टकल संधि की ८ मात्रा होती है। पंचकल संधि के लिए १० मात्रा के झपताल का प्रयोग, षट्कल संधि के लिए ६ मात्रा के ताल दादरा का प्रयोग, सप्तकल संधि के लिए ७ मात्रा के ताल रूपक या १४ मात्रा के ताल दीपचन्दी का प्रयोग और अष्टकल संधि के लिए ८ मात्रा के ताल कहरवा का प्रयोग करने से अलग-अलग संधि के पद्यभार निश्चित किये जा सकते हैं। मेरी पद्यभार आधारित पद्धति से ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि की सूचि प्रस्तुत है कि जिसमें हरेक संधि का अंत्याक्षर गुरुअक्षर होगा। हरेक संधि में पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया है।

संधि क्रमांक	संधि	संधि का प्रकार	संधि की कुल मात्रा
०१	लगागा	पंचकल	१+२+२=५
०२	गालगा	पंचकल	२+१+२=५
०३	लगालगा या लगालगा	षट्कल	१+२+१+२=६
०४	ललगागा	षट्कल	१+१+२+२=६
०५	गाललगा	षट्कल	२+१+१+२=६
०६	लगागागा	सप्तकल	१+२+२+२=७
०७	गालगागा	सप्तकल	२+१+२+२=७
०८	गागालगा	सप्तकल	२+२+१+२=७
०९	ललगालगा	सप्तकल	१+१+२+१+२=७
१०	लगाललगा	सप्तकल	१+२+१+१+२=७
११	गागागागा या गागागागा	अष्टकल	२+२+२+२=८
१२	लगालगागा	अष्टकल	१+२+१+२+२=८
१३	ललगागागा	अष्टकल	१+१+२+२+२=८
१४	गाललगागा	अष्टकल	२+१+१+२+२=८
१५	गागाललगा	अष्टकल	२+२+१+१+२=८
१६	ललगाललगा	अष्टकल	१+१+२+१+१+२=८
१७	गालगालगा	अष्टकल	२+१+२+१+२=८

उपरोक्त संधि में से लगाललगा संधि लगागागा संधि का ही स्वरूप है (प्रचार में नहीं है) और ललगालगा संधि गागालगा संधि का ही स्वरूप है। गाललगा संधि के आवर्तित स्वरूप के छंद प्रचार में नहीं है, मगर इसका प्रयोग लगालगा संधि के साथ मिश्र रूप में हुआ है तथा ललगागा और गालगागा संधि के आवर्तित स्वरूप के छंदों में अखंडित के बजाय खंडित प्रकार ही प्रचलित हैं।

संधि क्रमांक १ से १० के प्रयोग में एक गुरुअक्षर के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग कर सकते हैं, मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग वर्जित है तथा जहां दो लघुअक्षरों का प्रयोग हो वहां पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का ही प्रयोग करना ज़रूरी है, दो लघुअक्षरों के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग या एक गुरुअक्षर का प्रयोग वर्जित है।

संधि क्रमांक ११ से १७ अष्टकल संधि हैं और संधि क्रमांक १२ से १७ (लगालगागा, ललगागागा, गाललगागा, गागाललगा, ललगाललगा और गालगालगा) संधि क्रमांक ११ गागागागा के ही स्वरूप हैं। सिर्फ़ गुरुअक्षर के प्रयोगवाले छंदों में अष्टकल संधि का ही प्रयोग होता है और ऐसे छंदों में एक गुरुअक्षर के स्थान पर (पद्यभारवाले गुरुअक्षर के सिवा) दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग करने की छूट इस तरह ले सकते हैं कि दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षर एकसाथ न आएं। इस वजह से संधि क्रमांक १३ से १७ ज़ियादातर गागागागा संधि के विकल्प के रूप में ही प्रयुक्त होती दिखाई दी हैं, जब कि संधि क्रमांक १२ लगालगागा (जो गागागागा संधि का ही रूप है।) के आवर्तित स्वरूप के छंद प्रचार में हैं। संधि क्रमांक १३ से १७ में से किसी एक संधि के आवर्तित रूप में ही पूरी रचना हो ऐसी रचना का मिलना बहुत ही मुश्किल है। गागागागा संधि के आवर्तित स्वरूप के छंदों में गागागागा संधि के विकल्प के रूप में गाललगागा का प्रयोग तथा गागागागा संधि के विकल्प के रूप में ललगागागा, गागाललगा और ललगाललगा का प्रयोग दिखाई देता है। कभी-कभी गागागागा संधि के स्थान पर लगालगागा संधि का प्रयोग और गागागागा संधि के स्थान पर गालगालगा संधि का प्रयोग भी दिखाई दिया है। ज़ियादातर गागागागा संधि में दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग पद्यभारवाले गुरुअक्षर से पहलेवाले या बादवाले गुरुअक्षर के स्थान पर ही किया जाता है। इस हिसाब से गागागागा संधि के आवर्तित स्वरूपवाले छंदों में अंतिम संधि के अलावा बाक़ी की संधि के स्थान पर गागागालल या गाललगालल या गागालगाल का प्रयोग भी दिखाई देता है। गागागालल, गाललगालल और गागालगाल संधि का अंत्याक्षर गुरुअक्षर न होने के कारन इनका समावेश ग़ज़ल में प्रयुक्त संधि की सूचि में किया नहीं है।

जिस तरह संधि क्रमांक १३ से १७ में से किसी एक संधि के आवर्तित स्वरूप के छंद में पूरी रचना हो ऐसी रचना का मिलना मुश्किल है, उसी तरह गागागागा संधि के आवर्तित स्वरूपवाले छंद की रचना में किसी भी गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग

न हुआ हो यानि कि सभी गुरुअक्षरों के स्थान पर गुरुअक्षर का या संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का ही प्रयोग हुआ हो ऐसी रचना का मिलना भी बहुत ही मुश्किल है। इतनी चर्चा से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि संधि क्रमांक १ से १७ में से संधि क्रमांक १ से १२ को मुख्य संधि समझना चाहिए कि जिसके आवर्तित स्वरूप की रचना पाई जाती है तथा संधि क्रमांक १३ से १७ को गौण संधि समझना चाहिए कि जिसका प्रयोग ज़ियादातर गागागागा संधि के विकल्प के रूप में ही होता है। गागागालल, गाललगालल और गागालगाल संधि को भी गौण संधि ही समझना चाहिए कि जिसका समावेश संधि क्रमांक १ से १७ में नहीं किया गया है और जिसका प्रयोग गागागागा संधि के विकल्प के रूप में ही होता है।

यहां पर फिल्म ‘सहेली’ का मुकेशजी का गाया हुआ एक गीत कि जिसमें ग़ज़ल के छंद का ही प्रयोग हुआ है उसका छंद के मुताबिक़ विवरण प्रस्तुत है। इसके अभ्यास से उपरोक्त बातें अच्छी तरह से समझी जा सकती हैं। जहां पर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग किया गया है उसे अलग लाइन में दर्शाया है।

गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा
जिस	दिल	में ब	सा	था	प्या	र ते	रा	उस	दिल	को क	भी	का	तो	ड़ दि	या
बद	ना	म न	हो	ने	दें	गे तु	झे	ते रा	ना	म ही	ले	ना	छो	ड़ दि	या
जब	या	द क	भी	तुम	आ	ओ	गे	सम	झें	गे तु	म्हें	चा	हा	ही न	हीं
रा	हों	में अ	गर	मिल	जा	ओ	गे	सो	चें	गे तु	म्हें	दे	खा	ही न	हीं
जो	दर	पे तु	म्हा	रे	जा	ती	थीं	उन	रा	हों को	हम	ने	मो	ड़ दि	या
हम	कौ	न कि	सी	के	हो	ते	हैं	को ई	हम	को	या	द क	रे	गा	क्यूं
अप	ने	दो	आं	सू	भी	हम	पर	को	ई	बर	बा	द क	रे	गा	क्यूं
उस	मां	झी	को	ही गि	ला	हम	से	मझ	धा	र में	जिस	ने	छो	ड़ दि	या

इस गीत के विवरण से यह समझा जा सकता है कि इस गीत में गागागागा संधि के स्थान पर गागाललगा, ललगाललगा और ललगागागा संधि भी प्रयुक्त हुई है।

फिल्म 'आवारा' का मुकेशजी का गाया हुआ गीत 'हम तुझसे मुहब्बत करके सनम रोते भी रहे हंसते भी रहे' में गीत की सभी पंक्ति में गागाललगा संधि के ४ आवर्तनों का प्रयोग हुआ है इसलिए गीत का छंद 'गागाललगा गागाललगा गागाललगा गागाललगा' भी कह सकते हैं और 'गागागागा गागागागा गागागागा गागागागा' भी कह सकते हैं। अगर पूरे गीत में गागाललगा की एक भी संधि के तीन में से एक भी गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग हुआ होता तो इसका छंद 'गागागागा गागागागा गागागागा गागागागा' ही कहलाता।

***

: परिशिष्ट :

सामान्य तौर पर ह्रस्व स्वर और ह्रस्व स्वरयुक्त व्यंजन को लघुअक्षर तथा दीर्घ स्वर और दीर्घ स्वरयुक्त व्यंजन को गुरुअक्षर कहा जाता है। लघुअक्षर का उच्चारण-समय एक मात्राकाल और गुरुअक्षर का उच्चारण-समय दो मात्राकाल माना जाता है। यानि लघुअक्षर के उच्चारण-समय के मुक़ाबले गुरुअक्षर को दो गुना उच्चारण-समय लगता है।

ह्रस्व स्वर : अ, इ, उ, ऋ।
दीर्घ स्वर : आ, ई ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः।

ग़ज़ल बोलचाल की भाषा में कही जाती है इसलिए ग़ज़ल के छंदों में पंक्ति (मिसरा) का वज़न मापने के लिए अक्षर ह्रस्व स्वरयुक्त है या दीर्घ स्वरयुक्त है यह देखने के बजाय अक्षर के उच्चारण-समय को ही ध्यान में लिया जाता है।

संयुक्ताक्षर में आधे अक्षर को उसके बादवाले अक्षर के साथ जोड़ कर लिखा जाता है, मगर उच्चारण में वो उससे पहलेवाले अक्षर के साथ संयुक्तरूप से उच्चारा जाता हो तो वो पहलेवाला अक्षर लघुअक्षर होते हुए भी आधे अक्षर के साथ मिल कर गुरुअक्षर हो जाएगा। जैसे कि 'संयुक्त' शब्द का ही उदाहरण लेते हैं। 'संयुक्त' शब्द में 'क' आधा अक्षर है जो उसके बादवाले अक्षर 'त' के साथ जोड़ कर लिखा जाता है मगर उस आधे 'क' का उच्चार उससे पहलेवाले अक्षर 'यु' के साथ संयुक्तरूप से होने के कारन 'यु' लघुअक्षर होते हुए भी उस आधे 'क' से मिल कर गुरुअक्षर हो जाएगा। इस बात को सरलता से समझने के लिए मैं 'संयुक्त' शब्द की संधि को अलग करके दर्शाता हूं।

सं + युक् + त = संयुक्त

इससे यह समझा जा सकता है कि 'संयुक्त' शब्द का वज़न गालगा नहीं हो सकता बल्कि गागाल ही होता है।

किसी शब्द का अंत अ स्वरयुक्त व्यंजन से होता हो और उसके बादवाले शब्द का पहला अक्षर स्वर हो तो लघु-गुरु अक्षर का वज़न मापने में दोनों को संयुक्तरूप से उच्चारा जा सकता है। इसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत है।

(१) ‘तुम को देखा तो ये ख़याल आया’ ग़ज़ल में

गा	ल	गा	गा	ल	गा	ल	गा	गा	गा
तुम	को	दे	खा	तो	ये	ख़	या	ल+आ = ला	या

तुम को देखा तो ये ख़याल आया
= तुम को देखा तो ये ख़यालाया

(२) ‘कभी यूं भी आ मेरी आंख में कि मेरी नज़र को ख़बर न हो’ ग़ज़ल में

ल	ल	गा	ल	गा	ल	ल	गा	ल	गा	ल	ल	गा	ल	गा	ल	ल	गा	ल	गा
मु	झे	ए	क	रा	त	न	वा	ज़	दे	म	ग	र+उस = रुस	के	बा	द	स	हर	न	हो

मुझे एक रात नवाज़ दे मगर उस के बाद सहर न हो
= मुझे एक रात नवाज़ दे मगरुस के बाद सहर न हो

(३) ‘ऐ दिल मुझे ऐसी जगह ले चल जहां कोई न हो’ ग़ज़ल में

गा	गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा
चल	ना	है	सब	से	दू	र	दू	र+अब = रब	का	र	वां	को	ई	न	हो

चलना है सब से दूर दूर अब कारवां कोई न हो
= चलना है सब से दूर दूरब कारवां कोई न हो

अब लघु-गुरु अक्षर से संबंधित कुछ माहिती प्रस्तुत करता हूं।

(१)	सभी एकाक्षरी शब्दों को और प्रत्यय को गुरुअक्षर होते हुए भी लघुअक्षर के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। तू, मैं, में, ये, वो, है, हो, ही, भी, जो, तो, या, पे, सो, से, यूं, के, का, की इत्यादि।
(२)	लगा वज़न के शब्द जो लल वज़न में भी प्रयुक्त हो सकते हैं। मुझे, तुझे, उसे, उसी, जिसे, किसे, किसी, कभी, अभी, तभी, कहीं, कहां, वहीं, वहां, यहीं, यहां इत्यादि।
(३)	गागा वज़न के शब्द जो लगा, गाल और लल तीनों वज़न में प्रयुक्त हो सकते हैं। मेरा, तेरा, मेरी, तेरी, मेरे, तेरे इत्यादि।

ग़ज़ल के छंद लगात्मक रूपवाले मात्रामेल छंद (मात्रिक छंद) है कि जिसमें लघु-गुरु का वज़न मापने के लिए ध्वनिमेल का सहारा लिया जाता है। हमारे भारतीय मात्रामेल छंदों में एक गुरुअक्षर के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का भी प्रयोग कर सकते हैं और दो स्पष्ट लघुअक्षरों का भी प्रयोग कर सकते हैं तथा दो लघुअक्षरों के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का भी प्रयोग कर सकते हैं और दो संयुक्त उच्चारवाले लघुअक्षरों का भी प्रयोग कर सकते हैं। यहीं पर ग़ज़ल के छंद हमारे मात्रामेल छंद से अलग दिखाई देते हैं। ग़ज़ल के छंदों में एक गुरुअक्षर के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग किया जा सकता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग वर्जित है तथा ग़ज़ल के छंदों में जहां दो लघुअक्षरों का प्रयोग हो वहां दो स्पष्ट लघुअक्षरों का ही प्रयोग करना होगा, दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग या एक गुरुअक्षर का प्रयोग वर्जित है। सिर्फ़ गुरुअक्षर के प्रयोगवाले छंदों में एक गुरुअक्षर के स्थान पर (पद्यभारवाले गुरुअक्षर के सिवा) दो स्पष्ट लघुअक्षरों का भी प्रयोग करने की छूट है, मगर इस छूट को इस तरह से निभाना होगा कि दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षर एकसाथ न आएं।

हमारे मात्रामेल छंद में पंक्ति के अंत में आनेवाले लघुअक्षर को गुरुअक्षर गिनने की वजह से भी ग़ज़ल के छंद हमारे मात्रामेल छंद से अलग दिखाई देते हैं। ग़ज़ल के छंदशास्त्र के अनुसार पंक्ति (मिसरा) के अंत में आनेवाले लघुअक्षर को वज़न में अलग से न गिनते हुए उसे उससे पहलेवाले गुरुअक्षर में ही समाविष्ट कर दिया जाता है और उस लघुअक्षर को उसी गुरुअक्षर के साथ संयुक्त तरीक़े से ही उच्चारा जाता है।

यहां पर फिर से मेरी पद्यभार आधारित पद्धति से ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त होनेवाली संधि की सूचि प्रस्तुत करता हूं और फिर से इस बात का ज़िक्र करता हूं कि सूचि में हरेक संधि के पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया है।

संधि क्रमांक	संधि	संधि का प्रकार	संधि की कुल मात्रा
०१	**लगागा**	पंचकल	१+२+२=५
०२	**गालगा**	पंचकल	२+१+२=५
०३	**लगालगा या लगालगा**	षट्कल	१+२+१+२=६
०४	**ललगागा**	षट्कल	१+१+२+२=६
०५	**गाललगा**	षट्कल	२+१+१+२=६
०६	**लगागागा**	सप्तकल	१+२+२+२=७

०७	गालगागा	सप्तकल	२+१+२+२=७
०८	गागालगा	सप्तकल	२+२+१+२=७
०९	ललगालगा	सप्तकल	१+१+२+१+२=७
१०	लगाललगा	सप्तकल	१+२+१+१+२=७
११	गागागागा या गागागागा	अष्टकल	२+२+२+२=८
१२	लगालगागा	अष्टकल	१+२+१+२+२=८
१३	ललगागागा	अष्टकल	१+१+२+२+२=८
१४	गाललगागा	अष्टकल	२+१+१+२+२=८
१५	गागाललगा	अष्टकल	२+२+१+१+२=८
१६	ललगाललगा	अष्टकल	१+१+२+१+१+२=८
१७	गालगालगा	अष्टकल	२+१+२+१+२=८

उपरोक्त सूचि में सभी संधि का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही है। सभी प्रचलित छंदों में इसी का प्रयोग दिखाई देता है। आनेवाले समय में अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी संधि का भी समावेश किया जा सकता है और मैं इस विकल्प को खुला रखता हूं। अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी संधि की सूचि प्रस्तुत है।

संधि क्रमांक	संधि	संधि का प्रकार	संधि की कुल मात्रा
०१	गागाल	पंचकल	२+२+१=५
०२	गालगाल या गालगाल	षट्कल	२+१+२+१=६
०३	गागालल	षट्कल	२+२+१+१=६
०४	गालगालल	सप्तकल	२+१+२+१+१=७
०५	गागागाल	सप्तकल	२+२+२+१=७
०६	गाललगाल	सप्तकल	२+१+१+२+१=७
०७	गागागालल	अष्टकल	२+२+२+१+१=८
०८	गाललगालल	अष्टकल	२+१+१+२+१+१=८
०९	गागालगाल	अष्टकल	२+२+१+२+१=८

उपरोक्त दोनों सूचि में दो से अधिक लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त नहीं हुए है और किसी भी संधि में पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर दो लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं हुआ है। एकसाथ दो से अधिक लघुअक्षरों का प्रयोग छंद की प्रवाहिता को कम कर देता है फिर भी आनेवाले समय में एकसाथ दो से अधिक लघुअक्षरों का प्रयोग प्रचार में आ जाए तो ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि की सूचि में और भी संधि का समावेश किया जा सकता है और मैं इस विकल्प को भी खुला रखता हूं।

अगर संधि का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही हो और एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग न हो, इन दोनों नियमों को छोड़ दिया जाए तो छंदों में प्रयुक्त संधि में बहुत सी संधि का समावेश किया जा सकता है मगर उन सब में प्रवाहिता हो यह ज़रूरी नहीं है। इस बात को समझने के लिए सभी प्रकार की पंचकल संधि (पांच मात्रा की संधि) की सूचि प्रस्तुत है।

संधि क्रमांक	पंचकल संधि
१	लगागा
२	गालगा
३	गागाल
४	लगालल
५	लललगा
६	गाललल
७	ललगाल
८	ललललल

उपरोक्त पंचकल संधि की सूचि में पंचकल संधि क्रमांक १, २ और ३ कि जिसमें एक लघुअक्षर और दो गुरुअक्षरों का प्रयोग हुआ है उसके पद्यभार को हम संगीत के ताल झपताल के आधार पर निश्चित कर सकते हैं (देखिए प्रकरण-४) और इसी के आधार पर अनुक्रम से पंचकल संधि क्रमांक ४, ५ और ६ का पद्यभार भी निश्चित किया जा सकता है। अनुक्रम से पंचकल संधि क्रमांक १, २ और ३ में पद्यभारवाले गुरुअक्षर के सिवा जो गुरुअक्षर है उसके स्थान पर अनुक्रम से पंचकल संधि क्रमांक ४, ५ और ६ में दो लघुअक्षरों का प्रयोग हुआ है। पंचकल संधि क्रमांक ४, ५ और ६ के आधार से पंचकल संधि क्रमांक ७ का भी पद्यभार निश्चित किया जा सकता है। पंचकल संधि क्रमांक ८ का पद्यभार निश्चित करना मुश्किल है क्योंकि इसमें पांच लघुअक्षरों का ही प्रयोग हुआ है और गुरुअक्षर एक भी नहीं है। अब मैं पंचकल संधि की उपरोक्त सूचि को पद्यभार के स्थान को दर्शाते हुए फिर से प्रस्तुत करता हूं।

संधि क्रमांक	पंचकल संधि
१	लगागा
२	गालगा
३	गागाल
४	लगालल
५	लललगा
६	गाललल
७	ललगाल
८	ललललल या ललललल या ललललल या ललललल या ललललल

पंचकल संधि क्रमांक १, २ और ३ में दो गुरुअक्षरों का और एक लघुअक्षर का प्रयोग हुआ है कि जिसमें पद्यभार लघुअक्षर के बादवाले गुरुअक्षर पर स्थित है। पंचकल संधि क्रमांक ४, ५, ६, और ७ में एक गुरुअक्षर का और तीन लघुअक्षरों का प्रयोग हुआ है कि जिसमें पद्यभार संधि के एकमात्र गुरुअक्षर पर स्थित है। पंचकल संधि क्रमांक ८ में पांच लघुअक्षरों का ही प्रयोग होने के कारन पद्यभार कौन से लघुअक्षर पर स्थित है यह निश्चित करना मुश्किल है क्योंकि पद्यभार पांच में से किसी भी लघुअक्षर पर आ सकता है।

फ़िल-हाल ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही हो और एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग न हो, इन दोनों नियमों को बरक़रार रखते हुए अपनी बात को आगे बढ़ाता हूं।

***

(४)
संगीत के ताल के आधार से
ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि का पद्यभार

किसी भी मात्रामेल रचना के पठन या गायन में कुछ जगह पर विशेष ठनकार या आघात का अनुभव किया जा सकता है, उस विशेष ठनकार या आघात को पद्यभार कहते हैं। मात्रामेल रचना में प्रयुक्त संधि के आधार से निश्चित कालांतर पर पद्यभार (विशेष ठनकार या आघात) की पुनरावृत्ति होती रहती है। पद्यभार (विशेष ठनकार या आघात) के स्थान के लिए ताल-स्थान या ताल शब्द का भी प्रयोग होता है, मगर संगीत की परिभाषा में ताल शब्द का अलग अर्थ में प्रयोग होने के कारन हम पद्यभार शब्द का ही प्रयोग करेंगे और वही ज़ियादा उचित है।

जिस तरह ग़ज़ल-रचना में प्रवाहिता के लिए छंद ज़रूरी है उसी तरह संगीत-रचना में प्रवाहिता के लिए ताल ज़रूरी है और ग़ज़ल गेय काव्य का ही प्रकार है, इस वजह से ग़ज़ल के छंद और संगीत के ताल के बीच में सीधा संबंध स्थापित होता है। ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि का पद्यभार निश्चित करने के लिए हम संगीत के ताल का ही प्रयोग करेंगे। ग़ज़ल के छंद में प्रयुक्त संधि पंचकल, षट्कल, सप्तकल और अष्टकल प्रकार की हैं, जिसका पद्यभार निश्चित करने के लिए हम अनुक्रम से ताल झपताल (१० मात्रा), दादरा (६ मात्रा), रूपक (७ मात्रा) या दीपचन्दी (१४ मात्रा) और कहरवा (८ मात्रा) का प्रयोग करेंगे। सब से पहले मैं इन चारों ताल का विवरण प्रस्तुत करता हूं।

झपताल :

मात्रा : १०

खंड : ४ (२+३+२+३)

ताली की मात्रा : १, ३ और ८

खाली की मात्रा : ६

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
×		२			०		३		

ताल दादरा :

मात्रा : ६

खंड : २ (३+३)

ताली की मात्रा : १

खाली की मात्रा : ४

धा	धी	ना	धा	ती	ना
१	२	३	४	५	६
×			०		

ताल रूपक :

मात्रा : ७

खंड : ३ (३+२+२)

ताली की मात्रा : ४ और ६

खाली की मात्रा : १

ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
१	२	३	४	५	६	७
×			१		२	

ताल दीपचन्दी :

मात्रा : १४

खंड : ४ (३+४+३+४)

ताली की मात्रा : १, ४ और ११

खाली की मात्रा : ८

धा	धीं	-	धा	गे	तीं	-	ता	तीं	-	धा	गे	धीं	-
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
×			२				०			३			

ताल कहरवा :

मात्रा : ८

खंड : २ (४+४)

ताली की मात्रा : १

खाली की मात्रा : ५

धा	गे	न	ती	न	क	धी	न
१	२	३	४	५	६	७	८
×				०			

ताल के संदर्भ में कुछ पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत है।

सम :

किसी भी ताल की पहली मात्रा को सम कहते हैं कि जहां पर पूरी लय का वज़न आता है। सम किसी भी ताल की पहली और सब से ज़ियादा वज़नदार मात्रा है। सम दर्शाने के लिए × चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

ताली :

ताल में आघात के स्थान को ताली कहते हैं। सम के अलावा ताली के स्थान को दर्शाने के लिए अंकों का प्रयोग होता है।

खाली :

ताल की वह विषम मात्रा कि जिससे ताल का स्वरूप निर्धारित होता है उसे खाली कहते हैं। खाली को दर्शाने के लिए ० चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

सम, ताली और खाली की उपरोक्त व्याख्या एक संगीतकार ही अच्छी तरह से समझ सकता है। अगर आसान शब्दों में समझा जाए तो किसी रचना के गायन के दरमियान श्रोतागण ताली बजा कर साथ दें तो उनकी तालीओं का स्थान रचना में प्रयुक्त ताल के हरेक खंड की पहली मात्रा पर होगा। यानि कि श्रोतागण की तालीओं का स्थान रचना में प्रयुक्त ताल के सम, ताली और खाली पर होगा। जैसे कि झपताल में स्वरबद्ध हुई रचना के गायन में श्रोतागण ताली दे कर साथ दें तो उनकी तालीओं का स्थान झपताल की १, ३, ६ और ८ वीं मात्रा पर (अनुक्रम से झपताल के सम, ताली, खाली और ताली पर) होगा।

हमने ऊपर देखा कि ताल के हरेक खंड की पहली मात्रा ताल की अन्य मात्रा से ज़ियादा वज़नदार होती है और पहले खंड की पहली मात्रा (सम) अन्य खंड की पहली मात्रा के मुक़ाबले ज़ियादा वज़नदार होती है। संगीत के ताल के आधार से ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त

संधि का पद्‌यभार निश्चित करते समय ताल में लघु-गुरु अक्षरों को इस तरह गूंथना होगा कि लघुअक्षर की १ मात्रा और गुरुअक्षर की २ मात्रा गिनते हुए ताल के हरेक खंड की पहली मात्रा पर जहां तक मुमकिन हो गुरुअक्षर ही आए। इसके बाद सम (ताल की सब से ज़ियादा वज़नदार मात्रा) के आधार से मूल संधि निश्चित करेंगे कि जिसके पहले ही अक्षर पर पद्‌यभार होगा। इस तरह से पंचकल, षट्‌कल, सप्तकल और अष्टकल प्रकार की मूल संधि उनके अनुरूप ताल के आधार से निश्चित करने के बाद उसी मूल संधि के आधार से ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त होनेवाली सभी प्रकार की संधि का पद्‌यभार निश्चित किया जा सकता है। मूल संधि ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती।

: पंचकल संधि :

पंचकल संधि में एक लघुअक्षर और दो गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हैं कि जिसकी कुल मात्रा ५ होती है। १० मात्रा के झपताल में पंचकल संधि दो बार इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
गा	-	गा	-	ल	गा	-	गा	-	ल
×		२			०		३		

ऊपर झपताल की १ से ५ मात्रा और ६ से १० मात्रा दोनों में से मूल पंचकल संधि गागाल प्राप्त होती है कि जिसका पद्‌यभार संधि के पहले गुरुअक्षर पर (गागाल) होगा। गागाल संधि के आधार से लगागा संधि का पद्‌यभार संधि के पहले गुरुअक्षर पर (लगागा) और गालगा संधि का पद्‌यभार संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर (गालगा) निश्चित किया जा सकता है।

: षट्‌कल संधि :

षट्‌कल संधि में दो लघुअक्षर और दो गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हैं कि जिसकी कुल मात्रा ६ होती है। ग़ज़ल के छंदों में षट्‌कल संधि दो प्रकार से प्रयुक्त होती है।

(१)	दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त न होते हो ऐसी संधि कि जिसमें लगालगा संधि का समावेश होता है।
(२)	दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त होते हो ऐसी संधि कि जिसमें ललगागा और गाललगा संधि का समावेश होता है।

दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त न होते हो ऐसी संधि :

६ मात्रा के ताल दादरा में दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त न होते हो ऐसी संधि इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६
गा	-	ल	गा	-	ल
×			०		

ताल दादरा के आधार से दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त न होते हो ऐसी मूल संधि गालगाल प्राप्त होती है कि जिसका पद्‌यभार संधि के पहले गुरुअक्षर पर (गालगाल) या संधि के दूसरे गुरुअक्षर पर (गालगाल) होगा क्योंकि षट्‌कल संधि गालगाल त्रिकल संधि गाल का आवर्तित स्वरूप है। गालगाल संधि के पद्‌यभार के आधार से लगालगा संधि का पद्‌यभार संधि के पहले गुरुअक्षर पर (लगालगा) या संधि के दूसरे गुरुअक्षर पर (लगालगा) निश्चित किया जा सकता है।

दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त होते हो ऐसी संधि :

६ मात्रा के ताल दादरा में दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त होते हो ऐसी संधि इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६
गा	-	ल	ल	गा	-
×			०		

ताल दादरा के आधार से दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त होते हो ऐसी मूल संधि गाललगा प्राप्त होती है कि जिसका पद्‌यभार संधि के पहले गुरुअक्षर पर (गाललगा) होगा। गाललगा संधि के आधार से ललगागा संधि का पद्‌यभार संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर (ललगागा) निश्चित किया जा सकता है।

: सप्तकल संधि :

सब से पहले ऐसा मान लेते हैं कि सप्तकल संधि में एक लघुअक्षर और तीन गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हैं। सप्तकल संधि की कुल मात्रा ७ होती है। ७ मात्रा के ताल रूपक में सप्तकल संधि इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६	७
गा	-	ल	गा	-	गा	-
×			१		२	

ताल रूपक के आधार से मूल सप्तकल संधि गालगागा प्राप्त होती है कि जिसका पद्‌यभार संधि के पहले गुरुअक्षर पर (गालगागा) होगा।

एक लघुअक्षर और तीन गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हो ऐसी सप्तकल संधि १४ मात्रा के ताल दीपचन्दी में दो बार इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
गा	-	ल	गा	-	गा	-	गा	-	ल	गा	-	गा	-
×			२				०			३			

ताल दीपचन्दी के आधार से भी मूल सप्तकल संधि गालगागा ही प्राप्त होती है कि जिसका पद्यभार भी संधि के पहले गुरुअक्षर पर (गालगागा) ही होगा।

गालगागा संधि के आधार से लगागागा संधि का पद्यभार संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर (लगागागा) और गागालगा संधि का पद्यभार संधि के दूसरे गुरुअक्षर पर (गागालगा) निश्चित किया जा सकता है। ललगालगा संधि गागालगा संधि का ही स्वरूप होने के कारन ललगालगा संधि का पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर पर (ललगालगा) तथा लगाललगा संधि लगागागा संधि का ही स्वरूप होने के कारन लगाललगा संधि का पद्यभार संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर (लगाललगा) निश्चित किया जा सकता है।

: अष्टकल संधि :

सब से पहले ऐसा मान लेते हैं कि अष्टकल संधि में चार गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हैं कि जिसकी कुल मात्रा ८ होती है। ८ मात्रा के ताल कहरवा में अष्टकल संधि इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६	७	८
गा	-	गा	-	गा	-	गा	-
×				०			

ताल कहरवा के आधार से मूल अष्टकल संधि गागागागा प्राप्त होती है कि जिस का पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर पर (गागागागा) होगा। अष्टकल संधि में प्रयुक्त चार गुरुअक्षर में से कौन सा गुरुअक्षर ताल कहरवा की पहली मात्रा पर स्थित है ये निश्चित करना मुश्किल है मगर सिर्फ़ गुरुअक्षर के प्रयोगवाले छंदों की रचना का पठन या गायन करने पर संधि के पहले या दूसरे गुरुअक्षर पर पद्यभार का अनुभव किया जा सकता है। इस हिसाब से अष्टकल संधि गागागागा का पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर पर (गागागागा) या संधि के दूसरे गुरुअक्षर पर (गागागागा) निश्चित किया जा सकता है। लगालगागा संधि गागागागा संधि का ही स्वरूप होने के कारन लगालगागा संधि का पद्यभार संधि के पहले लघुअक्षर पर (लगालगागा) निश्चित किया जा सकता है।

मूल अष्टकल संधि गागागागा और गागागागा के आधार से ललगागागा संधि का पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर पर (ललगागागा), गाललगागा संधि का पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर पर (गाललगागा), गागाललगा संधि का पद्यभार संधि के दूसरे गुरुअक्षर पर (गागाललगा), ललगाललगा संधि का पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर पर (ललगाललगा) और गालगालगा संधि का पद्यभार संधि के पहले लघुअक्षर पर (गालगालगा) निश्चित किया जा सकता है।

ग़ज़ल के छंदों की रचना की मेरी पद्यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ मूल पंचकल संधि गागाल का और मूल षट्कल संधि गालगाल या गालगाल का प्रयोग ग़ज़ल के छंदों में नहीं होता क्योंकि इनका अंत्याक्षर लघुअक्षर है, जबकि मूल षट्कल संधि गाललगा, मूल सप्तकल संधि गालगागा और मूल अष्टकल संधि गागागागा या गागागागा का प्रयोग ग़ज़ल के छंदों में होता है क्योंकि इनका अंत्याक्षर गुरुअक्षर है।

हमने पंचकल, षट्कल, सप्तकल और अष्टकल प्रकार की संधि के लिए अनुक्रम से ताल झपताल, दादरा, रूपक या दीपचन्दी और कहरवा का प्रयोग करके सभी प्रकार की मूल संधि प्राप्त की है कि जिसका पद्यभार संधि के पहले अक्षर पर ही स्थित रहता है। सभी मूल संधि के पद्यभार को हमने ताल के सम (ताल की पहली और सब से वज़नदार मात्रा) के आधार पर स्थापित किया था जो मूल संधि के मुख्य पद्यभार को दर्शाता है। इस पद्यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ छंद निरूपण के लिए मुख्य पद्यभार को ही ध्यान में लिया जाता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट लेने के लिए मुख्य पद्यभार के अलावा गौण पद्यभार को भी ध्यान में लेना पड़ता है। एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर नहीं ली जाती। मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट लेने से छंद की प्रवाहिता को नुकसान पहुंचता है।

अलग-अलग प्रकार की संधि के अनुरूप ताल का प्रयोग करके ताल के पहले खंड की पहली मात्रा (सम) के आधार पर मूल संधि का मुख्य पद्यभार निश्चित किया जा सकता है तथा ताल के दूसरे खंड की पहली मात्रा के आधार पर मूल संधि का गौण पद्यभार निश्चित किया जा सकता है। अलग-अलग प्रकार की मूल संधि के मुख्य और गौण पद्यभार के आधार पर अन्य सभी संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को निश्चित किया जा सकता है। अब मैं संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को दर्शानेवाली तुलनात्मक सूचि प्रस्तुत करता हूं।

अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी संधि के मुख्य और गौण पद्यभार (पद्यभार के स्थान को रेखांकित करके दर्शाया है)

संधि क्रमांक	संधि का प्रकार	मुख्य पद्यभार के साथ संधि	गौण पद्यभार के साथ संधि	मुख्य पद्यभार से गौण पद्यभार का मात्रा-अंतर	गौण पद्यभार से मुख्य पद्यभार का मात्रा-अंतर
०१	पंचकल	लगागा	लगागा	२	३
०२	पंचकल	गालगा	गालगा	२	३
०३	षट्कल	लगालगा या लगालगा	लगालगा या लगालगा	३	३
०४	षट्कल	ललगागा	ललगागा	३	३
०५	षट्कल	गाललगा	गाललगा	३	३
०६	सप्तकल	लगागागा	लगागागा	३	४
०७	सप्तकल	गालगागा	गालगागा	३	४
०८	सप्तकल	गागालगा	गागालगा	३	४
०९	सप्तकल	ललगालगा	ललगालगा	३	४
१०	सप्तकल	लगाललगा	लगाललगा	३	४
११	अष्टकल	गागागागा या गागागागा	गागागागा या गागागागा	४	४
१२	अष्टकल	लगालगागा	लगालगागा	४	४
१३	अष्टकल	ललगागागा	ललगागागा	४	४
१४	अष्टकल	गाललगागा	गाललगागा	४	४
१५	अष्टकल	गागाललगा	गागाललगा	४	४
१६	अष्टकल	ललगाललगा	ललगाललगा	४	४
१७	अष्टकल	गालगालगा	गालगालगा	४	४

अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी संधि के मुख्य और गौण पद्‌यभार (पद्‌यभार के स्थान को रेखांकित करके दर्शाया है)

संधि क्रमांक	संधि का प्रकार	मुख्य पद्‌यभार के साथ संधि	गौण पद्‌यभार के साथ संधि	मुख्य पद्‌यभार से गौण पद्‌यभार का मात्रा-अंतर	गौण पद्‌यभार से मुख्य पद्‌यभार का मात्रा-अंतर
०१	पंचकल	गागाल	गागाल	२	३
०२	षट्‌कल	गालगाल या गालगाल	गालगाल या गालगाल	३	३
०३	षट्‌कल	गागालल	गागालल	३	३
०४	सप्तकल	गालगालल	गालगालल	३	४
०५	सप्तकल	गागागाल	गागागाल	३	४
०६	सप्तकल	गाललगाल	गाललगाल	३	४
०७	अष्टकल	गागागालल	गागागालल	४	४
०८	अष्टकल	गाललगालल	गाललगालल	४	४
०९	अष्टकल	गागालगाल	गागालगाल	४	४

उपरोक्त दोनों सूचि के अभ्यास से कुछ तारण निकाल सकते हैं जो इस प्रकार है।

(०१)	किसी भी संधि में मुख्य और गौण पद्‌यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं हुआ है।
(०२)	जिस संधि में मुख्य या गौण पद्‌यभार लघुअक्षर पर स्थित हो उस संधि में मुख्य या गौण पद्‌यभारवाले लघुअक्षर के बाद गुरुअक्षर का ही प्रयोग हुआ है।
(०३)	मुख्य पद्‌यभार और गौण पद्‌यभार दोनों लघुअक्षर पर ही स्थित हो ऐसी एक भी संधि ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त नहीं होती।
(०४)	किसी भी एक संधि के आवर्तित स्वरूप में भी दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षर एकसाथ नहीं आते।

(०५)	हरेक पंचकल संधि में मुख्य पद्यभार से द्विकल संधि (गा) और गौण पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल) को अलग किया जा सकता है।
(०६)	हरेक षट्कल संधि में मुख्य पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल) और गौण पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल या लगा) को अलग किया जा सकता है।
(०७)	हरेक सप्तकल संधि में मुख्य पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल) और गौण पद्यभार से चतुष्कल संधि (गागा या गालल) को अलग किया जा सकता है।
(०८)	हरेक अष्टकल संधि में मुख्य पद्यभार से चतुष्कल संधि (गागा या गालल या लगाल) और गौण पद्यभार से चतुष्कल संधि (गागा या गालल या लगाल) को अलग किया जा सकता है।
(०९)	जिन अष्टकल संधि में दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त नहीं हुए हैं उन अष्टकल संधि में दो लघुअक्षरों के बीच में एक से अधिक गुरुअक्षर का प्रयोग नहीं हुआ है।
(१०)	अष्टकल संधि लगालगागा और गालगालगा में ही मुख्य पद्यभार लघुअक्षर पर स्थित है क्योंकि दोनों संधि अनुक्रम से अष्टकल संधि गागागागा और गागागागा के ही स्वरूप हैं।

इस पद्यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ छंद निरूपण के लिए मुख्य पद्यभार को ही ध्यान में लिया जाता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट लेने के लिए मुख्य पद्यभार के अलावा गौण पद्यभार को भी ध्यान में लेना पड़ता है। एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर नहीं ली जाती।

***

(५)
पद्यभार आधारित पद्धति से छंद-रचना

यहां पर फिर से मेरी पद्यभार आधारित पद्धति से ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त होनेवाली संधि की सूचि प्रस्तुत करता हूं और फिर से इस बात का ज़िक्र करता हूं कि सूचि में हरेक संधि के पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया है।

संधि क्रमांक	संधि	संधि का प्रकार	संधि की कुल मात्रा
०१	लगागा	पंचकल	१+२+२=५
०२	गालगा	पंचकल	२+१+२=५
०३	लगालगा या लगालगा	षट्कल	१+२+१+२=६
०४	ललगागा	षट्कल	१+१+२+२=६
०५	गाललगा	षट्कल	२+१+१+२=६
०६	लगागागा	सप्तकल	१+२+२+२=७
०७	गालगागा	सप्तकल	२+१+२+२=७
०८	गागालगा	सप्तकल	२+२+१+२=७
०९	ललगालगा	सप्तकल	१+१+२+१+२=७
१०	लगाललगा	सप्तकल	१+२+१+१+२=७
११	गागागागा या गागागागा	अष्टकल	२+२+२+२=८
१२	लगालगागा	अष्टकल	१+२+१+२+२=८
१३	ललगागागा	अष्टकल	१+१+२+२+२=८
१४	गाललगागा	अष्टकल	२+१+१+२+२=८
१५	गागाललगा	अष्टकल	२+२+१+१+२=८
१६	ललगाललगा	अष्टकल	१+१+२+१+१+२=८
१७	गालगालगा	अष्टकल	२+१+२+१+२=८

उपरोक्त सूचि में संधि क्रमांक १ से १७ में से संधि क्रमांक १ से १२ को मुख्य संधि समझना चाहिए कि जिसके आवर्तित स्वरूप की रचना पाई जाती है तथा संधि क्रमांक १३ से

१७ को गौण संधि समझना चाहिए कि जिसका प्रयोग ज़ियादातर गागागागा संधि के विकल्प के रूप में ही होता है। गागागालल, गाललगालल और गागालगाल संधि को भी गौण संधि ही समझना चाहिए कि जिसका समावेश संधि क्रमांक १ से १७ में नहीं किया गया है और जिसका प्रयोग गागागागा संधि के विकल्प के रूप में ही होता है।

अब उपरोक्त मुख्य संधि के प्रयोग से छंद-रचना किस तरह से होती है इसकी चर्चा करते हैं।

(१)	**किसी एक संधि के एक से अधिक आवर्तनों के प्रयोग से छंद-रचना की जा सकती है। छंद के इस प्रकार को हम शुद्ध-अखंडित प्रकार कहेंगे। किसी एक संधि के एक आवर्तन की भी रचना दिखाई देती है मगर उसमें गेय-तत्व नहीं रहता। सामान्य तौर पर पंचकल संधि के ज़ियादा से ज़ियादा आठ आवर्तनों के प्रयोगवाली और अन्य प्रकार की संधि के ज़ियादा से ज़ियादा चार आवर्तनों के प्रयोगवाली रचना दिखाई देती है मगर किसी भी संधि के चार आवर्तनों के प्रयोगवाले छंद श्रेष्ठ हैं। (लगागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने से लगागा लगागा लगागा लगागा छंद की रचना होती है।)**
(२)	**किसी एक संधि के एक से अधिक आवर्तनों के प्रयोगवाले छंद की पहली संधि के शुरूआत के अक्षर/अक्षरों का या अंतिम संधि के अंतिम अक्षर/अक्षरों का लोप करने से भी छंद-रचना की जा सकती है। छंद के इस प्रकार को हम शुद्ध-खंडित प्रकार कहेंगे। (लगागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से लगागा लगागा लगागा लगा छंद की रचना होती है और ललगागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद पहली संधि के पहले दोनों लघुअक्षरों का लोप करने से गागा ललगागा ललगागा ललगागा छंद की रचना होती है।)**
(३)	**किसी दो या इससे अधिक संधि के मिश्रण से या उस मिश्र स्वरूप के एक से अधिक आवर्तनों के प्रयोग से भी छंद-रचना की जा सकती है। छंद के इस प्रकार को हम मिश्र-अखंडित प्रकार कहेंगे। (अनुक्रम से ललगालगा और लगागा संधि के मिश्र स्वरूप के दो आवर्तनों का प्रयोग करने से ललगालगा लगागा ललगालगा लगागा छंद की रचना होती है।)**

(४)	किसी दो या इससे अधिक संधि के मिश्रण से प्राप्त स्वरूप की या उस मिश्र स्वरूप के एक से अधिक आवर्तनों के प्रयोगवाले स्वरूप की पहली संधि के शुरूआत के अक्षर/अक्षरों का या अंतिम संधि के अंतिम अक्षर/अक्षरों का लोप करने से भी छंद-रचना की जा सकती है। छंद के इस प्रकार को हम मिश्र-खंडित प्रकार कहेंगे। (अनुक्रम से ललगागा और लगालगा संधि के मिश्र स्वरूप के दो आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद पहली संधि के पहले दोनों लघुअक्षरों का लोप करने से गागा लगालगा ललगागा लगालगा छंद की रचना होती है।)
(५)	ऊपर क्रमांक (२) या (४) के अनुसार प्राप्त छंद के एक से अधिक आवर्तनों के प्रयोग से भी छंद-रचना की जा सकती है। छंद के इस प्रकार को हम अनुक्रम से शुद्ध-खंडित या मिश्र-खंडित प्रकार कहेंगे। (लगागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से प्राप्त स्वरूप के दो आवर्तनों के प्रयोग से लगागा लगागा लगागा लगा लगागा लगागा लगागा लगा छंद की रचना होती है।

इस तरह मेरी पद्‌यभार आधारित पद्धति के अनुसार ग़ज़ल के छंदों को चार प्रकार में वर्गीकृत किया जा सकता है।

(१)	शुद्ध-अखंडित
(२)	शुद्ध-खंडित
(३)	मिश्र-अखंडित
(४)	मिश्र-खंडित

उपरोक्त पद्धति से छंद-रचना करते समय इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि लघुअक्षर की १ मात्रा और गुरुअक्षर की २ मात्रा गिनने पर पूरे छंद में पद्‌यभार समान मात्रा के अंतर पर आना चाहिए। छंद में लोप के स्थान पर लोप किये हुए अक्षर की मात्रा के जितनी पद्‌यभार के अंतर में विषमता स्वीकार्य है, मगर छंद में लोप के स्थान के अलावा संधि के मिश्रण के कारन पद्‌यभार के अंतर में विषमता छंद की प्रवाहिता को नुकसान पहुंचाती है। शुद्ध-अखंडित प्रकार के छंद में एक ही संधि के आवर्तन होने के कारन पूरे छंद में पद्‌यभार समान मात्रा के अंतर पर होगा जबकि शुद्ध-खंडित प्रकार के छंद में सिर्फ़ लोप के स्थान पर ही लोप किये हुए अक्षर की मात्रा के जितनी विषमता रहेगी और वह विषमता स्वीकार्य है। मिश्र प्रकार के छंद में संधि का मिश्रण इस प्रकार से करना चाहिए कि जिससे पूरे छंद में पद्‌यभार समान मात्रा के अंतर पर आए। मिश्र प्रकार के छंद में भी लोप के स्थान पर लोप किये हुए अक्षर की मात्रा के जितनी पद्‌यभार के अंतर में विषमता स्वीकार्य है, लेकिन संधि के मिश्रण के कारन छंद में पद्‌यभार के अंतर में विषमता जितनी ज़ियादा

होगी उतनी ही उस छंद की प्रवाहिता कम होगी। जिस छंद में प्रवाहिता कम होगी उस छंद में गेय-तत्व भी कम होगा और उस छंद के प्रचलित होने की संभावना भी कम हो जाएगी।

ग़ज़ल के छंदों के विवरण में सभी छंदों के तर्क-संगत नाम भी दिये हैं। तर्क-संगत नाम में संधि के आवर्तन की संख्या दर्शाने के लिए संधि के आगे अंकों का प्रयोग किया है तथा लोप दर्शाने के लिए लोप किये हुए अक्षरों के आगे - चिह्न का प्रयोग और संधि के मिश्रण के लिए + चिह्न का प्रयोग किया है। छंद-रचना में शुरूआत में लोप की प्रक्रिया दर्शाने के लिए तर्क-संगत नाम में लोप किये गए अक्षरों को शुरूआत में - चिह्न के साथ दर्शाया है और छंद-रचना में अंत में लोप की प्रक्रिया दर्शाने के लिए तर्क-संगत नाम में लोप किये गए अक्षरों को अंत में - चिह्न के साथ दर्शाया है। किसी स्वरूप के आवर्तन को दर्शाने के लिए उस स्वरूप को कौंस में दर्शा कर कौंस से पहले स्वरूप की आवर्तन संख्या को अंकों में दर्शाया है। अलग-अलग छंदों के तर्क-संगत नाम के अभ्यास से इन बातों को अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

***

(६)
ग़ज़ल के ३० प्रचलित छंद और
पद्यभार आधारित पद्धति से छंद-रचना

अब मैं अपनी पद्यभार आधारित पद्धति से ग़ज़ल के ३० छंदों को दर्शाता हूं और उनकी छंद-रचना का भी वर्णन करता हूं। इस पद्यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ और अरूज़ के मुताबिक़ ग़ज़ल के छंदों की संधि ज़ियादातर समान ही रहेगी। जिस छंद में इस पद्यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ संधि और अरूज़ के मुताबिक़ संधि अलग होगी उस छंद के विवरण के अंत में अरूज़ के मुताबिक़ संधि अलग से दर्शाई गई है। जिस छंद के विवरण में अरूज़ के मुताबिक़ संधि अलग से दर्शाई गई न हो उस छंद की संधि इस पद्यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ और अरूज़ के मुताबिक़ समान ही है ऐसा समझना होगा। अरूज़ के मुताबिक़ छंद की संधि को भी यहां पर लघु-गुरु स्वरूप में ही दर्शाया है। हरेक छंद में पद्यभारवाले अक्षरों को रेखांकित करके दर्शाया है और हरेक छंद एक पंक्ति का माप दर्शाता है। (प्रकरण-८ में हरेक छंद की कुल मात्रा का विवरण भी दिया गया है और हरेक छंद में पद्यभारवाले अक्षरों के साथ-साथ पद्यभारवाली मात्राओं को भी रेखांकित करके दर्शाया गया है।)

(०१)	लगागा लगागा लगागा लगागा तर्क-संगत नाम : ४लगागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित कुल मात्रा : २० पद्यभार की मात्रा : २, ७, १२, १७। रचना : लगागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।
(०२)	लगागा लगागा लगागा लगा तर्क-संगत नाम : ४लगागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित कुल मात्रा : १८ पद्यभार की मात्रा : २, ७, १२, १७। रचना : लगागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है।

(०३)	**लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा** **तर्क-संगत नाम : ८लगागा** **प्रकार : शुद्ध-अखंडित** **कुल मात्रा : ४०** **पद्यभार की मात्रा : २, ७, १२, १७, २२, २७, ३२, ३७।** **रचना : लगागा संधि के आठ आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।**
(०४)	**गालगा गालगा गालगा गालगा** **तर्क-संगत नाम : ४गालगा** **प्रकार : शुद्ध-अखंडित** **कुल मात्रा : २०** **पद्यभार की मात्रा : ४, ९, १४, १९।** **रचना : गालगा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।**
(०५)	**गालगा गालगा गालगा गा** **तर्क-संगत नाम : ४गालगा-लगा** **प्रकार : शुद्ध-खंडित** **कुल मात्रा : १७** **पद्यभार की मात्रा : ४, ९, १४।** **रचना : गालगा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर और लघुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है। इस छंद में पद्यभारवाले गुरुअक्षर का लोप हुआ है।**
(०६)	**गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा** **तर्क-संगत नाम : ८गालगा** **प्रकार : शुद्ध-अखंडित** **कुल मात्रा : ४०** **पद्यभार की मात्रा : ४, ९, १४, १९, २४, २९, ३४, ३९।** **रचना : गालगा संधि के आठ आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।**

(०७)	**लगालगा लगालगा लगालगा लगालगा** **तर्क-संगत नाम : ४लगालगा** **प्रकार : शुद्ध-अखंडित** **कुल मात्रा : २४** **पद्यभार की मात्रा : २, ८, १४, २०।** **रचना : लगालगा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।**
(०८)	**गालगा लगालगा गालगा लगालगा** **तर्क-संगत नाम : २(-ल+२लगालगा)** **प्रकार : शुद्ध-खंडित** **कुल मात्रा : २२** **पद्यभार की मात्रा : १, ७, १२, १८।** **रचना : वैसे देखा जाए तो यह छंद अनुक्रम से गालगा और लगालगा संधि का मिश्र स्वरूप है मगर गालगा संधि का पद्यभार संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर (गालगा) स्थित है जो इस छंद में संधि के पहले गुरुअक्षर पर (गालगा) स्थित है इसलिए इस छंद की रचना अलग तरीक़े से होगी। लगालगा संधि के दो आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद पहली संधि के पहले लघुअक्षर का लोप करने से प्राप्त स्वरूप (गालगा लगालगा) के दो आवर्तनों के प्रयोग से इस छंद की रचना होती है।** **दूसरे तरीक़े से देखा जाए तो अनुक्रम से गागालगा और लगालगा संधि के मिश्र स्वरूप (गागालगा लगालगा) की पहली संधि के पहले गुरुअक्षर का लोप करने से प्राप्त स्वरूप (गालगा लगालगा) के दो आवर्तनों के प्रयोग से इस छंद की रचना होती है। इस तरह से इस छंद का प्रकार मिश्र-खंडित होगा मगर शुद्ध प्रकार से छंद-रचना की जा सकती हो तो मिश्र प्रकार पर विचार करना व्यर्थ है। इसलिए मैं इस छंद को शुद्ध-खंडित प्रकार का ही दर्शाता हूं।**

(०९)	गागा ललगागा ललगागा ललगागा तर्क-संगत नाम : -लल+४ललगागा प्रकार : शुद्ध-खंडित कुल मात्रा : २२ पद्‌यभार की मात्रा : ३, ९, १५, २१। रचना : ललगागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद पहली संधि के पहले दोनों लघुअक्षरों का लोप करने से इस छंद की रचना होती है। अरूज़ में इस छंद की संधि इस प्रकार दर्शाई गई है। गागाल लगागाल लगागाल लगागा
(१०)	लगागागा लगागागा लगागागा लगागागा तर्क-संगत नाम : ४लगागागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित कुल मात्रा : २८ पद्‌यभार की मात्रा : ६, १३, २०, २७। रचना : लगागागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।
(११)	लगागागा लगागागा लगागा तर्क-संगत नाम : ३लगागागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित कुल मात्रा : १९ पद्‌यभार की मात्रा : ६, १३। रचना : लगागागा संधि के तीन आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है। इस छंद में पद्‌यभारवाले गुरुअक्षर का लोप हुआ है।
(१२)	गालगागा गालगागा गालगागा गालगा तर्क-संगत नाम : ४गालगागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित कुल मात्रा : २६ पद्‌यभार की मात्रा : १, ८, १५, २२। रचना : गालगागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है।

(१३)	**गालगागा गालगागा गालगा** **तर्क-संगत नाम : ३गालगागा-गा** **प्रकार : शुद्ध-खंडित** **कुल मात्रा : १९** **पद्यभार की मात्रा : १, ८, १५।** **रचना : गालगागा संधि के तीन आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है।**
(१४)	**गालगागा गालगा गालगागा गालगा** **तर्क-संगत नाम : २(२गालगागा-गा)** **प्रकार : शुद्ध-खंडित** **कुल मात्रा : २४** **पद्यभार की मात्रा : १, ८, १३, २०।** **रचना : वैसे देखा जाए तो यह छंद अनुक्रम से गालगागा और गालगा संधि का मिश्र स्वरूप है मगर गालगा संधि का पद्यभार संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर (गालगा) स्थित है जो इस छंद में संधि के पहले गुरुअक्षर पर (गालगा) स्थित है इसलिए इस छंद की रचना अलग तरीक़े से होगी। गालगागा संधि के दो आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद दूसरी संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से प्राप्त स्वरूप (गालगागा गालगा) के दो आवर्तनों के प्रयोग से इस छंद की रचना होती है।**
(१५)	**गागालगा गागालगा गागालगा गागालगा** **तर्क-संगत नाम : ४गागालगा** **प्रकार : शुद्ध-अखंडित** **कुल मात्रा : २८** **पद्यभार की मात्रा : ३, १०, १७, २४।** **रचना : गागालगा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।**

<table>
<tr><td>(१६)</td><td>ललगालगा ललगालगा ललगालगा ललगालगा
तर्क-संगत नाम : ४ललगालगा
प्रकार : शुद्ध-अखंडित
कुल मात्रा : २८
पद्यभार की मात्रा : ३, १०, १७, २४।
रचना : ललगालगा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।</td></tr>
<tr><td>(१७)</td><td>लगालगागा लगालगागा लगालगागा लगालगागा
तर्क-संगत नाम : ४लगालगागा
प्रकार : शुद्ध-अखंडित
कुल मात्रा : ३२
पद्यभार की मात्रा : १, ९, १७, २५।
रचना : लगालगागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है। अरूज़ में इस छंद की संधि इस प्रकार दर्शाई गई है।
लगाल गागा लगाल गागा लगाल गागा लगाल गागा</td></tr>
<tr><td>(१८)</td><td>गागागागा गागागागा गागागागा गागागागा
तर्क-संगत नाम : ४गागागागा
प्रकार : शुद्ध-अखंडित
कुल मात्रा : ३२
पद्यभार की मात्रा : ३, ११, १९, २७।
रचना : गागागागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है। अरूज़ में इस छंद की संधि इस प्रकार दर्शाई गई है।
गागा गागा गागा गागा गागा गागा गागा गागा</td></tr>
</table>

(१९)	**गागागागा गागागागा गागागागा गागागा** **तर्क-संगत नाम : ४गागागागा-गा** **प्रकार : शुद्ध-खंडित** **कुल मात्रा : ३०** **पद्यभार की मात्रा : १, ९, १७, २५।** **रचना : गागागागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है। अरूज़ में इस छंद की संधि इस प्रकार दर्शाई गई है।** **गागा गागा गागा गागा गागा गागा गागा गा**
(२०)	**गागागागा गागागागा** **तर्क-संगत नाम : २गागागागा** **प्रकार : शुद्ध-अखंडित** **कुल मात्रा : १६** **पद्यभार की मात्रा : १, ९।** **रचना : गागागागा संधि के दो आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है। अरूज़ में इस छंद की संधि इस प्रकार दर्शाई गई है।** **गागा गागा गागा गागा**
(२१)	**गागागागा गागागा** **तर्क-संगत नाम : २गागागागा-गा** **प्रकार : शुद्ध-खंडित** **कुल मात्रा : १४** **पद्यभार की मात्रा : १, ९।** **रचना : गागागागा संधि के दो आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है। अरूज़ में इस छंद की संधि इस प्रकार दर्शाई गई है।** **गागा गागा गागा गा**

(२२)	**गा<u>गा</u>गागा गा<u>गा</u> गा<u>गा</u>गागा गा<u>गा</u>** तर्क-संगत नाम : २(२गा<u>गा</u>गागा-गागा) प्रकार : शुद्ध-खंडित कुल मात्रा : २४ पद्‌यभार की मात्रा : ३, ११, १५, २३। रचना : गा<u>गा</u>गागा संधि के दो आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम दो गुरुअक्षरों का लोप करने से प्राप्त स्वरूप (गा<u>गा</u>गागा गा<u>गा</u>) के दो आवर्तनों के प्रयोग से इस छंद की रचना होती है। अरूज़ में इस छंद की संधि इस प्रकार दर्शाई गई है। गागा गागा गागा गागा गागा गागा ज़ियादातर यह छंद गा<u>गा</u>ललगा गा<u>गा</u> गा<u>गा</u>ललगा गा<u>गा</u> के स्वरूप में ही प्रयुक्त होता दिखाई देता है और अरुज़ में इस स्वरूप की संधि इस प्रकार दर्शाई गई है। गागाल लगागागा गागाल लगागागा
(२३)	**गा<u>गा</u>लगा ल<u>गा</u>गा गा<u>गा</u>लगा ल<u>गा</u>गा** तर्क-संगत नाम : २(गा<u>गा</u>लगा+ल<u>गा</u>गा) प्रकार : मिश्र-अखंडित कुल मात्रा : २४ पद्‌यभार की मात्रा : ३, ९, १५, २१। रचना : अनुक्रम से गा<u>गा</u>लगा और ल<u>गा</u>गा संधि के मिश्र स्वरूप (गा<u>गा</u>लगा ल<u>गा</u>गा) के दो आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है। अरूज़ में इस छंद की संधि इस प्रकार दर्शाई गई है। गागाल गालगागा गागाल गालगागा

(२४)	ललगालगा लगागा ललगालगा लगागा तर्क-संगत नाम : २(ललगालगा+लगागा) प्रकार : मिश्र-अखंडित कुल मात्रा : २४ पद्यभार की मात्रा : ३, ९, १५, २१। रचना : अनुक्रम से ललगालगा और लगागा संधि के मिश्र स्वरूप (ललगालगा लगागा) के दो आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है। अरूज़ में इस छंद की संधि इस प्रकार दर्शाई गई है। ललगाल गालगागा ललगाल गालगागा
(२५)	गाललगा लगालगा गाललगा लगालगा तर्क-संगत नाम : २(गाललगा+लगालगा) प्रकार : मिश्र-अखंडित कुल मात्रा : २४ पद्यभार की मात्रा : १, ८, १३, २०। रचना : अनुक्रम से गाललगा और लगालगा संधि के मिश्र स्वरूप (गाललगा लगालगा) के दो आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।
(२६)	गागा लगालगा ललगागा लगालगा तर्क-संगत नाम : -लल+२(ललगागा+लगालगा) प्रकार : मिश्र-खंडित कुल मात्रा : २२ पद्यभार की मात्रा : ३, ९, १५, २१। रचना : अनुक्रम से ललगागा और लगालगा संधि के मिश्र स्वरूप (ललगागा लगालगा) के दो आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद पहली संधि के पहले दोनों लघुअक्षरों का लोप करने से इस छंद की रचना होती है। अरूज़ में इस छंद की संधि इस प्रकार दर्शाई गई है। गागाल गालगाल लगागाल गालगा

छंद क्रमांक २७, २८, २९ और ३० में अंतिम संधि ललगागा प्रयुक्त होती है और उस अंतिम संधि ललगागा के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से अंतिम संधि ललगा प्राप्त होती है कि जिसमें दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का या एक गुरुअक्षर का प्रयोग करने की छूट होने के कारन उन सभी छंदों में अंतिम संधि ललगा के

बजाय गागा को ही दर्शाया है। इस तरह छंद क्रमांक २७, २८, २९ और ३० में अंतिम संधि ललगा और गागा दोनों ही रूप में स्वीकार्य है।

(२७)	**लगालगा ललगागा लगालगा गागा** **तर्क-संगत नाम : २(लगालगा+ललगागा)-गा** **प्रकार : मिश्र-खंडित** **कुल मात्रा : २२** **पद्यभार की मात्रा : ५, ११, १७।** **रचना : अनुक्रम से लगालगा और ललगागा संधि के मिश्र स्वरूप (लगालगा ललगागा) के दो आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है कि जिसमें अंतिम संधि के दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर एक गुरुअक्षर का प्रयोग करने की छूट है। इस छंद में पद्यभारवाले गुरुअक्षर का लोप हुआ है।**

छंद क्रमांक २८, २९ और ३० में पहली संधि गालगागा प्रयुक्त होती है कि जिसका पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर (गालगागा) के बजाय संधि के अंतिम गुरुअक्षर (गालगागा) पर स्थित है। ललगागा संधि की शुरूआत में एक लघुअक्षर बढ़ाने से लललगागा संधि प्राप्त होती है। ग़ज़ल के छंदों में दो से अधिक लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त नहीं होते। इस आधार पर लललगागा संधि के दूसरे और तीसरे लघुअक्षरों को मिला कर एक गुरुअक्षर गिनने पर लगागागा संधि प्राप्त होती है कि जिसका समावेश ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त मुख्य संधि में हमने किया हुआ है, मगर लललगागा संधि के पहले और दूसरे लघुअक्षरों को मिला कर एक गुरुअक्षर गिनने पर गालगागा संधि प्राप्त होती है कि जिसका पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर (गालगागा) के बजाय संधि के अंतिम गुरुअक्षर (गालगागा) पर स्थित है। गालगागा संधि कि जिसका पद्यभार संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर स्थित है उसका प्रयोग षट्कल संधि ललगागा और लगालगा के साथ मिश्र रूप के जितना ही मर्यादित रहेगा। षट्कल संधि ललगागा और लगालगा का पद्यभार भी संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर ही स्थित है। छंद क्रमांक २८, २९ और ३० में कभी-कभी पहली संधि गालगागा के स्थान पर लगागागा भी प्रयुक्त होती दिखाई देती है।

(२८)	**गालगागा ललगागा ललगागा गागा** **तर्क-संगत नाम : ल+४ललगागा-गा** **प्रकार : शुद्ध-खंडित** **कुल मात्रा : २३** **पद्यभार की मात्रा : ६, १२, १८।** **रचना : ललगागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद पहली संधि की शुरूआत में एक लघुअक्षर बढ़ाने से और अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है कि जिसमें पहली संधि के पहले तीन लघुअक्षरों में से पहले दो लघुअक्षरों के स्थान पर एक गुरुअक्षर लेना होगा और अंतिम संधि के दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर एक गुरुअक्षर का प्रयोग करने की छूट होगी। इस छंद में पद्यभारवाले गुरुअक्षर का लोप हुआ है।**
(२९)	**गालगागा ललगागा गागा** **तर्क-संगत नाम : ल+३ललगागा-गा** **प्रकार : शुद्ध-खंडित** **कुल मात्रा : १७** **पद्यभार की मात्रा : ६, १२।** **रचना : ललगागा संधि के तीन आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद पहली संधि की शुरूआत में एक लघुअक्षर बढ़ाने से और अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है कि जिसमें पहली संधि के पहले तीन लघुअक्षरों में से पहले दो लघुअक्षरों के स्थान पर एक गुरुअक्षर लेना होगा और अंतिम संधि के दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर एक गुरुअक्षर का प्रयोग करने की छूट होगी। इस छंद में पद्यभारवाले गुरुअक्षर का लोप हुआ है।**

(३०)	**गालगागा लगालगा गागा** **तर्क-संगत नाम : ल+ललगागा+लगालगा+ललगागा-गा** **प्रकार : मिश्र-खंडित** **कुल मात्रा : १७** **पद्यभार की मात्रा : ६, १२।** **रचना : अनुक्रम से ललगागा, लगालगा और ललगागा संधि का प्रयोग करने के बाद पहली संधि की शुरूआत में एक लघुअक्षर बढ़ाने से और अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है कि जिसमें पहली संधि के पहले तीन लघुअक्षरों में से पहले दो लघुअक्षरों के स्थान पर एक गुरुअक्षर लेना होगा और अंतिम संधि के दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर एक गुरुअक्षर का प्रयोग करने की छूट होगी। इस छंद में पद्यभारवाले गुरुअक्षर का लोप हुआ है।**

लघुअक्षर की १ मात्रा और गुरुअक्षर की २ मात्रा गिनने पर छंद क्रमांक २५ के अलावा सभी अखंडित प्रकार के (शुद्ध और मिश्र दोनों) छंदों में पद्यभार समान मात्रा के अंतर पर स्थित है और सभी खंडित प्रकार के (शुद्ध और मिश्र दोनों) छंदों में सिर्फ़ लोप के स्थान पर लोप किये हुए अक्षरों की मात्रा के जितनी ही विषमता रहती है जो स्वीकार्य है। छंद क्रमांक २५ में संधि के मिश्रण के कारन पद्यभार के अंतर में विषमता रहती है और इसीलिए उसमें पद्यभार अनुक्रम से ७ और ५ मात्रा के अंतर पर स्थित है। जिस छंद में संधि के मिश्रण के कारन पद्यभार के अंतर में विषमता जितनी ज़ियादा रहेगी उस छंद की प्रवाहिता और गेय-तत्व उतने ही कम होंगे और उस छंद के प्रचलित होने की संभावना भी उतनी ही कम हो जाएगी।

गणित के नियमों के आधार पर ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि के प्रयोग से शुद्ध-अखंडित, शुद्ध-खंडित, मिश्र-अखंडित और मिश्र-खंडित प्रकार के कई छंदों की रचना की जा सकती है। अब मैं उदाहरण के तौर पर लगागा संधि के प्रयोग से प्राप्त शुद्ध-अखंडित और शुद्ध-खंडित प्रकार के कुछ छंदों को दर्शाता हूं।

(१)	**लगागा संधि के चार या आठ आवर्तनों का प्रयोग करने से इस प्रकार के छंदों की रचना की जा सकती है।**

	१.	**लगागा लगागा लगागा लगागा** **तर्क-संगत नाम : ४लगागा**
	२.	**लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा** **तर्क-संगत नाम : ८लगागा**

<table>
<tr><td>(२)</td><td>लगागा संधि के चार या आठ आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस प्रकार के छंदों की रचना की जा सकती है।
<table>
<tr><td>१.</td><td>लगागा लगागा लगागा लगा
तर्क-संगत नाम : ४लगागा-गा</td></tr>
<tr><td>२.</td><td>लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगा
तर्क-संगत नाम : ८लगागा-गा</td></tr>
</table></td></tr>
<tr><td>(३)</td><td>लगागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से प्राप्त स्वरूप के दो आवर्तनों का प्रयोग करने से इस प्रकार के छंद की रचना की जा सकती है।
<table>
<tr><td>१.</td><td>लगागा लगागा लगागा लगा लगागा लगागा लगागा लगा
तर्क-संगत नाम : २(४लगागा-गा)</td></tr>
</table></td></tr>
<tr><td>(४)</td><td>लगागा संधि के चार या आठ आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद पहली संधि के पहले लघुअक्षर का लोप करने से इस प्रकार के छंदों की रचना की जा सकती है।
<table>
<tr><td>१.</td><td>गागा लगागा लगागा लगागा
तर्क-संगत नाम : -ल+४लगागा</td></tr>
<tr><td>२.</td><td>गागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा
तर्क-संगत नाम : -ल+८लगागा</td></tr>
</table></td></tr>
<tr><td>(५)</td><td>लगागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद पहली संधि के पहले लघुअक्षर का लोप करने से प्राप्त स्वरूप के दो आवर्तनों का प्रयोग करने से इस प्रकार के छंद की रचना की जा सकती है।
<table>
<tr><td>१.</td><td>गागा लगागा लगागा लगागा गागा लगागा लगागा लगागा
तर्क-संगत नाम : २(-ल+४लगागा)</td></tr>
</table></td></tr>
<tr><td>(६)</td><td>लगागा संधि के दो आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से प्राप्त स्वरूप के दो या चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस प्रकार के छंदों की रचना की जा सकती है।
<table>
<tr><td>१.</td><td>लगागा लगा लगागा लगा
तर्क-संगत नाम : २(२लगागा-गा)</td></tr>
<tr><td>२.</td><td>लगागा लगा लगागा लगा लगागा लगा लगागा लगा
तर्क-संगत नाम : ४(२लगागा-गा)</td></tr>
</table></td></tr>
</table>

(७) **लगागा संधि के दो आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद पहली संधि के पहले लघुअक्षर का लोप करने से प्राप्त स्वरूप के दो या चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस प्रकार के छंदों की रचना की जा सकती है।**

१.	**गागा लगागा गागा लगागा** **तर्क-संगत नाम : २(-ल+२लगागा)**
२.	**गागा लगागा गागा लगागा गागा लगागा गागा लगागा** **तर्क-संगत नाम : ४(-ल+२लगागा)**

ऊपर लगागा संधि के प्रयोग से प्राप्त जितने भी छंदों की चर्चा की उन सभी छंदों में संधि की कुल संख्या चार या आठ रही है। इसी तरह छंद में संधि की कुल संख्या दो, तीन, पांच, छह या सात हो ऐसे छंदों की रचना भी की जा सकती है। इसी तरह अन्य संधि के प्रयोग से भी छंद-रचना की जा सकती है।

उपरोक्त पद्धति से छंद-रचना करने पर शुद्ध-खंडित प्रकार में कुछ छंद सामान्य रहेंगें। इन सामान्य छंदों को जिस संधि के प्रयोग से समझना आसान हो उसी का स्वीकार करेंगे। दो छंद के उदाहरण से इस बात को समझते हैं। हमने मुख्य संधि में दो पंचकल संधि लगागा और गालगा का समावेश किया है और दोनों संधि के प्रयोग से प्राप्त शुद्ध-खंडित प्रकार के एक-एक छंद की चर्चा हमने की है।

(१) **लगागा लगागा लगागा लगा**

लगागा और गालगा दोनों संधि के आवर्तित स्वरूप को खंडित करने से इस छंद को प्राप्त किया जा सकता है।

१.	**लगागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है।** **तर्क-संगत नाम : ४लगागा-गा** **लगागा लगागा लगागा लगा**
२.	**गालगा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद पहली संधि के पहले गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है।** **तर्क-संगत नाम : -गा+४गालगा** **लगा गालगा गालगा गालगा = लगागा लगागा लगागा लगा**

इन दोनों तरीक़े से छंद-रचना करने पर पद्‌यभार के स्थान में कोई फ़रक़ नहीं पड़ता, फिर भी इस छंद की रचना को पहले तरीक़े से ही समझना उचित होगा।

<table>
<tr><td>(२)</td><td>गाल<u>गा</u> गाल<u>गा</u> गाल<u>गा</u> गा
गाल<u>गा</u> और ल<u>गा</u>गा दोनों संधि के आवर्तित स्वरूप को खंडित करने से इस छंद को प्राप्त किया जा सकता है।
<table>
<tr><td>१.</td><td>गाल<u>गा</u> संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर और लघुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है।
तर्क-संगत नाम : ४गाल<u>गा</u>-लगा
गाल<u>गा</u> गाल<u>गा</u> गाल<u>गा</u> गा</td></tr>
<tr><td>२.</td><td>ल<u>गा</u>गा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद पहली संधि के पहले लघुअक्षर और पहले गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है।
तर्क-संगत नाम : -लगा+४ल<u>गा</u>गा
गा ल<u>गा</u>गा ल<u>गा</u>गा ल<u>गा</u>गा = गाल<u>गा</u> गाल<u>गा</u> गाल<u>गा</u> गा</td></tr>
</table>
इन दोनों तरीक़े से छंद-रचना करने पर पद्यभार के स्थान में कोई फ़रक़ नहीं पड़ता, फिर भी इस छंद की रचना को पहले तरीक़े से ही समझना उचित होगा।</td></tr>
</table>

भविष्य में 'ग़ज़ल का बृहत् पिंगल' की रचना करने की इच्छा है कि जिसमें ग़ज़ल के और भी छंदों का समावेश करके सभी छंदों का विस्तृत वर्णन करुंगा।

***

(७)
ग़ज़ल के छंद और संगीत के ताल का समन्वय

जिस तरह काव्य-रचना में प्रवाहिता के लिए छंद ज़रूरी है उसी तरह संगीत-रचना में प्रवाहिता के लिए ताल ज़रूरी है। ग़ज़ल के छंद मात्रिक छंद (मात्रामेल छंद) होने के कारन उनका संगीत के ताल के साथ सीधा संबंध स्थापित होता है। ग़ज़ल के छंद में प्रयुक्त संधि के पद्यभार को हमने संगीत के ताल के आधार पर ही निश्चित किया है। पंचकल संधि के लिए १० मात्रा के झपताल का प्रयोग, षट्कल संधि के लिए ६ मात्रा के ताल दादरा का प्रयोग, सप्तकल संधि के लिए ७ मात्रा के ताल रूपक या १४ मात्रा के ताल दीपचन्दी का प्रयोग और अष्टकल संधि के लिए ८ मात्रा के ताल कहरवा का प्रयोग करके ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त हरेक संधि का पद्यभार हमने निश्चित किया है मगर एक संगीतकार ग़ज़ल की संगीत-रचना करते समय इस बंधन से मुक्त हो कर अलग-अलग संधि के आवर्तित स्वरूप के छंदों के लिए अलग-अलग ताल का प्रयोग करता है। एक संगीतकार किसी भी छंद की रचना की किसी भी ताल में संगीत-रचना कर सकता है मगर यहां पर बताई गई बातों को ध्यान में रख कर संगीत-रचना करने से उस रचना की धून में प्रवाहिता और भावतत्व को अच्छी तरह से निभाया जा सकता है। वैसे तो ज़ियादातर संगीत-रचना किसी एक ही ताल में संगीतबद्ध होती है। ग़ज़ल-गायन जो सुगम-संगीत का ही एक प्रकार है और उसमें ज़ियादातर ताल कहरवा, दादरा या दादरा-चलती, रूपक, दीपचन्दी और झपताल का प्रयोग होता है। अब इन सभी ताल का वर्णन प्रस्तुत है।

ताल कहरवा :

मात्रा : ८

खंड : २ (४+४)

ताली की मात्रा : १

खाली की मात्रा : ५

धा	गे	न	ती	न	क	धी	न
१	२	३	४	५	६	७	८
×				०			

ताल दादरा या दादरा-चलती :

मात्रा : ६

खंड : २ (३+३)

ताली की मात्रा : १

खाली की मात्रा : ४

धा	धी	ना	धा	ती	ना
१	२	३	४	५	६
×			०		

ताल रूपक :

मात्रा : ७

खंड : ३ (३+२+२)

ताली की मात्रा : ४ और ६

खाली की मात्रा : १

ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
१	२	३	४	५	६	७
×			१		२	

ताल दीपचन्दी :

मात्रा : १४

खंड : ४ (३+४+३+४)

ताली की मात्रा : १, ४ और ११

खाली की मात्रा : ८

धा	धीं	-	धा	गे	तीं	-	ता	तीं	-	धा	गे	धीं	-
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
×			२				०			३			

झपताल :

मात्रा : १०

खंड : ४ (२+३+२+३)

ताली की मात्रा : १, ३ और ८

खाली की मात्रा : ६

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
×		२			०		३		

हमने ग़ज़ल के जिन ३० छंदों की चर्चा की उन हरेक छंद की रचना को ताल दादरा में संगीतबद्ध किया जा सकता है। इस तरह ताल दादरा उन सभी छंदों के लिए सामान्य है, फिर भी ग़ज़ल-गायन में शब्दों की असरदार प्रस्तुती के लिए पंचकल संधि ल<u>गा</u>गा और गाल<u>गा</u> तथा षट्कल संधि ल<u>गा</u>लगा के आवर्तित स्वरूप के छंदों के लिए ताल दादरा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है और बाक़ी के छंदों के लिए ताल कहरवा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है। इस तरह ग़ज़ल के उन ३० छंदों में से छंद क्रमांक १ से ८ के लिए ताल दादरा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित होगा और बाक़ी के छंद क्रमांक ९ से ३० के लिए ताल कहरवा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित होगा।

हमने किसी एक संधि के आवर्तित स्वरूप के शुद्ध प्रकार के छंदों को दो विभाग में वर्गीकृत किया है : शुद्ध-अखंडित और शुद्ध-खंडित। पंचकल संधि के आवर्तित स्वरूपवाले छंदों के लिए १० मात्रा के झपताल का प्रयोग, षट्कल संधि के आवर्तित स्वरूपवाले छंदों के लिए ६ मात्रा के ताल दादरा-चलती का प्रयोग, सप्तकल संधि के आवर्तित स्वरूपवाले छंदों के लिए ७ मात्रा के ताल रूपक का प्रयोग और अष्टकल संधि के आवर्तित स्वरूपवाले छंदों के लिए ८ मात्रा के ताल कहरवा का प्रयोग शुद्ध-अखंडित प्रकार के छंदों की रचना के गायन में सांस लेने में विक्षेप पैदा कर सकता है जबकि शुद्ध-खंडित प्रकार के छंदों की रचना के गायन में लोप के स्थान पर लोप किये हुए अक्षर की मात्रा के जितनी मात्रा का अवकाश सांस लेने के लिए रहता है।

ताल के एक आवर्तन में एक ही संधि का प्रयोग हुआ हो तो छंद के सभी पद्यभारवाले अक्षर पर ताल का सम आएगा और ताल के एक आवर्तन में दो संधि का प्रयोग हुआ हो तो छंद के सभी पद्यभारवाले अक्षर पर अनुक्रम से ताल के सम और खाली आएंगे।

अब ग़ज़ल के छंद और संगीत के ताल के समन्वय के विषय के अभ्यास के दरमियान जिस बात का ध्यान रखना है वह प्रस्तुत है।

ताल कहरवा, दादरा-चलती, रूपक, दीपचन्दी और झपताल के प्रयोग में १ लघुअक्षर के लिए १ मात्रा का और १ गुरुअक्षर के लिए २ या उससे अधिक मात्रा का प्रयोग किया जा सकता है तथा ताल दादरा के प्रयोग में १ लघुअक्षर के लिए १/२ मात्रा का और १ गुरुअक्षर के लिए १ या उससे अधिक मात्रा का प्रयोग किया जा सकता है।

(१)
लगागा लगागा लगागा लगागा

पंचकल संधि लगागा के चार आवर्तनवाले इस शुद्ध-अखंडित छंद की रचना के लिए ६ मात्रा के ताल दादरा या दादरा-चलती का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है। इस छंद की रचना के लिए ताल दीपचन्दी, रूपक और झपताल का प्रयोग भी कर सकते हैं मगर झपताल का प्रयोग गायन में सांस लेने में विक्षेप पैदा कर सकता है और ताल रूपक के मुक़ाबले ताल दीपचन्दी का प्रयोग ही ज़ियादा उचित है। इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा का प्रयोग अन्य ताल के मुक़ाबले बहुत कम उचित है, फिर भी इस छंद की रचना के लिए एक अलग तरीक़े से ताल कहरवा का प्रयोग हुआ है और इसमें कई गीत भी प्रचलित हुए हैं। ताल कहरवा के इस प्रकार के प्रयोग की चर्चा अंत में अलग से की है।

: झपताल :

(हरेक पंक्ति का दसवीं मात्रा से आरंभ)

ल	गा	-	गा	-	ल	गा	-	गा	-	ल	गा	-	गा	-	ल	गा	-	गा	-
१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
	×		२			०		३			×		२			०		३	

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का छठी और पहली मात्रा के बीच में से आरंभ)

-ल	गा	गा	-ल	गा	गा	-ल	गा	गा	-ल	गा	गा
६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५
	×			०			×			०	

ताल दादरा में सम से या खाली से (लगागा संधि के पहले गुरुअक्षर से) नये शब्द की शुरूआत होती हो तो कई बार उसे पहली या चौथी मात्रा से गाने के बजाय पहली और दूसरी मात्रा के बीच में से या चौथी और पांचवीं मात्रा के बीच में से भी गाया जाता है।

: ताल दादरा-चलती :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

ल ६	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ ०	- ५	ल ६	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ ०	- ५
ल ६	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ ०	- ५	ल ६	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ ०	- ५

ताल दादरा और दादरा-चलती दोनों के झोक में ज़रा सा फ़रक़ है जो दोनों के विवरण के अभ्यास से समझा जा सकता है। लगागा लगागा लगागा लगागा छंद के लिए ताल दादरा के दो आवर्तनों का प्रयोग हुआ है जबकि ताल दादरा-चलती के चार आवर्तनों का प्रयोग हुआ है। ऐसा भी देखा गया है कि ताल दादरा-चलती बजने पर भी गायन का झोक ताल दादरा का ही हो।

: ताल दीपचन्दी :

(हरेक पंक्ति का चौदहवीं मात्रा से आरंभ)

ल १४	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ २	- ५	- ६	ल ७	गा ८ ०	- ९	- १०	गा ११ ३	- १२	- १३
ल १४	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ २	- ५	- ६	ल ७	गा ८ ०	- ९	- १०	गा ११ ३	- १२	- १३

: ताल रूपक :

(हरेक पंक्ति का सातवीं मात्रा से आरंभ)

ल ७	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ १	- ५	- ६ २	ल ७	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ १	- ५	- ६ २
ल ७	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ १	- ५	- ६ २	ल ७	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ १	- ५	- ६ २

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का आठवीं मात्रा से आरंभ)

ल	गा	-	गा	ल	गा	-	गा	ल	गा	-	गा	ल	गा	-	गा
८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७
	×				०				×				०		

ताल कहरवा के इस प्रकार के प्रयोग में हरेक लगागा संधि के दूसरे गुरुअक्षर को एक ही मात्रा में (तीसरी या सातवीं मात्रा पर) गाना पड़ता है जबकि ताल कहरवा में एक गुरुअक्षर के लिए कम से कम दो मात्रा का प्रयोग होना चाहिए। इस छंद के लिए ताल कहरवा का एक अलग तरीक़े से भी प्रयोग होता है वह प्रस्तुत है। ताल कहरवा के इस प्रकार के प्रयोगवाले कई गाने बहुत प्रचलित हैं।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का तीसरी मात्रा से आरंभ)

ल	गा	-	गा	-	ल	गा	-	-	-	गा	-	-	-	-	-
३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२
		०				×				०				×	
ल	गा	-	गा	-	ल	गा	-	-	-	गा	-	-	-	-	-
३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२
		०				×				०				×	

इस छंद में दूसरी लगागा संधि के दूसरे गुरुअक्षर से नये शब्द की शुरूआत होती हो तो ताल कहरवा के उपरोक्त प्रकार के प्रयोग का स्वरूप इस प्रकार होगा।

ल	गा	-	गा	-	ल	गा	-	-	-	-	गा	-	ल	गा	-
३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२
		०				×				०				×	
-	-	-	गा	-	ल	गा	-	-	-	गा	-	-	-	-	-
३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२
		०				×				०				×	

इसी तरह से लगागा लगागा लगागा लगा और लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा छंद के लिए भी उपरोक्त पद्धति से अलग-अलग ताल का प्रयोग किया जा सकता है। लगागा लगागा लगागा लगा छंद के लिए झपताल का प्रयोग भी उचित होगा क्योंकि अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप होने के कारन गायन में सांस लेने के लिए लोप के स्थान पर लोप किये हुए एक गुरुअक्षर की दो मात्रा का अवकाश रहता है।

(२)
गालगा गालगा गालगा गालगा

पंचकल संधि गालगा के चार आवर्तनवाले इस शुद्ध-अखंडित छंद की रचना के लिए ६ मात्रा के ताल दादरा या दादरा-चलती का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है। इस छंद की रचना के लिए ताल दीपचन्दी, रूपक और झपताल का प्रयोग भी कर सकते हैं मगर झपताल का प्रयोग गायन में सांस लेने में विक्षेप पैदा कर सकता है और ताल रूपक के मुक़ाबले ताल दीपचन्दी का प्रयोग ही ज़ियादा उचित है। इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा का प्रयोग अन्य ताल के मुक़ाबले कम उचित है, फिर भी इस छंद की रचना के लिए एक अलग तरीक़े से ताल कहरवा का प्रयोग हुआ है और इसमें कई गीत भी प्रचलित हुए हैं। ताल कहरवा के इस प्रकार के प्रयोग की चर्चा अंत में अलग से की है।

: झपताल :

(हरेक पंक्ति का आठवीं मात्रा से आरंभ)

गा	-	ल	गा	-	गा	-	ल	गा	-	गा	-	ल	गा	-	गा	-	ल	गा	-
८	९	१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१	२	३	४	५	६	७
३			×		२			०		३			×		२			०	

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का पांचवीं मात्रा से आरंभ)

गा	-ल	गा	गा	-ल	गा	गा	-ल	गा	गा	-ल	गा
५	६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४
		×			०			×			०

ताल दादरा में इस छंद की रचना की पंक्ति का आरंभ पांचवीं और छठी मात्रा के बीच में से भी किया जा सकता है। ताल दादरा में सम से या खाली से (गालगा संधि के अंतिम गुरुअक्षर से) नये शब्द की शुरूआत होती हो तो कई बार उसे पहली या चौथी मात्रा से गाने के बजाय पहली और दूसरी मात्रा के बीच में से या चौथी और पांचवीं मात्रा के बीच में से भी गाया जाता है।

: ताल दादरा-चलती :

(हरेक पंक्ति का चौथी मात्रा से आरंभ)

गा	-	ल	गा	-	-	गा	-	ल	गा	-	-
४	५	६	१	२	३	४	५	६	१	२	३
०			×			०			×		
गा	-	ल	गा	-	-	गा	-	ल	गा	-	-
४	५	६	१	२	३	४	५	६	१	२	३
०			×			०			×		

ताल दादरा और दादरा-चलती दोनों के झोक में ज़रा सा फ़रक़ है जो दोनों के विवरण के अभ्यास से समझा जा सकता है। गालगा गालगा गालगा गालगा छंद के लिए ताल दादरा के दो आवर्तनों का प्रयोग हुआ है जबकि ताल दादरा-चलती के चार आवर्तनों का प्रयोग हुआ है। ऐसा भी देखा गया है कि ताल दादरा-चलती बजने पर भी गायन का झोक ताल दादरा का ही हो।

: ताल दीपचन्दी :

(हरेक पंक्ति का ग्यारहवीं मात्रा से आरंभ)

गा	-	-	ल	गा	-	-	गा	-	-	ल	गा	-	-
११	१२	१३	१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
३				×			२				०		
गा	-	-	ल	गा	-	-	गा	-	-	ल	गा	-	-
११	१२	१३	१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
३				×			२				०		

: ताल रूपक :

(हरेक पंक्ति का चौथी मात्रा से आरंभ)

गा	-	-	ल	गा	-	-	गा	-	-	ल	गा	-	-
४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	२	३
१		२		×			१		२		×		
गा	-	-	ल	गा	-	-	गा	-	-	ल	गा	-	-
४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	२	३
१		२		×			१		२		×		

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का सातवीं मात्रा से आरंभ)

गा	ल	गा	-	गा	ल	गा	-	गा	ल	गा	-	गा	ल	गा	-
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	

ताल कहरवा के इस प्रकार के प्रयोग में हरेक गालगा संधि के पहले गुरुअक्षर को एक ही मात्रा में (तीसरी या सातवीं मात्रा पर) गाना पड़ता है जबकि ताल कहरवा में एक गुरुअक्षर के लिए कम से कम दो मात्रा का प्रयोग होना चाहिए। इस छंद के लिए ताल कहरवा का एक अलग तरीक़े से भी प्रयोग होता है वह प्रस्तुत है। ताल कहरवा के इस प्रकार के प्रयोगवाले गाने भी बहुत प्रचलित हैं।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

गा	-	ल	गा	-	-	-	-	गा	-	ल	गा	-	-	-	-
६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५
			×				०				×				०
गा	-	ल	गा	-	-	-	-	गा	-	ल	गा	-	-	-	-
६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५
			×				०				×				०

इसी तरह से गालगा गालगा गालगा गा और गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा छंद के लिए भी उपरोक्त पद्धति से अलग-अलग ताल का प्रयोग किया जा सकता है। गालगा गालगा गालगा गा छंद के लिए झपताल का प्रयोग भी उचित होगा क्योंकि अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर और लघुअक्षर का लोप होने के कारन गायन में सांस लेने के लिए लोप के स्थान पर लोप किये हुए एक गुरुअक्षर और एक लघुअक्षर की तीन मात्रा का अवकाश रहता है।

झपताल का प्रयोग पंचकल संधि के आवर्तित स्वरूपवाले छंदों के लिए ही किया जा सकता है इसलिए अब बाक़ी के सभी छंदों की चर्चा झपताल के अलावा अन्य ताल के संदर्भ में ही करेंगे।

(३)
लगालगा लगालगा लगालगा लगालगा

षट्कल संधि लगालगा के चार आवर्तन के इस शुद्ध-अखंडित छंद की रचना के लिए ६ मात्रा के ताल दादरा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है। इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा और दादरा-चलती का प्रयोग भी किया जा सकता है मगर ताल दादरा-चलती का प्रयोग गायन में सांस लेने में विक्षेप पैदा कर सकता है। ताल दादरा-चलती के प्रयोग में १ लघुअक्षर के लिए १ मात्रा का और १ गुरुअक्षर के लिए २ या उससे अधिक मात्रा का प्रयोग किया जा सकता है इसलिए षट्कल संधि (६ मात्रा की संधि) लगालगा के लिए ताल दादरा-चलती के एक आवर्तन में ६ मात्रा का ही अवकाश रहेगा जबकि ताल दादरा के प्रयोग में १ लघुअक्षर के लिए १/२ मात्रा का और १ गुरुअक्षर के लिए १ या उससे अधिक मात्रा का प्रयोग किया जा सकता है इसलिए षट्कल संधि (६ मात्रा की संधि) लगालगा के लिए ताल दादरा के एक आवर्तन में १२ मात्रा का अवकाश मिल सकता है। इसी लिए इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा-चलती के मुक़ाबले ताल दादरा का प्रयोग ही ज़ियादा उचित है।

: ताल दादरा-चलती :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

ल ६	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ ०	- ५	ल ६	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ ०	- ५
ल ६	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ ०	- ५	ल ६	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ ०	- ५

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का छठी और पहली मात्रा के बीच में से आरंभ)

-ल ६	गा १ ×	- २	-ल ३	गा ४ ०	- ५	-ल ६	गा १ ×	- २	-ल ३	गा ४ ०	- ५
-ल ६	गा १ ×	- २	-ल ३	गा ४ ०	- ५	-ल ६	गा १ ×	- २	-ल ३	गा ४ ०	- ५

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का आठवीं मात्रा से आरंभ)

ल	गा	-	-	ल	गा	-	-	ल	गा	-	-	ल	गा	-	-
८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७
	×				०				×				०		
ल	गा	-	-	ल	गा	-	-	ल	गा	-	-	ल	गा	-	-
८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७
	×				०				×				०		

जिस लगालगा संधि के पहले लघुअक्षर से नये शब्द की शुरूआत होती हो उस संधि की शुरूआत ताल कहरवा में आठवीं मात्रा के बजाय उसके बादवाले आवर्तन की पहली मात्रा से (सम से) भी की जा सकती है। हरेक लगालगा संधि के पहले लघुअक्षर से नये शब्द की शुरूआत हो और हरेक लगालगा संधि की शुरूआत ताल कहरवा की पहली मात्रा से (सम से) की जाए तो इस छंद का ताल कहरवा में स्वरूप इस प्रकार होगा।

ल	गा	-	ल	गा	-	-	-	ल	गा	-	ल	गा	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			
ल	गा	-	ल	गा	-	-	-	ल	गा	-	ल	गा	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			

इसी तरह से गालगा लगालगा गालगा लगालगा छंद के लिए भी उपरोक्त पद्धति से अलग-अलग ताल का प्रयोग किया जा सकता है। इस छंद के लिए ताल दादरा-चलती के प्रयोग से गायन में सांस लेने के लिए लोप के स्थान पर लोप किये हुए एक लघुअक्षर की एक मात्रा का अवकाश रहता है।

(४)
गागा ललगागा ललगागा ललगागा

षट्कल संधि ललगागा के चार आवर्तन के इस शुद्ध-खंडित छंद की रचना के लिए ८ मात्रा के ताल कहरवा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है। इस छंद की रचना के लिए ७ मात्रा के ताल रूपक का प्रयोग भी उचित है। इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा और दादरा-चलती का प्रयोग भी किया जा सकता है। ताल दादरा-चलती के प्रयोग में १ लघुअक्षर के लिए १ मात्रा का और १ गुरुअक्षर के लिए २ या उससे अधिक मात्रा का प्रयोग किया जा सकता है इसलिए षट्कल संधि (६ मात्रा की संधि) ललगागा के लिए ताल दादरा-चलती के

एक आवर्तन में ६ मात्रा का ही अवकाश रहेगा जबकि ताल दादरा के प्रयोग में १ लघुअक्षर के लिए १/२ मात्रा का और १ गुरुअक्षर के लिए १ या उससे अधिक मात्रा का प्रयोग किया जा सकता है इसलिए षट्कल संधि (६ मात्रा की संधि) ललगागा के लिए ताल दादरा के एक आवर्तन में १२ मात्रा का अवकाश मिल सकता है। इस छंद के लिए ताल दीपचन्दी का प्रयोग भी किया जा सकता है मगर ताल दीपचन्दी के मुक़ाबले ताल रूपक का प्रयोग ही ज़ियादा उचित होगा।

: ताल दादरा-चलती :

(हरेक पंक्ति का पांचवीं मात्रा से आरंभ)

गा	-	गा	-	ल	ल	गा	-	गा	-	ल	ल
५	६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४
		×			०			×			०
गा	-	गा	-	ल	ल	गा	-	गा	-	-	-
५	६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४
		×			०			×			०

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

गा	गा	-	-	-	लल	गा	गा	-	-	-	लल
६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५
	×			०			×			०	
गा	गा	-	-	-	लल	गा	गा	-	-	-	-
६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५
	×			०			×			०	

ताल दादरा के प्रयोग में ललगागा संधि के पहले गुरुअक्षर के लिए एक मात्रा और दूसरे गुरुअक्षर के लिए चार मात्रा यह विषमता बहुत ज़ियादा होने के कारन और दो स्पष्ट लघुअक्षर के प्रयोगवाले छंद में गुरुअक्षर को उच्चारण के अनुसार लघुअक्षर गिनने की छूट बहुत ज़ियादा ली जाने के कारन इस छंद के लिए ताल दादरा के उपरोक्त विवरण को चुस्त रूप से निभाना कठिन हो जाता है। इस छंद की रचना में प्रयुक्त शब्दों के अनुसार ताल दादरा में ललगागा संधि के पहले दोनों लघुअक्षरों को और पहले गुरुअक्षर को उसके मूल स्थान से पहले भी गाया जाता है।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का सातवीं मात्रा से आरंभ)

गा	-	गा	-	-	-	ल	ल	गा	-	गा	-	-	-	ल	ल
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	
गा	-	गा	-	-	-	ल	ल	गा	-	गा	-	-	-	-	-
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	

ललगागा संधि के पहले लघुअक्षर पर किसी शब्द का अंत होता हो तो उसे ताल कहरवा में पांचवीं मात्रा के बजाय तीसरी मात्रा से गाने से गायन में शब्दों की स्पष्टता बढ़ जाएगी और गायन सुन्दर लगेगा। ऐसा करने पर उस ललगागा संधि के दूसरे लघुअक्षर को उसके मूल स्थान छठी मात्रा पर ही गाना होगा।

ललगागा संधि के अंतिम गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होती हो तो उसे ताल कहरवा में कभी-कभी पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय तीसरी मात्रा से भी गाया जा सकता है। ऐसा करने पर उसके बादवाली संधि की शुरूआत उसके मूल स्थान पांचवीं मात्रा से ही होगी।

: ताल रूपक :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

गा	-	गा	-	-	ल	ल	गा	-	गा	-	-	ल	ल
६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५
२		×			१		२		×			१	
गा	-	गा	-	-	ल	ल	गा	-	गा	-	-	-	-
६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५
२		×			१		२		×			१	

ललगागा संधि के पहले लघुअक्षर पर किसी शब्द का अंत होता हो तो उसे ताल रूपक में चौथी मात्रा के बजाय तीसरी मात्रा पर गाने से गायन में शब्दों की स्पष्टता बढ़ जाएगी और गायन सुन्दर लगेगा। ऐसा करने पर उस ललगागा संधि के दूसरे लघुअक्षर को उसके मूल स्थान पांचवीं मात्रा पर ही गाना होगा।

: ताल दीपचन्दी :

(हरेक पंक्ति का तेरहवीं मात्रा से आरंभ)

गा १३	- १४	गा १ ×	- २	- ३	ल ४ २	ल ५	गा ६	- ७	गा ८ ०	- ९	- १०	ल ११ ३	ल १२
गा १३	- १४	गा १ ×	- २	- ३	ल ४ २	ल ५	गा ६	- ७	गा ८ ०	- ९	- १०	- ११ ३	- १२

इस छंद के लिए ताल दीपचन्दी के मुक़ाबले ताल रूपक का प्रयोग ही ज़ियादा उचित है।

(५)
लगागागा लगागागा लगागागा लगागागा

सप्तकल संधि लगागागा के चार आवर्तन के इस शुद्ध-अखंडित छंद की रचना के लिए ८ मात्रा के ताल कहरवा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है। इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा का प्रयोग भी किया जा सकता है। ताल दादरा के प्रयोग में १ लघुअक्षर के लिए १/२ मात्रा का और १ गुरुअक्षर के लिए १ या उससे अधिक मात्रा का प्रयोग किया जा सकता है इसलिए सप्तकल संधि (७ मात्रा की संधि) लगागागा के लिए ताल दादरा के एक आवर्तन में १२ मात्रा का अवकाश मिल सकता है। इस छंद की रचना के लिए ताल रूपक या दीपचन्दी का प्रयोग गायन में सांस लेने में विक्षेप पैदा कर सकता है और ताल दीपचन्दी के मुक़ाबले ताल रूपक का प्रयोग ही ज़ियादा उचित रहेगा।

: ताल रूपक :

(हरेक पंक्ति का तीसरी मात्रा से आरंभ)

ल ३	गा ४ १	- ५	गा ६ २	- ७	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ १	- ५	गा ६ २	- ७	गा १ ×	- २
ल ३	गा ४ १	- ५	गा ६ २	- ७	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ १	- ५	गा ६ २	- ७	गा १ ×	- २

: ताल दीपचन्दी :

(हरेक पंक्ति का दसवीं मात्रा से आरंभ)

ल १०	गा ११ ३	- १२	गा १३	- १४	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ २	- ५	गा ६	- ७	गा ८ ०	- ९
ल १०	गा ११ ३	- १२	गा १३	- १४	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ २	- ५	गा ६	- ७	गा ८ ०	- ९

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का चौथी मात्रा से आरंभ)

ल ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३
ल ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३

लगागागा संधि के अंतिम गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होती हो तो उसे ताल कहरवा में पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय दूसरी मात्रा से गाने से गायन सुन्दर लगेगा और गायन में शब्दों की स्पष्टता बढ़ जाएगी।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का तीसरी और चौथी मात्रा के बीच में से आरंभ)

रचना में प्रयुक्त शब्दों के आधार पर इस छंद के लिए ताल दादरा दो तरह से प्रयुक्त हो सकता है।

-ल -ल ३	गा गा ४ ०	- गा ५	गा - ६	गा गा १ ×	- - २	-ल -ल ३	गा गा ४ ०	- गा ५	गा - ६	गा गा १ ×	- - २
-ल -ल ३	गा गा ४ ०	- गा ५	गा - ६	गा गा १ ×	- - २	-ल -ल ३	गा गा ४ ०	- गा ५	गा - ६	गा गा १ ×	- - २

रचना में प्रयुक्त शब्दों के आधार पर लगागागा संधि के दूसरे गुरुअक्षर को पांचवीं या छठी मात्रा पर गाया जाता है। फिल्म ‘हाउस नं ४४’ की हेमंतकुमार की गायी हुई ग़ज़ल ‘तेरी दुनिया में जीने से तो बेहतर है कि मर जाएं’ जो ताल कहरवा में संगीतबद्ध है उसकी पहली पंक्ति का ताल दादरा में स्वरूप इस प्रकार होगा।

-ते ३	री ४ ०	- ५	दुनि ६	या १ ×	- २	-में ३	जी ४ ०	ने ५	- ६	से १ ×	- २
-तो ३	बेह ४ ०	तर ५	- ६	है १ ×	- २	-कि ३	मर ४ ०	- ५	जा ६	एं १ ×	- २

लगागागा संधि के अंतिम गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होती हो तो उसे कभी-कभी ताल दादरा में पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय पहली और दूसरी मात्रा के बीच में से भी गाया जाता है।

इसी तरह से लगागागा लगागागा लगागा छंद के लिए भी उपरोक्त पद्धति से अलग-अलग ताल का प्रयोग किया जा सकता है। इस छंद के लिए ताल रूपक या दीपचन्दी के प्रयोग से गायन में सांस लेने के लिए लोप के स्थान पर लोप किये हुए एक गुरुअक्षर की दो मात्रा का अवकाश रहता है। इस छंद की रचना की एक पंक्ति के लिए ताल दीपचन्दी का डेढ़ आवर्तन प्रयुक्त होने के कारन बाक़ी के आधे आवर्तन को संगीत के टुकड़ों से भरना पड़ेगा।

(६)
गालगागा गालगागा गालगागा गालगा

सप्तकल संधि गालगागा के चार आवर्तन के इस शुद्ध-खंडित छंद की रचना के लिए ८ मात्रा के ताल कहरवा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है। इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा का प्रयोग भी किया जा सकता है। ताल दादरा के प्रयोग में १ लघुअक्षर के लिए १/२ मात्रा का और १ गुरुअक्षर के लिए १ या उससे अधिक मात्रा का प्रयोग किया जा सकता है इसलिए सप्तकल संधि (७ मात्रा की संधि) गालगागा के लिए ताल दादरा के एक आवर्तन में १२ मात्रा का अवकाश मिल सकता है। इस छंद की रचना के लिए ताल रूपक या दीपचन्दी का प्रयोग भी उचित है।

: ताल रूपक :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ १	- ५	गा ६ २	- ७	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ १	- ५	गा ६ २	- ७
गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ १	- ५	गा ६ २	- ७	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ १	- ५	- ६ २	- ७

: ताल दीपचन्दी :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ २	- ५	गा ६	- ७	गा ८ ०	- ९	ल १०	गा ११ ३	- १२	गा १३	- १४
गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ २	- ५	गा ६	- ७	गा ८ ०	- ९	ल १०	गा ११ ३	- १२	- १३	- १४

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा १ ×	- २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८
गा १ ×	- २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६	- ७	- ८

गालगागा संधि के पहले गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होती हो तो उसे ताल कहरवा में पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय दूसरी मात्रा से गाने से गायन सुन्दर लगेगा और गायन में शब्दों की स्पष्टता बढ़ जाएगी। इस आधार पर इस छंद की रचना की हरेक पंक्ति का आरंभ ताल कहरवा में दूसरी मात्रा से भी किया जा सकता है। हरेक गालगागा संधि का आरंभ ताल कहरवा की दूसरी मात्रा से किया जाए तो इस छंद का ताल कहरवा में स्वरूप इस प्रकार होगा।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का दूसरी मात्रा से आरंभ)

गा	-	ल	गा	-	गा	-	-	गा	-	ल	गा	-	गा	-	-
२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१
			०				×				०				×
गा	-	ल	गा	-	गा	-	-	गा	-	ल	गा	-	-	-	-
२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१
			०				×				०				×

रचना में प्रयुक्त शब्दों के आधार पर इस छंद के लिए ताल कहरवा में उपरोक्त दोनों पद्धति का प्रयोग होता है। गालगागा संधि के पहले गुरुअक्षर पर किसी शब्द का अंत होने पर उसे ताल कहरवा की पहली मात्रा से (सम से) और गालगागा संधि के पहले गुरुअक्षर से किसी शब्द शुरूआत होने पर उसे ताल कहेरवा की दूसरी मात्रा से गाने पर गायन में शब्दों की स्पष्टता बढ़ जाएगी।

गालगागा संधि के अंतिम गुरुअक्षर से नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल कहरवा में सातवीं मात्रा से गाने के बजाय उसके बादवाले आवर्तन की पहली मात्रा से (सम से) गाने पर गायन में शब्दों की स्पष्टता बढ़ जाएगी। ऐसा करने पर उसके बादवाली गालगागा संधि के पहले गुरुअक्षर को (पद्यभारवाले गुरुअक्षर को) ताल कहरवा में पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय सिर्फ़ तीसरी मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाना पड़ेगा जबकि ताल कहरवा में एक गुरुअक्षर के लिए कम से कम दो मात्रा का प्रयोग होना चाहिए।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

रचना में प्रयुक्त शब्दों के आधार पर इस छंद के लिए ताल दादरा दो तरह से प्रयुक्त हो सकता है।

गा	-	-ल	गा	गा	-	गा	-	-ल	गा	गा	-
गा	-	-ल	गा	-	गा	गा	-	-ल	गा	-	गा
१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६
×			०			×			०		
गा	-	-ल	गा	गा	-	गा	-	-ल	गा	-	-
गा	-	-ल	गा	-	गा	गा	-	-ल	गा	-	-
१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६
×			०			×			०		

रचना में प्रयुक्त शब्दों के आधार पर गालगागा संधि के अंतिम गुरुअक्षर को पांचवीं या छठी मात्रा पर गाया जाता है। इस छंद की रचना की पंक्ति का आरंभ कभी-कभी ताल दादरा

में पहली मात्रा से (सम से) करने के बजाय पहली और दूसरी मात्रा के बीच में से भी किया जाता है।

गालगागा संधि के अंतिम गुरुअक्षर से नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल दादरा में पांचवीं मात्रा से या छठी मात्रा पर गाने के बजाय उसके बादवाले आवर्तन की पहली मात्रा पर (सम पर) गाने से गायन में शब्दों की स्पष्टता बढ़ जाएगी। ऐसा करने पर उसके बादवाली गालगागा संधि के पहले गुरुअक्षर को (पद्यभारवाले गुरुअक्षर को) ताल दादरा में पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय दूसरी मात्रा से गाना पड़ेगा।

इसी तरह से गालगागा गालगागा गालगा और गालगागा गालगा गालगागा गालगा छंद के लिए भी उपरोक्त पद्धति से अलग-अलग ताल का प्रयोग किया जा सकता है। गालगागा गालगागा गालगा छंद की रचना की एक पंक्ति के लिए ताल दीपचन्दी का डेढ़ आवर्तन प्रयुक्त होने के कारन बाक़ी के आधे आवर्तन को संगीत के टुकड़ों से भरना पड़ेगा।

(७)
गागालगा गागालगा गागालगा गागालगा

सप्तकल संधि गागालगा के चार आवर्तन के इस शुद्ध-अखंडित छंद की रचना के लिए ८ मात्रा के ताल कहरवा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है। इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा का प्रयोग भी किया जा सकता है। ताल दादरा के प्रयोग में १ लघुअक्षर के लिए १/२ मात्रा का और १ गुरुअक्षर के लिए १ या उससे अधिक मात्रा का प्रयोग किया जा सकता है इसलिए सप्तकल संधि (७ मात्रा की संधि) गागालगा के लिए ताल दादरा के एक आवर्तन में १२ मात्रा का अवकाश मिल सकता है। इस छंद की रचना के लिए ताल रूपक या दीपचन्दी का प्रयोग गायन में सांस लेने में विक्षेप पैदा कर सकता है।

: ताल रूपक :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

गा	-	गा	-	ल	गा	-	गा	-	गा	-	ल	गा	-
६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५
२		×			१		२		×			१	
गा	-	गा	-	ल	गा	-	गा	-	गा	-	ल	गा	-
६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५
२		×			१		२		×			१	

: ताल दीपचन्दी :

(हरेक पंक्ति का तेरहवीं मात्रा से आरंभ)

गा १३	- १४	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ २	- ५	गा ६	- ७	गा ८ ०	- ९	ल १०	गा ११ ३	- १२
गा १३	- १४	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ २	- ५	गा ६	- ७	गा ८ ०	- ९	ल १०	गा ११ ३	- १२

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का सातवीं मात्रा से आरंभ)

गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६
गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६

गागालगा संधि के दूसरे गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होती हो तो उसे ताल कहरवा में पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय दूसरी मात्रा से गाने से गायन सुन्दर लगेगा और गायन में शब्दों की स्पष्टता बढ़ जाएगी।

गागालगा संधि के पहले गुरुअक्षर से नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल कहरवा में सातवीं मात्रा से गाने के बजाय उसके बादवाले आवर्तन की पहली मात्रा से (सम से) गाने पर गायन में शब्दों की स्पष्टता बढ़ जाएगी। ऐसा करने पर गागालगा संधि के दूसरे गुरुअक्षर को (पद्यभारवाले गुरुअक्षर को) ताल कहरवा में पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय तीसरी मात्रा पर गाना पड़ेगा। इस आधार पर इस छंद की रचना की हरेक पंक्ति का आरंभ ताल कहेरवा में पहली मात्रा से भी किया जा सकता है। हरेक गागालगा संधि का आरंभ ताल कहरवा की पहली मात्रा से किया जाए तो इस छंद का ताल कहरवा में स्वरूप इस प्रकार होगा।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा	-	<u>गा</u>	ल	गा	-	-	-	गा	-	<u>गा</u>	ल	गा	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			
गा	-	<u>गा</u>	ल	गा	-	-	-	गा	-	<u>गा</u>	ल	गा	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			

इस छंद के लिए ताल कहरवा के इस प्रकार के प्रयोग में गा<u>गा</u>लगा संधि के दूसरे गुरुअक्षर को (पद्‌यभारवाले गुरुअक्षर को) सिर्फ़ तीसरी मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाना पड़ेगा जबकि ताल कहरवा में एक गुरुअक्षर के लिए कम से कम दो मात्रा का प्रयोग होना चाहिए। वैसे रचना में प्रयुक्त शब्दों के अनुसार ताल कहरवा के उपरोक्त दोनों प्रकार का मिश्र प्रयोग करना चाहिए।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

रचना में प्रयुक्त शब्दों के आधार पर इस छंद के लिए ताल दादरा दो तरह से प्रयुक्त हो सकता है।

गा	<u>गा</u>	-	-ल	गा	-	गा	<u>गा</u>	-	-ल	गा	-
गा	<u>गा</u>	-	-ल	गा	गा	-	<u>गा</u>	-	-ल	गा	गा
६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५
	×			०			×			०	
गा	<u>गा</u>	-	-ल	गा	-	गा	<u>गा</u>	-	-ल	गा	-
-	<u>गा</u>	-	-ल	गा	गा	-	<u>गा</u>	-	-ल	गा	-
६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५
	×			०			×			०	

गा<u>गा</u>लगा संधि के दूसरे गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होती हो तो उसे कभी-कभी ताल दादरा में पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय पहली और दूसरी मात्रा के बीच में से भी गाया जाता है।

गा<u>गा</u>लगा संधि के पहले गुरुअक्षर से नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल दादरा में छठी मात्रा पर या पांचवीं मात्रा से गाने के बजाय उसके बादवाले आवर्तन की पहली मात्रा पर (सम पर) गाने से गायन में शब्दों की स्पष्टता बढ़ जाएगी। ऐसा करने पर गा<u>गा</u>लगा संधि के दूसरे गुरुअक्षर को (पद्‌यभारवाले गुरुअक्षर को) ताल दादरा में पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय दूसरी मात्रा से गाना पड़ेगा। इस आधार पर इस छंद की रचना की हरेक

पंक्ति का आरंभ ताल दादरा में पहली मात्रा से भी किया जा सकता है। हरेक गागालगा संधि का आरंभ ताल दादरा की पहली मात्रा से किया जाए तो इस छंद का ताल दादरा में स्वरूप इस प्रकार होगा।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा १ ×	गा २	-ल ३	गा ४ ०	- ५	- ६	गा १ ×	गा २	-ल ३	गा ४ ०	- ५	- ६
गा १ ×	गा २	-ल ३	गा ४ ०	- ५	- ६	गा १ ×	गा २	-ल ३	गा ४ ०	- ५	- ६

वैसे रचना में प्रयुक्त शब्दों के अनुसार ताल दादरा के उपरोक्त दोनों प्रकार का मिश्र प्रयोग करना चाहिए।

(८)
ललगालगा ललगालगा ललगालगा ललगालगा

सप्तकल संधि ललगालगा के चार आवर्तन के इस शुद्ध-अखंडित छंद की रचना के लिए ८ मात्रा के ताल कहरवा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है। इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा का प्रयोग भी किया जा सकता है। ताल दादरा के प्रयोग में १ लघुअक्षर के लिए १/२ मात्रा का और १ गुरुअक्षर के लिए १ या उससे अधिक मात्रा का प्रयोग किया जा सकता है इसलिए सप्तकल संधि (७ मात्रा की संधि) ललगालगा के लिए ताल दादरा के एक आवर्तन में १२ मात्रा का अवकाश मिल सकता है। इस छंद की रचना के लिए ताल रूपक या दीपचन्दी का प्रयोग गायन में सांस लेने में विक्षेप पैदा कर सकता है।

: ताल रूपक :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

ल ६ २	ल ७	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ १	- ५	ल ६ २	ल ७	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ १	- ५
ल ६ २	ल ७	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ १	- ५	ल ६ २	ल ७	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ १	- ५

: ताल दीपचन्दी :

(हरेक पंक्ति का तेरहवीं मात्रा से आरंभ)

ल	ल	गा	-	ल	गा	-	ल	ल	गा	-	ल	गा	-
१३	१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
		×			२				०			३	
ल	ल	गा	-	ल	गा	-	ल	ल	गा	-	ल	गा	-
१३	१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
		×			२				०			३	

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का सातवीं मात्रा से आरंभ)

ल	ल	गा	-	-	ल	गा	-	ल	ल	गा	-	-	ल	गा	-
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	
ल	ल	गा	-	-	ल	गा	-	ल	ल	गा	-	-	ल	गा	-
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	

ललगालगा संधि के पहले गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होती हो तो उसे ताल कहरवा में पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय दूसरी मात्रा से गाने से गायन सुन्दर लगेगा और गायन में शब्दों की स्पष्टता बढ़ जाएगी।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

लल	गा	-	-ल	गा	-	लल	गा	-	-ल	गा	-
६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५
	×			०			×			०	
लल	गा	-	-ल	गा	-	लल	गा	-	-ल	गा	-
६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५
	×			०			×			०	

ललगालगा संधि के पहले गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होती हो तो उसे कभी-कभी ताल दादरा में पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय पहली और दूसरी मात्रा के बीच में से भी गाया जाता है।

(९)
लगालगागा लगालगागा लगालगागा लगालगागा

अष्टकल संधि लगालगागा के चार आवर्तन के इस शुद्ध-अखंडित छंद की रचना के लिए सिर्फ़ ८ मात्रा का ताल कहरवा ही उचित है।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

ल १ ×	गा २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	ल १ ×	गा २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८
ल १ ×	गा २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	ल १ ×	गा २	- ३	ल ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८

लगालगागा संधि के पहले लघुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल कहरवा में कभी-कभी पहली मात्रा (सम) के बजाय दूसरी मात्रा पर भी गाया जा सकता है। ऐसा करने पर लगालगागा संधि के पहले गुरुअक्षर को दूसरी मात्रा से गाने के बजाय सिर्फ़ तीसरी मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाना होगा। इस आधार पर इस छंद की रचना की पंक्ति का आरंभ ताल कहरवा में दूसरी मात्रा से भी किया जा सकता है।

(१०)
गागागागा गागागागा गागागागा गागागागा

अष्टकल संधि गागागागा के चार आवर्तन के इस शुद्ध-अखंडित छंद की रचना के लिए ८ मात्रा का ताल कहरवा सब से ज़ियादा उचित है। इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा का भी प्रयोग किया जा सकता है। ताल दादरा के प्रयोग में १ लघुअक्षर के लिए १/२ मात्रा का और १ गुरुअक्षर के लिए १ या उससे अधिक मात्रा का प्रयोग किया जा सकता है इसलिए अष्टकल संधि (८ मात्रा की संधि) गागागागा के लिए ताल दादरा के एक आवर्तन में १२ मात्रा का अवकाश मिल सकता है।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का सातवीं मात्रा से आरंभ)

गा ७	- ८	गा १ ×	- २	गा ३	- ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	गा ३	- ४	गा ५ ०	- ६
गा ७	- ८	गा १ ×	- २	गा ३	- ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	गा ३	- ४	गा ५ ०	- ६

गागागागा संधि के दूसरे गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल कहरवा में कभी-कभी पहली मात्रा (सम) के बजाय दूसरी मात्रा से भी गाया जा सकता है। ऐसा करने पर गागागागा संधि के तीसरे गुरुअक्षर को तीसरी मात्रा से गाने के बजाय सिर्फ़ चौथी मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाना होगा।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

रचना में प्रयुक्त शब्दों के आधार पर इस छंद के लिए ताल दादरा दो तरह से प्रयुक्त हो सकता है मगर इसके सिवा कि एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग हुआ हो।

गा गा ६	गा गा १ ×	- गा २	गा - ३	गा गा ४ ०	- गा ५	गा - ६	गा गा १ ×	- गा २	गा - ३	गा गा ४ ०	- गा ५
गा - ६	गा गा १ ×	- गा २	गा - ३	गा गा ४ ०	- गा ५	गा - ६	गा गा १ ×	- गा २	गा - ३	गा गा ४ ०	- - ५

अष्टकल संधि के प्रयोगवाले इस छंद के लिए ज़ियादातर ताल कहरवा का प्रयोग ही दिखाई देता है और वही ज़ियादा उचित है।

(११)

गागागागा गागागागा गागागागा गागागा

अष्टकल संधि गागागागा के चार आवर्तन के इस शुद्ध-खंडित छंद की रचना के लिए ८ मात्रा का ताल कहरवा सब से ज़ियादा उचित है। इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा का भी प्रयोग किया जा सकता है। ताल दादरा के प्रयोग में १ लघुअक्षर के लिए १/२ मात्रा का और १ गुरुअक्षर के लिए १ या उससे अधिक मात्रा का प्रयोग किया जा सकता है इसलिए अष्टकल संधि (८ मात्रा की संधि) गागागागा के लिए ताल दादरा के एक आवर्तन में १२ मात्रा का अवकाश मिल सकता है।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	गा	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			
गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			

गागागागा संधि के पहले गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल कहरवा में पहली मात्रा (सम) के बजाय दूसरी मात्रा से भी गाया जा सकता है। ऐसा करने पर गागागागा संधि के दूसरे गुरुअक्षर को तीसरी मात्रा से गाने के बजाय सिर्फ़ चौथी मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाना होगा। इस आधार पर इस छंद की रचना की हरेक पंक्ति का आरंभ ताल कहरवा में दूसरी मात्रा से भी किया जा सकता है।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

रचना में प्रयुक्त शब्दों के आधार पर इस छंद के लिए ताल दादरा दो तरह से प्रयुक्त हो सकता है मगर इसके सिवा कि एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग हुआ हो।

गा	गा	-	गा	गा	-	गा	गा	-	गा	गा	-
गा	-	गा	गा	-	गा	गा	-	गा	गा	-	गा
१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६
×			०			×			०		
गा	गा	-	गा	गा	-	गा	गा	-	गा	-	-
गा	-	गा	गा	-	गा	गा	-	गा	गा	-	-
१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६
×			०			×			०		

अष्टकल संधि के प्रयोगवाले इस छंद के लिए ज़ियादातर ताल कहरवा का प्रयोग ही दिखाई देता है और वही ज़ियादा उचित है।

इसी तरह से गागागागा गागागागा और गागागागा गागागा छंद के लिए भी उपरोक्त पद्धति से ताल कहरवा और दादरा का प्रयोग किया जा सकता है।

(१२)
गागागागा गागा गागागागा गागा

अष्टकल संधि गागागागा के आवर्तन के इस शुद्ध-खंडित छंद की रचना के लिए ८ मात्रा का ताल कहरवा सब से ज़ियादा उचित है। इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा का भी प्रयोग किया जा सकता है।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का सातवीं मात्रा से आरंभ)

गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	-	-	-	-
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	
गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	गा	-	-	-	-	-
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	

गागागागा संधि के दूसरे गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल कहरवा में कभी-कभी पहली मात्रा (सम) के बजाय दूसरी मात्रा से भी गाया जा सकता है। ऐसा करने पर गागागागा संधि के तीसरे गुरुअक्षर को तीसरी मात्रा से गाने के बजाय सिर्फ़ चौथी मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाना होगा।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

रचना में प्रयुक्त शब्दों के आधार पर इस छंद के लिए ताल दादरा दो तरह से प्रयुक्त हो सकता है मगर इसके सिवा कि एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग हुआ हो।

गा	गा	-	गा	गा	-	गा	गा	-	-	-	-
गा	गा	गा	-	गा	गा	-	गा	-	-	-	-
६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५
	×			०			×			०	
गा	गा	-	गा	गा	-	गा	गा	-	-	-	-
गा	गा	गा	-	गा	गा	-	गा	-	-	-	-
६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५
	×			०			×			०	

अष्टकल संधि के प्रयोगवाले इस छंद के लिए सिर्फ़ ताल कहरवा का प्रयोग ही दिखाई दिया है और वही ज़ियादा उचित है।

गागागागा गागा गागागागा गागा छंद ज़ियादातर गागाललगा गागा गागाललगा गागा स्वरूप से ही प्रयुक्त होता दिखाई दिया है और इस छंद की रचना के लिए सिर्फ़ ताल कहरवा का प्रयोग ही दिखाई दिया है। इस छंद का ताल कहरवा में विवरण इस प्रकार है।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का सातवीं मात्रा से आरंभ)

गा	-	<u>गा</u>	-	ल	ल	गा	-	गा	-	<u>गा</u>	-	-	-	-	-
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	
गा	-	<u>गा</u>	-	ल	ल	गा	-	गा	-	<u>गा</u>	-	-	-	-	-
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	

(१३)
गा<u>गा</u>लगा ल<u>गा</u>गा गा<u>गा</u>लगा ल<u>गा</u>गा

कुल २४ मात्रा के इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा, दादरा और दादरा-चलती का प्रयोग किया जा सकता है कि जिसमें ताल कहरवा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है जबकि इस छंद में पद्यभार हर ६ मात्रा के अंतर पर होने के कारन ताल दादरा-चलती का प्रयोग गायन में सांस लेने में विक्षेप पैदा कर सकता है।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का सातवीं मात्रा से आरंभ)

गा	-	<u>गा</u>	-	-	-	ल	गा	-	ल	<u>गा</u>	-	गा	-	-	-
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	
गा	-	<u>गा</u>	-	-	-	ल	गा	-	ल	<u>गा</u>	-	गा	-	-	-
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	

इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा का प्रयोग दूसरे प्रकार से भी किया जा सकता है जो इस प्रकार है।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा	-	गा	-	ल	गा	-	ल	गा	-	गा	-	-	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			
गा	-	गा	-	ल	गा	-	ल	गा	-	गा	-	-	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			

इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा का प्रयोग उपरोक्त दोनों प्रकार के मिश्र रूप से भी किया जा सकता है।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

गा	गा	-	-ल	गा	-	-ल	गा	गा	-	-	-
६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५
	×			०			×			०	
गा	गा	-	-ल	गा	-	-ल	गा	गा	-	-	-
६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५
	×			०			×			०	

इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा का प्रयोग दूसरे प्रकार से भी किया जा सकता है जो इस प्रकार है।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा	गा	-ल	गा	-	-ल	गा	गा	-	-	-	-
१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६
×			०			×			०		
गा	गा	-ल	गा	-	-ल	गा	गा	-	-	-	-
१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६
×			०			×			०		

इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा का प्रयोग उपरोक्त दोनों प्रकार के मिश्र रूप से भी किया जा सकता है।

: ताल दादरा-चलती :

(हरेक पंक्ति का पांचवीं मात्रा से आरंभ)

गा	-	गा	-	ल	गा	-	ल	गा	-	गा	-
५	६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४
		×			०			×			०
गा	-	गा	-	ल	गा	-	ल	गा	-	गा	-
५	६	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४
		×			०			×			०

(१४)
ललगालगा लगागा ललगालगा लगागा

कुल २४ मात्रा के इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा, दादरा और दादरा-चलती का प्रयोग किया जा सकता है कि जिसमें ताल कहरवा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है जबकि इस छंद में पद्‌यभार हर ६ मात्रा के अंतर पर होने के कारन ताल दादरा-चलती का प्रयोग गायन में सांस लेने में विक्षेप पैदा कर सकता है।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का सातवीं मात्रा से आरंभ)

ल	ल	गा	-	-	-	ल	गा	-	ल	गा	-	गा	-	-	-
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	
ल	ल	गा	-	-	-	ल	गा	-	ल	गा	-	गा	-	-	-
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

लल ६	गा १ ×	- २	-ल ३	गा ४ ०	- ५	-ल ६	गा १ ×	गा २	- ३	- ४ ०	- ५
लल ६	गा १ ×	- २	-ल ३	गा ४ ०	- ५	-ल ६	गा १ ×	गा २	- ३	- ४ ०	- ५

: ताल दादरा-चलती :

(हरेक पंक्ति का पांचवीं मात्रा से आरंभ)

ल ५	ल ६	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ ०	- ५	ल ६	गा १ ×	- २	गा ३	- ४ ०
ल ५	ल ६	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ ०	- ५	ल ६	गा १ ×	- २	गा ३	- ४ ०

(१५)
गाललगा लगालगा गाललगा लगालगा

कुल २४ मात्रा के इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा और दादरा का प्रयोग किया जा सकता है। इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा के मुक़ाबले ताल कहरवा का प्रयोग ही ज़ियादा उचित है, फिर भी इस छंद की रचना के लिए ज़ियादातर ताल दादरा का ही प्रयोग दिखाई दिया है।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा	-	ल	ल	गा	-	-	ल	गा	-	-	ल	गा	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			
गा	-	ल	ल	गा	-	-	ल	गा	-	-	ल	गा	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा	-	लल	गा	-	-ल	गा	-	-ल	गा	-	-
१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६
×			०			×			०		
गा	-	लल	गा	-	-ल	गा	-	-ल	गा	-	-
१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६
×			०			×			०		

दो स्पष्ट लघुअक्षर के प्रयोगवाले छंद में गुरुअक्षर को उच्चारण के अनुसार लघुअक्षर गिनने की छूट बहुत ज़ियादा ली जाने के कारन इस छंद के लिए ताल दादरा के उपरोक्त विवरण को चुस्त रूप से निभाना कठिन हो जाता है।

(१६)

गागा लगालगा ललगागा लगालगा

कुल २२ मात्रा के इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा, दादरा, दादरा-चलती, रूपक और दीपचन्दी का प्रयोग किया जा सकता है कि जिसमें ताल कहरवा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है और ताल दीपचन्दी के मुक़ाबले ताल रूपक का प्रयोग ज़ियादा उचित होगा।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का सातवीं मात्रा से आरंभ)

गा	-	गा	-	-	-	ल	गा	-	ल	गा	-	-	-	ल	ल
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	
गा	-	गा	-	-	-	ल	गा	-	ल	गा	-	-	-	-	-
७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६
		×				०				×				०	

इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा का प्रयोग दूसरे प्रकार से भी किया जा सकता है जो इस प्रकार है।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा	-	गा	-	ल	गा	-	ल	गा	-	-	-	ल	ल	गा	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			
गा	-	-	-	ल	गा	-	ल	गा	-	-	-	-	-	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
×				०				×				०			

इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा का प्रयोग उपरोक्त दोनों प्रकार के मिश्र रूप से भी किया जा सकता है।

दूसरी या तीसरी संधि (लगालगा या ललगागा) के अंतिम गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल कहरवा में कभी-कभी पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय तीसरी मात्रा से भी गाया जा सकता है। ऐसा करने पर उसके बादवाली संधि को उसके मूल स्थान पांचवीं मात्रा से ही गाना होगा।

तीसरी संधि ललगागा के पहले गुरुअक्षर से नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल कहरवा में कभी-कभी सातवीं मात्रा से गाने के बजाय उसके बादवाले आवर्तन की पहली मात्रा से (सम से) भी गाया जा सकता है। ऐसा करने पर उसके बादवाले गुरुअक्षर को (पद्यभारवाले गुरुअक्षर को) पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय ताल कहरवा की तीसरी मात्रा से गा कर उसके बादवाली संधि को उसके मूल स्थान पांचवीं मात्रा से ही गाना होगा।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

गा ६	गा १ ×	- २	-ल ३	गा ४ ०	- ५	-ल ६	गा १ ×	- २	- ३	- ४ ०	लल ५
गा ६	गा १ ×	- २	-ल ३	गा ४ ०	- ५	-ल ६	गा १ ×	- २	- ३	- ४ ०	- ५

इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा का प्रयोग दूसरे प्रकार से भी किया जा सकता है जो इस प्रकार है।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा १ ×	गा २	-ल ३	गा ४ ०	- ५	-ल ६	गा १ ×	- २	- ३	- ४ ०	लल ५	गा ६
गा १ ×	- २	-ल ३	गा ४ ०	- ५	-ल ६	गा १ ×	- २	- ३	- ४ ०	- ५	- ६

इस छंद की रचना के लिए ताल दादरा का प्रयोग उपरोक्त दोनों प्रकार के मिश्र रूप से भी किया जा सकता है।

तीसरी संधि ललगागा के पहले गुरुअक्षर से नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल दादरा में कभी-कभी छठी मात्रा पर गाने के बजाय उसके बादवाले आवर्तन की पहली मात्रा पर (सम पर) भी गाया जा सकता है। ऐसा करने पर उसके बादवाले गुरुअक्षर को (पद्यभारवाले गुरुअक्षर को) पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय ताल दादरा की दूसरी मात्रा से गा कर उसके बादवाली संधि को उसके मूल स्थान तीसरी और चौथी मात्रा के बीच में से ही गाना होगा।

: ताल दादरा-चलती :

(हरेक पंक्ति का पांचवीं मात्रा से आरंभ)

गा ५	- ६	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ ०	- ५	ल ६	गा १ ×	- २	ल ३	ल ४ ०
गा ५	- ६	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ ०	- ५	ल ६	गा १ ×	- २	- ३	- ४ ०

: ताल रूपक :

(हरेक पंक्ति का छठी मात्रा से आरंभ)

गा ६ २	- ७	गा १ ×	- २	- ३	ल ४ १	गा ५	- ६ २	ल ७	गा १ ×	- २	- ३	ल ४ १	ल ५
गा ६ २	- ७	गा १ ×	- २	- ३	ल ४ १	गा ५	- ६ २	ल ७	गा १ ×	- २	- ३	- ४ १	- ५

: ताल दीपचन्दी :

(हरेक पंक्ति का तेरहवीं मात्रा से आरंभ)

गा १३	- १४	गा १ ×	- २	- ३	ल ४ २	गा ५	- ६	ल ७	गा ८ ०	- ९	- १०	ल ११ ३	ल १२
गा १३	- १४	गा १ ×	- २	- ३	ल ४ २	गा ५	- ६	ल ७	गा ८ ०	- ९	- १०	- ११ ३	- १२

(१७)
लगालगा ललगागा लगालगा गागा

कुल २२ मात्रा के इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा, दादरा, दादरा-चलती, रूपक और दीपचन्दी का प्रयोग किया जा सकता है कि जिसमें ताल कहरवा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है और ताल दीपचन्दी के मुक़ाबले ताल रूपक का प्रयोग ज़ियादा उचित होगा।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का पांचवीं मात्रा से आरंभ)

ल	गा	-	ल	गा	-	-	-	ल	ल	गा	-	गा	-	-	-
५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४
०				×				०				×			
ल	गा	-	ल	गा	-	-	-	गा	-	गा	-	-	-	-	-
५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४
०				×				०				×			

दूसरी या तीसरी संधि (ललगागा या लगालगा) के अंतिम गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल कहरवा में कभी-कभी पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय तीसरी मात्रा से भी गाया जा सकता है। ऐसा करने पर उसके बादवाली संधि को उसके मूल स्थान पांचवीं मात्रा से ही गाना होगा।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का तीसरी और चौथी मात्रा के बीच में से आरंभ)

-ल	गा	-	-ल	गा	-	-	-	लल	गा	गा	-
३	४	५	६	१	२	३	४	५	६	१	२
	०			×			०			×	
-ल	गा	-	-ल	गा	-	-	गा	गा	-	-	-
३	४	५	६	१	२	३	४	५	६	१	२
	०			×			०			×	

: ताल दादरा-चलती :

(हरेक पंक्ति का तीसरी मात्रा से आरंभ)

ल	गा	-	ल	गा	-	ल	ल	गा	-	गा	-
३	४	५	६	१	२	३	४	५	६	१	२
	०			×			०			×	
ल	गा	-	ल	गा	-	गा	-	गा	-	-	-
३	४	५	६	१	२	३	४	५	६	१	२
	०			×			०			×	

: ताल रूपक :

(हरेक पंक्ति का चौथी मात्रा से आरंभ)

ल ४ १	गा ५	- ६ २	ल ७	गा १ ×	- २	- ३	ल ४ १	ल ५	गा ६ २	- ७	गा १ ×	- २	- ३
ल ४ १	गा ५	- ६ २	ल ७	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ १	- ५	गा ६ २	- ७	- १ ×	- २	- ३

: ताल दीपचन्दी :

(हरेक पंक्ति का ग्यारहवीं मात्रा से आरंभ)

ल ११ ३	गा १२	- १३	ल १४	गा १ ×	- २	- ३	ल ४ २	ल ५	गा ६	- ७	गा ८ ०	- ९	- १०
ल ११ ३	गा १२	- १३	ल १४	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ २	- ५	गा ६	- ७	- ८ ०	- ९	- १०

(१८)
गालगागा ललगागा ललगागा गागा

कुल २३ मात्रा के इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा, दादरा, दादरा-चलती, रूपक और दीपचन्दी का प्रयोग किया जा सकता है कि जिसमें ताल कहरवा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है और ताल दीपचन्दी के मुक़ाबले ताल रूपक का प्रयोग ज़ियादा उचित होगा।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का चौथी मात्रा से आरंभ)

गा ४	- ५ ०	ल ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३	- ४	ल ५ ०	ल ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३
- ४	ल ५ ०	ल ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३	- ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	- १ ×	- २	- ३

इस छंद की रचना की पंक्ति का आरंभ ताल कहरवा में चौथी मात्रा के बजाय पांचवीं मात्रा से भी किया जा सकता है। ऐसा करने पर पहली संधि के पहले गुरुअक्षर को सिर्फ़ पांचवीं मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाना पड़ेगा। दूसरी या तीसरी संधि ललगागा के अंतिम गुरुअक्षर से (सम से) नये शब्द की शुरूआत होने पर उसे ताल कहरवा में कभी-कभी पहली मात्रा से (सम से) गाने के बजाय तीसरी मात्रा से भी गाया जा सकता है। ऐसा करने पर उसके बादवाली संधि को उसके मूल स्थान पांचवीं मात्रा से ही गाना होगा।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का चौथी मात्रा से आरंभ)

गा ४ ०	-ल ५	गा ६	गा १ ×	- २	- ३	- ४ ०	लल ५	गा ६	गा १ ×	- २	- ३
- ४ ०	लल ५	गा ६	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ ०	गा ५	- ६	- १ ×	- २	- ३

इस छंद की रचना की पंक्ति का आरंभ ताल दादरा में चौथी और पांचवीं मात्रा के बीच में से भी किया जा सकता है।

: ताल दादरा-चलती :

(हरेक पंक्ति का दूसरी मात्रा से आरंभ)

गा २	- ३	ल ४ ०	गा ५	- ६	गा १ ×	- २	ल ३	ल ४ ०	गा ५	- ६	गा १ ×
- २	ल ३	ल ४ ०	गा ५	- ६	गा १ ×	- २	गा ३	- ४ ०	गा ५	- ६	- १ ×

ज़ियादातर इस छंद की रचना की हरेक पंक्ति का आरंभ ताल दादरा-चलती में दूसरी मात्रा के बजाय तीसरी मात्रा से करके पहली संधि के पहले गुरुअक्षर को सिर्फ़ तीसरी मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाया जाता है। ऐसा करने से गायन में सांस लेने के लिए दो मात्रा का अवकाश रहता है।

: ताल रूपक :

(हरेक पंक्ति का तीसरी मात्रा से आरंभ)

गा	-	ल	गा	-	गा	-	-	ल	ल	गा	-	गा	-
३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	२
	१		२		×			१		२		×	
-	ल	ल	गा	-	गा	-	-	गा	-	गा	-	-	-
३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	२
	१		२		×			१		२		×	

इस छंद की रचना की हरेक पंक्ति का आरंभ ताल रूपक में तीसरी मात्रा के बजाय चौथी मात्रा से करके पहली संधि के पहले गुरुअक्षर को सिर्फ़ चौथी मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाने से गायन में ज़ियादा सुविधा रहेगी।

: ताल दीपचन्दी :

(हरेक पंक्ति का दसवीं मात्रा से आरंभ)

गा	-	ल	गा	-	गा	-	-	ल	ल	गा	-	गा	-
१०	११	१२	१३	१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९
	३				×			२				०	
-	ल	ल	गा	-	गा	-	-	गा	-	गा	-	-	-
१०	११	१२	१३	१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९
	३				×			२				०	

इस छंद की रचना की हरेक पंक्ति का आरंभ ताल दीपचन्दी में दसवीं मात्रा के बजाय ग्यारहवीं मात्रा से करके पहली संधि के पहले गुरुअक्षर को सिर्फ़ ग्यारहवीं मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाने से गायन में ज़ियादा सुविधा रहेगी।

इसी तरह से गालगागा ललगागा गागा छंद के लिए भी उपरोक्त पद्धति से अलग-अलग ताल का प्रयोग किया जा सकता है। इस छंद की रचना की एक पंक्ति के लिए ताल दीपचन्दी का डेढ़ आवर्तन प्रयुक्त होने के कारन बाक़ी के आधे आवर्तन को संगीत के टुकड़ों से भरना पड़ेगा।

(१९)
गालगागा लगालगा गागा

कुल १७ मात्रा के इस छंद की रचना के लिए ताल कहरवा, दादरा, दादरा-चलती, रूपक और दीपचन्दी का प्रयोग किया जा सकता है कि जिसमें ताल कहरवा का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है और ताल दीपचन्दी के मुक़ाबले ताल रूपक का प्रयोग ज़ियादा उचित होगा।

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का चौथी मात्रा से आरंभ)

गा ४	- ५ ०	ल ६	गा ७	- ८	गा १ ×	- २	- ३	- ४	ल ५ ०	गा ६	- ७	ल ८	गा १ ×	- २	- ३
- ४	गा ५ ०	- ६	गा ७	- ८	- १ ×	- २	- ३								

इस छंद की रचना की पंक्ति का आरंभ ताल कहरवा में चौथी मात्रा के बजाय पांचवीं मात्रा से भी किया जा सकता है। ऐसा करने पर पहली संधि के पहले गुरुअक्षर को सिर्फ़ पांचवीं मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाना पड़ेगा।

: ताल दादरा :

(हरेक पंक्ति का चौथी मात्रा से आरंभ)

गा ४ ०	-ल ५	गा ६	गा १ ×	- २	-ल ३	गा ४ ०	- ५	-ल ६	गा १ ×	- २	- ३
गा ४ ०	गा ५	- ६	- १ ×	- २	- ३						

इस छंद की रचना की पंक्ति का आरंभ ताल दादरा में चौथी और पांचवीं मात्रा के बीच में से भी किया जा सकता है।

: ताल दादरा-चलती :

(हरेक पंक्ति का दूसरी मात्रा से आरंभ)

गा २	- ३	ल ४ ०	गा ५	- ६	गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ ०	- ५	ल ६	गा १ ×
- २	गा ३	- ४ ०	गा ५	- ६	- १ ×						

ज़ियादातर इस छंद की रचना की हरेक पंक्ति का आरंभ ताल दादरा-चलती में दूसरी मात्रा के बजाय तीसरी मात्रा से करके पहली संधि के पहले गुरुअक्षर को सिर्फ़ तीसरी मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाया जाता है। ऐसा करने से गायन में सांस लेने के लिए दो मात्रा का अवकाश रहता है।

: ताल रूपक :

(हरेक पंक्ति का तीसरी मात्रा से आरंभ)

गा ३	- ४ १	ल ५	गा ६ २	- ७	गा १ ×	- २	- ३	ल ४ १	गा ५	- ६ २	ल ७	गा १ ×	- २
- ३	गा ४ १	- ५	गा ६ २	- ७	- १ ×	- २							

इस छंद की रचना की हरेक पंक्ति का आरंभ ताल रूपक में तीसरी मात्रा के बजाय चौथी मात्रा से करके पहली संधि के पहले गुरुअक्षर को सिर्फ़ चौथी मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाने से गायन में ज़ियादा सुविधा रहेगी।

: ताल दीपचन्दी :

(हरेक पंक्ति का दसवीं मात्रा से आरंभ)

गा १०	- ११ ३	ल १२	गा १३	- १४	गा १ ×	- २	- ३	ल ४ २	गा ५	- ६	ल ७	गा ८ ०	- ९
- १०	गा ११ ३	- १२	गा १३	- १४	- १ ×	- २	- ३	- ४ २	- ५	- ६	- ७	- ८ ०	- ९

इस छंद की रचना की हरेक पंक्ति का आरंभ ताल दीपचन्दी में दसवीं मात्रा के बजाय ग्यारहवीं मात्रा से करके पहली संधि के पहले गुरुअक्षर को सिर्फ़ ग्यारहवीं मात्रा पर (एक ही मात्रा में) गाने से गायन में ज़ियादा सुविधा रहेगी। इस छंद की रचना की एक पंक्ति के लिए ताल दीपचन्दी का डेढ़ आवर्तन प्रयुक्त होने के कारन बाक़ी के आधे आवर्तन को संगीत के टुकड़ों से भरना पड़ेगा।

(२०)
गालगा लगागागा गालगा लगागागा

इस छंद का वर्णन मैंने पहले बताए हुए ३० छंदों में किया नहीं है। अनुक्रम से लगालगा और लगागागा संधि के मिश्र स्वरूप (लगालगा लगागागा) की पहली संधि के पहले लघुअक्षर का लोप करने से प्राप्त स्वरूप (गालगा लगागागा) के दो आवर्तनों के प्रयोग से इस छंद की रचना होती है। इस छंद की कुल मात्रा २४ होती है तथा पद्‌यभार १, ११, १३ और २३ वीं मात्रा पर है। इस छंद में संधि के मिश्रण के कारन पद्‌यभार के अंतर में विषमता बहुत बड़ी होने के बावजूद यह छंद इसकी संगीतात्मकता की वजह से प्रचलित है। इस छंद के लिए ताल दादरा-चलती का प्रयोग सब से ज़ियादा उचित है। इस छंद के लिए ताल कहरवा का प्रयोग भी किया जा सकता है।

: ताल दादरा-चलती :

(हरेक पंक्ति का पहली मात्रा से आरंभ)

गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ ०	- ५	ल ६	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ ०	- ५	- ६
गा १ ×	- २	- ३	- ४ ०	- ५	- ६	- १ ×	- २	- ३	- ४ ०	- ५	- ६
गा १ ×	- २	ल ३	गा ४ ०	- ५	ल ६	गा १ ×	- २	- ३	गा ४ ०	- ५	- ६
गा १ ×	- २	- ३	- ४ ०	- ५	- ६	- १ ×	- २	- ३	- ४ ०	- ५	- ६

: ताल कहरवा :

(हरेक पंक्ति का तीसरी मात्रा से आरंभ)

गा	-	ल	गा	-	ल	गा	-	गा	-	गा	-	-	-	-	-
३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२
		०				×				०				×	
गा	-	ल	गा	-	ल	गा	-	गा	-	गा	-	-	-	-	-
३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८	१	२
		०				×				०				×	

सूर और ताल में भाव को प्रकट करना ही संगीत है इसलिए मैं गायन में सूर और ताल दोनों के चुस्त बंधन का स्वीकार करता हूं। सूर की चुस्तता के साथ-साथ ताल की चुस्तता से भी गायन में भाव को प्रकट करने में बहुत सहायता मिलती है। ग़ैरफ़िल्मी गायकों के मुक़ाबले फ़िल्मी गायकों का गायन ताल में ज़ियादा चुस्त दिखाई देता है।

यहां पर ज़ियादातर सभी छंदों का उनके अनुरूप अलग-अलग ताल में ढांचा ही प्रस्तुत किया है। भविष्य में 'ग़ज़ल का बृहत् पिंगल' की रचना करने की इच्छा है कि जिसमें ग़ज़ल के और भी छंदों का समावेश करके सभी छंदों का संगीत के ताल के साथ समन्वय का विस्तृत वर्णन करुंगा।

***

(८)
ग़ज़ल के छंदों पर आधारित
फ़िल्मी और ग़ैरफ़िल्मी गीत-ग़ज़ल की सूचि

अब मैं ग़ज़ल के छंदों पर आधारित फ़िल्मी और ग़ैरफ़िल्मी गीत-ग़ज़ल की सूचि प्रस्तुत करने जा रहा हूं। हरेक छंद की सूचि में गीत-ग़ज़ल की पहली पंक्ति के साथ उनके गायक का नाम और उसमें प्रयुक्त ताल का उल्लेख भी कर रहा हूं। सूचि में दर्शाए गए लगभग सभी गीत-ग़ज़ल को आप इंटरनेट के ज़रिये www.youtube.com वेबसाइट से प्राप्त कर सकते हैं और इंटरनेट पर गीत-ग़ज़ल ढूंढने में आसानी रहे इसीलिए गायक के नाम का उल्लेख कर रहा हूं। गीत-ग़ज़ल के गीतकार या ग़ज़लकार और संगीतकार के नाम का उल्लेख न करने के लिए मैं उन सभी गीतकार या ग़ज़लकार और संगीतकार से माफ़ी चाहता हूं।

सूचि में दर्शाई गई रचना के किसी भी बंद में दो से ज़ियादा या कम पंक्ति का प्रयोग हुआ हो तो वह रचना ग़ज़ल नहीं है मगर गीत है, क्योंकि ग़ज़ल का हरेक बंद (शेर) दो ही पंक्ति का होता है। जिस रचना के सभी बंद दो ही पंक्ति के हो उस रचना के सभी बंद अपने आप में सम्पूर्ण हो और एक-दूसरे से रदीफ़-काफ़िया से जुड़े हुए हो तो वह रचना ग़ज़ल है अन्यथा वह रचना भी गीत ही है। साथ में इस बात का भी ध्यान रहे कि ग़ज़ल के हरेक बंद (शेर) की हरेक पंक्ति में एक ही छंद प्रयुक्त होता है जबकि पूरे गीत में एक से ज़ियादा छंदों का प्रयोग किया जा सकता है।

यहां हरेक छंद की कुल मात्रा का विवरण भी दिया गया है और हरेक छंद में पद्यभारवाले अक्षरों के साथ-साथ पद्यभारवाली मात्राओं को भी रेखांकित करके दर्शाया गया है। हरेक छंद में एक लघुअक्षर की १ मात्रा और एक गुरुअक्षर की २ मात्रा के हिसाब से कुल मात्रा निश्चित की जा सकती है।

(१)

ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा
१	२ ३	४ ५	६	७ ८	९ १०	११	१२ १३	१४ १५	१६	१७ १८	१९ २०
ये	मह	लों	ये	तख़्	तों	ये	ता	जों	की	दुनि	या
ये	इन्	सां	के	दुश्	मन	स	मा	जों	की	दुनि	या
ये	दौ	लत	के	भू	खे	र	वा	जों	की	दुनि	या
ये	दुनि	या	अ	गर	मिल	भी	जा	एं	तो	क्या	है

१	ये महलों ये तख़्तों ये ताजों की दुनिया	मुहम्मद रफ़ी	दादरा
२	तेरी बेरुख़ी और तेरी मेहरबानी	जगजीत सिंघ	दादरा
३	न ये चांद होगा न तारे रहेंगे	गीता दत्त	दादरा-चलती
४	तेरे दर पे आया हूं फ़रियाद ले कर	तलत महमूद	झपताल
५	हमें काश तुमसे मुहब्बत न होती	लता मंगेश्कर	दीपचन्दी
६	किसी बात पर मैं किसी से ख़फ़ा हूं	किशोरकुमार	कहरवा
७	मुझे प्यार की ज़िन्दगी देनेवाले	मुहम्मद रफ़ी और आशा भोंसले	कहरवा

(२)

ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा
१	२ ३	४ ५	६	७ ८	९ १०	११	१२ १३	१४ १५	१६	१७ १८
न	जी	भर	के	दे	खा	न	कुछ	बा	त	की
ब	ड़ी	आ	र	ज़ू	थी	मु	ला	क़ा	त	की

१	न जी भरके देखा न कुछ बात की	चंदनदास	दादरा
२	ये ख़ुशरंग चेहरा शगुफ़्ता कंवल	उदय शाह	दादरा
३	हेलो ज़िन्दगी ज़िन्दगी नूर है	जगजीत सिंघ	दादरा-चलती
४	दिखाई दिये यूं कि बेख़ुद किया	लता मंगेश्कर	कहरवा

(३)

ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा
१	२ ३	४ ५	६	७ ८	९ १०	११	१२ १३	१४ १५	१६	१७ १८	१९ २०
ये	सो	ने	की	दुनि	या	ये	चां	दी	की	दुनि	या
ये	दौ	लत	की	दुनि	या	अ	मी	रों	की	दुनि	या
ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा
२१	२२ २३	२४ २५	२६	२७ २८	२९ ३०	३१	३२ ३३	३४ ३५	३६	३७ ३८	३९ ४०
य	हां	आ	द	मी	की	भ	ला	बा	त	क्या	है
य	हां	पर	ग़	री	बों	की	औ	क़ा	त	क्या	है

१	ये सोने की दुनिया ये चांदी की दुनिया यहां आदमी की भला बात क्या है	हेमंतकुमार	दादरा
२	जो उनकी तमन्ना है बरबाद हो जा तो ऐ दिल मुहब्बत की क़िस्मत बना दे	मुहम्मद रफ़ी	दादरा
३	मेरे पास आओ नज़र तो मिलाओ इन आंखों में तुमको जवानी मिलेगी	लता मंगेश्कर	दादरा-चलती
४	तेरे प्यार को इस तरह से भुलाना न दिल चाहता है न हम चाहते हैं	मुकेश	झपताल
५	तुझे प्यार करते हैं करते रहेंगे कि दिल बनके दिल में धड़कते रहेंगे	मुहम्मद रफ़ी और सुमन कल्याणपुर	कहरवा
६	मुझे दुनियावालों शराबी न समझो मैं पीता नहीं हूं पिलाई गई है	मुहम्मद रफ़ी	कहरवा

(४)

गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा
१	३	४	६	८	९	११	१३	१४	१६	१८	१९
२		५	७		१०	१२		१५	१७		२०
आ	प	को	दे	ख	कर	दे	ख	ता	रह	ग	या
क्या	क	हूं	औ	र	कह	ने	को	क्या	रह	ग	या

१	आप को देख कर देखता रह गया	जगजीत सिंघ	दादरा-चलती
२	बेबसी जुर्म है हौसला जुर्म है	जगजीत सिंघ	दादरा-चलती
३	ख़ुश रहो हर ख़ुशी है तुम्हारे लिए	मुकेश	दीपचन्दी
४	दिल की धड़कन पे गा उम्रभर मुस्कुरा	तलत महमूद	कहरवा
५	ज़िन्दगी में सदा मुस्कुराते रहो	जगजीत सिंघ	कहरवा

(५)

गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा
१	३	४	६	८	९	११	१३	१४	१६
२		५	७		१०	१२		१५	१७
कै	सा	जा	दू	ब	लम	तू	ने	डा	रा
खो	ग	या	नन्	हा	सा	दिल	ह	मा	रा

१	कैसा जादू बलम तूने डारा	गीता दत्त	दादरा
२	कोई समझेगा क्या राज़-ए-गुलशन	जगजीत सिंघ और चित्रा सिंघ	दादरा-चलती
३	रातभर का है मेहमां अंधेरा	मुहम्मद रफ़ी	दीपचन्दी

(६)

गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा
१ २	३	४ ५	६ ७	८	९ १०	११ १२	१३	१४ १५	१६ १७	१८	१९ २०
छो	ड़	दे	सा	री	दुनि	या	कि	सी	के	लि	ए
प्या	र	से	भी	ज़	रू	री	क	ई	का	म	है
गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा
२१ २२	२३	२४ २५	२६ २७	२८	२९ ३०	३१ ३२	३३	३४ ३५	३६ ३७	३८	३९ ४०
ये	मु	ना	सिब	न	हीं	आ	द	मी	के	लि	ए
प्या	र	सब	कुछ	न	हीं	ज़िन्	द	गी	के	लि	ए

१	छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए ये मुनासिब नहीं आदमी के लिए	लता मंगेश्कर	दादरा
२	शाम-ए-ग़म की क़सम आज ग़मगीं हैं हम आ भी जा आ भी जा आज मेरे सनम	तलत महमूद	दादरा
३	तुझको दरियादिली की क़सम साक़िया मुस्तक़िल दौर पर दौर चलता रहे	जगजीत सिंघ और चित्रा सिंघ	दादरा-चलती
४	चल दिये देके ग़म ये न सोचा कि हम इस जहां में अकेले किधर जाएंगे	लता मंगेश्कर	दीपचन्दी
५	आप यूं ही अगर हम से मिलते रहे देखिए एक दिन प्यार हो जाएगा	मुहम्मद रफ़ी और आशा भोंसले	कहरवा
६	ज़िन्दगी का सफ़र है ये कैसा सफ़र कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं	किशोरकुमार	कहरवा

(७)

ल	गा	ल	गा	ल	गा	ल	गा	ल	गा	ल	गा	ल	गा	ल	गा
१	२ ३	४	५ ६	७	८ ९	१०	११ १२	१३	१४ १५	१६	१७ १८	१९	२० २१	२२	२३ २४
फ़	ज़ां	भी	है	ज	वां	ज	वां	ह	वा	भी	है	र	वां	र	वां
सु	ना	र	हा	है	ये	स	मां	सु	नी	सु	नी	सी	दा	स	तां

१	फ़ज़ां भी है जवां जवां हवा भी है रवां रवां	सलमा आगा	दादरा
२	ये तेरा घर ये मेरा घर किसी को देखना हो गर	जगजीत सिंघ और चित्रा सिंघ	दादरा-चलती
३	जवां है रात साक़िया शराब ला शराब ला	जगजीत सिंघ	कहरवा

(८)

गा	ल	गा	ल	गा	ल	गा	गा	ल	गा	ल	गा	ल	गा
१ २	३	४ ५	६	७ ८	९	१० ११	१२ १३	१४	१५ १६	१७	१८ १९	२०	२१ २२
फ़ा	सि	ला	तो	है	म	गर	को	ई	फ़ा	सि	ला	न	हीं
मुझ	से	तुम	जु	दा	स	ही	दिल	से	तो	जु	दा	न	हीं

१	फ़ासिला तो है मगर कोई फ़ासिला नहीं	जगजीत सिंघ और चित्रा सिंघ	दादरा
२	झूमती चली हवा याद आ गया कोई	मुकेश	दादरा-चलती

(९)

गा	गा	ल	ल	गा	गा	ल	ल	गा	गा	ल	ल	गा	गा
१ २	३ ४	५	६	७ ८	९ १०	११	१२	१३ १४	१५ १६	१७	१८	१९ २०	२१ २२
बी	ते	हु	ए	लम्	हों	की	क	सक	सा	थ	तो	हो	गी
ख़्वा	बों	ही	में	हो	चा	हे	मु	ला	क़ा	त	तो	हो	गी

१	बीते हुए लम्हों की कसक साथ तो होगी	महेन्द्र कपूर	कहरवा
२	बरबाद-ए-मुहब्बत की दुआ साथ लिये जा	मुहम्मद रफ़ी	कहरवा
३	बेकस पे करम कीजिए सरकार-ए-मदीना	लता मंगेशकर	दादरा-चलती
४	मौसम को इशारों से बुला क्यूं नहीं लेते	जगजीत सिंघ	दादरा

(१०)

ल	गा	गा	गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा	गा	गा
१	२	४	६	८	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२३	२५	२७
	३	५	७		१०	१२	१४		१७	१९	२१		२४	२६	२८
ते	री	दुनि	या	में	जी	ने	से	तो	बेह	तर	है	कि	मर	जा	एं
व	ही	आं	सू	व	ही	आ	हें	व	ही	ग़म	है	जि	धर	जा	एं

१	तेरी दुनिया में जीने से तो बेहतर है कि मर जाएं	हेमंतकुमार	कहरवा
२	रुला कर चल दिये इक दिन हंसी बन कर जो आए थे	हेमंतकुमार	कहरवा
३	सुहानी चांदनी रातें हमें सोने नहीं देती	मुकेश	दादरा

(११)

ल	गा	गा	गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा	गा
१	२	४	६	८	९	११	१३	१५	१६	१८
	३	५	७		१०	१२	१४		१७	१९
क	हीं	ऐ	सा	न	हो	दा	मन	ज	ला	लो
ह	मा	रे	आं	सू	ओं	पर	ख़ा	क	डा	लो

१	कहीं ऐसा न हो दामन जला लो	जगजीत सिंघ	कहरवा
२	उधर से तुम चले और हम इधर से	मुहम्मद रफ़ी और लता मंगेशकर	कहरवा
३	सबक जिसको वफ़ा का याद होगा	पंकज उधास	दादरा
४	तेरे बारे में जब सोचा नहीं था	जगजीत सिंघ	रूपक

(१२)

गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा
१ २	३	४ ५	६ ७	८ ९	१०	११ १२	१३ १४	१५ १६	१७	१८ १९	२० २१	२२ २३	२४	२५ २६
हो	श	वा	लों	को	ख़	बर	क्या	बे	ख़ु	दी	क्या	ची	ज़	है
ईश्	क़	की	जे	फिर	स	मझि	ए	ज़िन्	द	गी	क्या	ची	ज़	है

१	होशवालों को ख़बर क्या बेख़ुदी क्या चीज़ है	जगजीत सिंघ	कहरवा
२	देख ली तेरी ख़ुदाई बस मेरा दिल भर गया	तलत महमूद	कहरवा
३	है ये दुनिया कौन सी ऐ दिल तुझे क्या हो गया	गीता दत्त तथा हेमंतकुमार	कहरवा
४	तू नहीं तो ज़िन्दगी में और क्या रह जाएगा	चित्रा सिंघ	दादरा
५	तुम गगन के चन्द्रमा हो मैं धरा की धूल हूं	मन्ना डे और लता मंगेश्कर	रूपक
६	ऐ ख़ुदा हर फ़ैसला तेरा मुझे मंज़ूर है	किशोरकुमार	दीपचन्दी

(१३)

गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा
१ २	३	४ ५	६ ७	८ ९	१०	११ १२	१३ १४	१५ १६	१७	१८ १९
दिल	के	अर	मां	आं	सू	ओं	में	बह	ग	ए
हम	व	फ़ा	कर	के	भी	तन्	हा	रह	ग	ए

१	दिल के अरमां आंसूओं में बह गए	सलमा आगा	कहरवा
२	कैसे कैसे हादसे सहते रहे	जगजीत सिंघ	कहरवा
३	आपके पहलू में आ कर रो दिये	मुहम्मद रफ़ी	दादरा
४	वो रुला कर हंस न पाया देर तक	जगजीत सिंघ	रूपक

(१४)

गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा	गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा
१ २	३	४ ५	६ ७	८ ९	१०	११ १२	१३ १४	१५	१६ १७	१८ १९	२० २१	२२	२३ २४
खो	ग	या	जा	ने	क	हां	आ	र	ज़ू	ओं	का	ज	हां
मुद्	द	तें	गुज़	री	म	गर	या	द	है	वो	दा	स	तां

१	खो गया जाने कहां आरज़ूओं का जहां	हेमंतकुमार	दीपचन्दी

(१५)

गा	गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा	गा	गा	ल	गा
१ २	३ ४	५	६ ७	८ ९	१० ११	१२	१३ १४	१५ १६	१७ १८	१९	२० २१	२२ २३	२४ २५	२६	२७ २८
ऐ	दिल	मु	झे	ऐ	सी	ज	गह	ले	चल	ज	हां	को	ई	न	हो
अप	ना	प	रा	या	मेह	र	बां	ना	मेह	र	बां	को	ई	न	हो

१	ऐ दिल मुझे ऐसी जगह ले चल जहां कोई न हो	तलत महमूद	कहरवा
२	कल चौदवीं की रात थी शबभर रहा चर्चा तेरा	जगजीत सिंघ	कहरवा

(१६)

ल १	ल २	गा ३ ४	ल ५	गा ६ ७	ल ८	ल ९	गा १० ११	ल १२	गा १३ १४
मु	झे	दर्	दे	दिल	का	प	ता	न	था
मैं	अ	के	ले	यूं	ही	म	ज़े	में	था
ल १५	ल १६	गा १७ १८	ल १९	गा २० २१	ल २२	ल २३	गा २४ २५	ल २६	गा २७ २८
मु	झे	आ	प	किस	लि	ए	मिल	ग	ए
मु	झे	आ	प	किस	लि	ए	मिल	ग	ए

१	मुझे दर्द-ए-दिल का पता न था मुझे आप किस लिए मिल गए	मुहम्मद रफ़ी	रूपक
२	वो नहीं मिला तो मलाल क्या जो गुज़र गया सो गुज़र गया	जगजीत सिंघ	दीपचन्दी
३	मैं ख़याल हूं किसी और का मुझे सोचता कोई और है	उदय शाह	कहरवा
४	कभी यूं भी आ मेरी आंख में कि मेरी नज़र को ख़बर न हो	उदय शाह	कहरवा

(१७)

ल १	गा २ ३	ल ४	गा ५ ६	गा ७ ८	ल ९	गा १० ११	ल १२	गा १३ १४	गा १५ १६
न	सी	ब	में	जिस	के	जो	लि	खा	था
कि	सी	के	हिस्	से	में	प्या	स	आ	ई
ल १७	गा १८ १९	ल २०	गा २१ २२	गा २३ २४	ल २५	गा २६ २७	ल २८	गा २९ ३०	गा ३१ ३२
वो	ते	री	मेह	फ़िल	में	का	म	आ	या
कि	सी	के	हिस्	से	में	जा	म	आ	या

१	नसीब में जिसके जो लिखा था वो तेरी मेहफ़िल में काम आया	मुहम्मद रफ़ी	कहरवा
२	हज़ार बातें कहे ज़माना मेरी वफ़ा पे यक़ीन रखना	लता मंगेश्कर	कहरवा

(१८)

गा १ २	गा ३ ४	गा ५ ६	गा ७ ८	गा ९ १०	गा ११ १२	गा १३ १४	गा १५ १६	गा १७ १८	गा १९ २०	गा २१ २२	गा २३ २४	गा २५ २६	गा २७ २८	गा २९ ३०	गा ३१ ३२
जिस	दिल	में ब	सा	था	प्या	र ते	रा	उस	दिल	को क	भी	का	तो	ड़ दि	या
बद	ना	म न	हो	ने	दें	गे तु	झे	ते रा	ना	म ही	ले	ना	छो	ड़ दि	या

१	जिस दिल में बसा था प्यार तेरा उस दिल को कभी का तोड़ दिया	मुकेश तथा लता मंगेश्कर	कहरवा
२	मैं पल दो पल का शायर हूं पल दो पल मेरी कहानी है	मुकेश	कहरवा

३	हम तुझसे मुहब्बत करके सनम रोते भी रहे हंसते भी रहे	मुकेश	कहरवा
४	छू लेने दो नाज़ुक होटों को कुछ और नहीं है जाम है ये	मुहम्मद रफ़ी	दादरा

(१९)

गा १ २	गा ३ ४	गा ५ ६	गा ७ ८	गा ९ १०	गा ११ १२	गा १३ १४	गा १५ १६	गा १७ १८	गा १९ २०	गा २१ २२	गा २३ २४	गा २५ २६	गा २७ २८	गा २९ ३०
चां	दी	की	दी	वा	र न	तो	ड़ी	प्या	र भ	रा	दिल	तो	ड़ दि	या
इक	धन	वा	न की	बे	टी	ने	निर्	धन	का	दा	मन	छो	ड़ दि	या

१	चांदी की दीवार न तोड़ी प्यार भरा दिल तोड़ दिया	मुकेश	कहरवा
२	फूल तुम्हें भेजा है ख़त में फूल नहीं मेरा दिल है	मुकेश और लता मंगेश्कर	कहरवा
३	क्या मिलिए ऐसे लोगों से जिनकी फ़ितरत छुपी रहे	मुहम्मद रफ़ी	कहरवा
४	तन्हा-तन्हा दुख झेलेंगे मेहफ़िल-मेहफ़िल गाएंगे	उदय शाह	कहरवा

(२०)

गा १ २	गा ३ ४	गा ५ ६	गा ७ ८	गा ९ १०	गा ११ १२	गा १३ १४	गा १५ १६
दै	रो ह	रम	में	बस	ने	वा	लो
मै	ख़ा	नों	में	फू	ट न	डा	लो

१	दैर-ओ-हरम में बसनेवालो	जगजीत सिंघ	कहरवा
२	सच्ची बात कही थी मैंने	जगजीत सिंघ	कहरवा
३	चाक जिगर के सी लेते हैं	जगजीत सिंघ	कहरवा

(२१)

गा १ २	गा ३ ४	गा ५ ६	गा ७ ८	गा ९ १०	गा ११ १२	गा १३ १४
सब	की	बा	तें	सुन	ता	हूं
अप	ने ही	दिल	की	कर	ता	हूं

१	सब की बातें सुनता हूं	उदय शाह	कहरवा
२	कितनी सुन्दर दिखती हो	उदय शाह	कहरवा

(२२)

गा १ २	गा ३ ४	गा ५ ६	गा ७ ८	गा ९ १०	गा ११ १२	गा १३ १४	गा १५ १६	गा १७ १८	गा १९ २०	गा २१ २२	गा २३ २४
हो	टों	से	छू	लो	तुम	मे रा	गी	त अ	मर	कर	दो
बन	जा	ओ	मी	त मे	रे	मे री	प्री	त अ	मर	कर	दो

१	होटों से छू लो तुम मेरा गीत अमर कर दो	जगजीत सिंघ	कहरवा
२	ऐ मेरे दिल-ए-नादां तू ग़म से न घबराना	लता मंगेश्कर	कहरवा

(२३)

गा १ २	गा ३ ४	ल ५	गा ६ ७	ल ८	गा ९ १०	गा ११ १२	गा १३ १४	गा १५ १६	ल १७	गा १८ १९	ल २०	गा २१ २२	गा २३ २४
ऐ	दिल	मु	झे	ब	ता	दे	तू	किस	पे	आ	ग	या	है
वो	कौ	न	है	जो	आ	कर	ख़्वा	बों	पे	छा	ग	या	है

१	ऐ दिल मुझे बता दे तू किस पे आ गया है	गीता दत्त	कहरवा
२	बूंदे नहीं सितारे टपके हैं कहकशां से	मुहम्मद रफ़ी	कहरवा
३	ओ दूर जानेवाले वादा न भूल जाना	सुरैया	कहरवा
४	जिस मोड़ पर किये थे हमने क़रार बरसों	चित्रा सिंघ	दादरा
५	ज़ालिम ज़माना मुझको तुमसे छुड़ा रहा है	श्यामकुमार और सुरैया	दादरा
६	दुख सुख था एक सब का अपना हो या बेगाना	पंकज उधास	दादरा-चलती

(२४)

ल	ल	गा	ल	गा	ल	गा	गा	ल	ल	गा	ल	गा	ल	गा	गा
१	२	३	५	६	८	९	११	१३	१४	१५	१७	१८	२०	२१	२३
		४		७		१०	१२			१६		१९		२२	२४
जो	गु	ज़र	र	ही	है	मुझ	पर	उ	से	कै	से	मैं	ब	ता	ऊं
वो	ख़ु	शी	मि	ली	है	मुझ	को	मैं	ख़ु	शी	से	मर	न	जा	ऊं

१	जो गुज़र रही है मुझ पर उसे कैसे मैं बताऊं	मुहम्मद रफ़ी	कहरवा
२	मुझे इश्क़ है तुझी से मेरी जान ज़िन्दगानी	मुहम्मद रफ़ी	कहरवा
३	मेरे दिल में आज क्या है तू कहे तो मैं बता दूं	किशोरकुमार	दादरा

(२५)

गा	ल	ल	गा	ल	गा	ल	गा	गा	ल	ल	गा	ल	गा	ल	गा
१	३	४	५	७	८	१०	११	१३	१५	१६	१७	१९	२०	२२	२३
२			६		९		१२	१४			१८		२१		२४
जब	से	च	ले	ग	ए	हैं	वो	ज़िन्	द	गी	ज़िन्	द	गी	न	हीं
सा	ज़	है	और	स	दा	न	हीं	शम्	मा	है	रो	श	नी	न	हीं

१	जब से चले गए हैं वो ज़िन्दगी ज़िन्दगी नहीं	सुरैया	दादरा

(२६)

गा	गा	ल	गा	ल	गा	ल	ल	गा	गा	ल	गा	ल	गा
१	३	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१
२	४		७		१०			१४	१६		१९		२२
उन	के	ख़	या	ल	आ	ए	तो	आ	ते	च	ले	ग	ए
दी	वा	ना	ज़िन्	द	गी	को	ब	ना	ते	च	ले	ग	ए

१	उनके ख़याल आए तो आते चले गए	मुहम्मद रफ़ी	कहरवा
२	अब क्या मिसाल दूं मैं तुम्हारे शबाब की	मुहम्मद रफ़ी	कहरवा

३	मिलती है ज़िन्दगी में मुहब्बत कभी-कभी	लता मंगेश्कर	कहरवा
४	हम है मता-ए-कूचा-ओ-बाज़ार की तरह	लता मंगेश्कर	दादरा
५	जाना था हम से दूर बहाने बना लिये	लता मंगेश्कर	दादरा
६	मैं ज़िन्दगी का साथ निभाता चला गया	मुहम्मद रफ़ी	दादरा-चलती

(२७)

ल	गा	ल	गा	ल	ल	गा	गा	ल	गा	ल	गा	गा	गा
१	२	४	५	७	८	९	११	१३	१४	१६	१७	१९	२१
	३		६			१०	१२		१५		१८	२०	२२
क	भी	कि	सी	को	मु	क़म्	मल	ज	हां	न	हीं	मिल	ता
क	हीं	ज़	मीं	तो	क	हीं	आ	स	मां	न	हीं	मिल	ता

१	कभी किसीको मुक़म्मल जहां नहीं मिलता	भूपिन्दर सिंघ	कहरवा
२	झुकी-झुकी सी नज़र बेक़रार है कि नहीं	जगजीत सिंघ	कहरवा
३	वो दिल ही क्या तेरे मिलने की जो दुआ न करें	उदय शाह	कहरवा
४	किसी की याद में दुनिया को है भुलाए हुए	मुहम्मद रफ़ी	दादरा
५	ग़रीब जान के हमको न तुम मिटा देना	मुहम्मद रफ़ी और गीता दत्त	दादरा-चलती

(२८)

गा	ल	गा	गा	ल	ल	गा	गा	ल	ल	गा	गा	गा	गा
१	३	४	६	८	९	१०	१२	१४	१५	१६	१८	२०	२२
२		५	७			११	१३			१७	१९	२१	२३
आ	प	को	प्या	र	छु	पा	ने	की	बु	री	आ	दत	है
आ	प	को	प्या	र	ज	ता	ने	की	बु	री	आ	दत	है

१	आपको प्यार छुपाने की बुरी आदत है	मुहम्मद रफ़ी और आशा भोंसले	कहरवा
२	ठहरिए होश में आ लूं तो चले जाइएगा	मुहम्मद रफ़ी और सुमन कल्याणपुर	कहरवा

३	प्यार मुझसे जो किया तुमने तो क्या पाओगी	जगजीत सिंघ	कहरवा
४	रस्म-ए-उल्फ़त को निभाएं तो निभाएं कैसे	लता मंगेश्कर	कहरवा
५	आंख से आंख मिला बात बनाता क्यूं है	चित्रा सिंघ	दादरा
६	कोई ये कैसे बताएं कि वो तन्हा क्यूं है	जगजीत सिंघ	दादरा
७	ज़िन्दगी प्यार की दो-चार घड़ी होती है	हेमंतकुमार	दादरा-चलती

(२९)

गा	ल	गा	गा	ल	ल	गा	गा	गा	गा
१	३	४	६	८	९	१०	१२	१४	१६
२		५	७			११	१३	१५	१७
अह	ले	दिल	यूं	भी	नि	भा	ले	ते	हैं
दर्	द	सी	ने	में	छु	पा	ले	ते	हैं

१	अहल-ए-दिल यूं भी निभा लेते हैं	भूपिन्दर सिंघ तथा लता मंगेश्कर	कहरवा
२	कैसे लिख्खोगे मुहब्बत की किताब	पंकज उधास	कहरवा
३	ज़िन्दगी तुझको मनाने निकले	चंदनदास	दादरा
४	फिर मुझे दीदा-ए-तर याद आया	तलत महमूद	दादरा-चलती

(३०)

गा	ल	गा	गा	ल	गा	ल	गा	गा	गा
१	३	४	६	८	९	११	१२	१४	१६
२		५	७		१०		१३	१५	१७
तुम	को	दे	खा	तो	ये	ख़	या	ला	या
ज़िन्	द	गी	धू	प	तुम	घ	ना	सा	या

१	तुमको देखा तो ये ख़याल आया	जगजीत सिंघ	कहरवा
२	दिल-ए-नादां तुझे हुआ क्या है	तलत महमूद और सुरैया	कहरवा
३	सब्र हम से ज़रा नहीं होता	उदय शाह तथा धारा शाह	कहरवा
४	रात भी नींद भी कहानी भी	चित्रा सिंघ	दादरा
५	दो घड़ी वो जो पास आ बैठे	मुहम्मद रफ़ी और लता मंगेश्कर	दादरा-चलती

अब इन ३० छंदों के अलावा कुछ और छंदों के फ़िल्मी और ग़ैरफ़िल्मी रचना की सूचि प्रस्तुत है कि जिसमें पहले और तीसरे छंद के अलावा बाक़ी के छंद उन ३० छंदों में से किसी एक छंद का आवर्तित स्वरूप है।

(१) गालगा लगागागा गालगा लगागागा

१	तुम तो ठहरे परदेसी साथ क्या निभाओगे	अल्ताफ़ राजा	दादरा-चलती
२	आईने के सौ टुकड़े करके हमने देखे हैं	कुमार सानू	कहरवा

(२) लगागा लगागा लगागा लगा लगागा लगागा लगागा लगा

१	बहारों ने मेरा चमन लूट कर ख़िज़ां को ये इल्ज़ाम क्यूं दे दिया	मुकेश	झपताल

(३) गागा लगागा लगागा लगागा

१	आंसू भरी है ये जीवन की राहें (इस गीत की 'कोई उनसे .....' और 'उन्हें घर मुबारक .....' ये दो पंक्तियां लगागा लगागा लगागा लगागा छंद में है और बाक़ी की सभी पंक्तियां गागा लगागा लगागा लगागा छंद में है।)	मुकेश	झपताल

(४) गालगा गालगा गालगा गा गालगा गालगा गालगा गा

१	इतनी शक्ति हमें देना दाता मन का विश्वास कमज़ोर हो ना	सुष्मा श्रेष्ठा और पुष्पा पागधरे	दादरा

(५) गालगागा लगालगा गागा गालगागा लगालगा गागा

१	ज़िक्र होता है जब क़यामत का तेरे जलवों की बात होती है	मुकेश	दादरा-चलती
२	याद में तेरी जाग-जाग के हम रातभर करवटें बदलते हैं	मुहम्मद रफ़ी और लता मंगेश्कर	दादरा-चलती

***

समाप्त

ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि के
मुख्य और गौण पद्यभार
(संगीत के ताल के आधार पर)

ग़ज़ल एक अतिप्रचलित काव्य प्रकार है। ग़ज़ल के अतिप्रचलित होने की एक वजह ग़ज़ल के छंदों की प्रवाहिता भी है। ग़ज़ल के छंद मात्रिक छंद होने के कारन ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि को और ग़ज़ल के छंदों को संगीत के ताल के साथ आसानी से जोड़ा जा सकता है। ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को संगीत के ताल के आधार पर निश्चित किया जा सकता है और यही इस लेख का मुख्य विषय रहेगा।

ग़ैर-फ़िल्मी और फ़िल्मी ग़ज़ल के अलावा फ़िल्मी गानों में भी ग़ज़ल के छंदों का अच्छा प्रयोग हुआ है। तक़रीबन् २००० से अधिक फ़िल्मी गानों का अभ्यास करने पर ५०० से अधिक गाने (फ़िल्मी गीत और ग़ज़ल दोनों को मिला कर) ऐसे मिले कि जिसमें ग़ज़ल के छंदों का प्रयोग हुआ हो और पूरा गाना एक ही छंद में हो। जिस गाने में एक से अधिक छंदों का प्रयोग हुआ हो उसे गिनती में लिया नहीं है। इसके अलावा ५०० से अधिक ग़ैर-फ़िल्मी रचनाओं का भी ग़ज़ल के छंदों के अनुसार वर्गीकरण किया है। इतने गीत-ग़ज़ल के अभ्यास करने पर ४० से अधिक छंद प्राप्त हुए। इन छंदों में सभी प्रचलित छंदों का समावेश हो जाता है। इन छंदों में प्रयुक्त संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को संगीत के ताल के आधार पर निश्चित किया जा सकता है। ग़ज़ल के छंदों के निरूपण के लिए संधि के मुख्य पद्यभार को ही ध्यान में लिया जाता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर नहीं किया जा सकता।

ग़ज़ल के छंदशास्त्र के अनुसार पंक्ति (मिसरा) के अंत में आनेवाले लघुअक्षर को वज़न में अलग से न गिनते हुए उसे उससे पहलेवाले गुरुअक्षर में ही समाविष्ट कर दिया जाता है और उस लघुअक्षर को उसी गुरुअक्षर के साथ संयुक्त तरीक़े से ही उच्चारा जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि ग़ज़ल के छंदों का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही होता है। ग़ज़ल के छंदों में एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं होता। ग़ज़ल के प्रचलित होने में एक वजह ग़ज़ल के छंदों की प्रवाहिता भी है। एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग छंद की प्रवाहिता को कम कर देता है।

पद्यभार आधारित पद्धति से ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि की सूचि प्रस्तुत है कि जिसमें हरेक संधि का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही है और किसी भी संधि में एकसाथ दो से अधिक

स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं हुआ है। हरेक संधि के मुख्य पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया है और गौण पद्यभारवाले अक्षर को नीचे बिंदी करके दर्शाया है।

संधि क्रमांक	संधि	संधि का प्रकार	संधि की कुल मात्रा
०१	लगाग़ा	पंचकल	१+२+२=५
०२	ग़ालगा	पंचकल	२+१+२=५
०३	लगालग़ा या लग़ालगा	षट्कल	१+२+१+२=६
०४	लल़गागा	षट्कल	१+१+२+२=६
०५	गालल़गा	षट्कल	२+१+१+२=६
०६	लग़ागागा	सप्तकल	१+२+२+२=७
०७	गालग़ागा	सप्तकल	२+१+२+२=७
०८	गागालग़ा	सप्तकल	२+२+१+२=७
०९	ललगालग़ा	सप्तकल	१+१+२+१+२=७
१०	लग़ाललगा	सप्तकल	१+२+१+१+२=७
११	गागाग़ागा या गागागाग़ा	अष्टकल	२+२+२+२=८
१२	लगालग़ागा	अष्टकल	१+२+१+२+२=८
१३	ललगागाग़ा	अष्टकल	१+१+२+२+२=८
१४	गाललग़ागा	अष्टकल	२+१+१+२+२=८
१५	गागाललग़ा	अष्टकल	२+२+१+१+२=८
१६	ललगाललग़ा	अष्टकल	१+१+२+१+१+२=८
१७	गालगालग़ा	अष्टकल	२+१+२+१+२=८

उपरोक्त सूचि में संधि क्रमांक १ से १७ में से संधि क्रमांक १ से १२ को मुख्य संधि समझना चाहिए कि जिसके आवर्तित स्वरूप की रचना पाई जाती है तथा संधि क्रमांक १३ से १७ को गौण संधि समझना चाहिए कि जिसका प्रयोग ज़ियादातर गागाग़ागा या गागागाग़ा संधि के विकल्प के रूप में ही होता है।

अब मैं अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी संधि की सूचि प्रस्तुत कर रहा हूं कि जिसमें किसी भी संधि में एकसाथ दो से अधिक लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं हुआ है। हरेक संधि के मुख्य पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया है और गौण पद्यभारवाले अक्षर को नीचे बिंदी करके दर्शाया है।

संधि क्रमांक	संधि	संधि का प्रकार	संधि की कुल मात्रा
०१	गाग़ाल	पंचकल	२+२+१=५
०२	गालग़ाल या ग़ालगाल	षट्कल	२+१+२+१=६
०३	गागालल़	षट्कल	२+२+१+१=६
०४	गालग़ालल	सप्तकल	२+१+२+१+१=७
०५	ग़ागागाल	सप्तकल	२+२+२+१=७
०६	ग़ाललगाल	सप्तकल	२+१+१+२+१=७
०७	गागाग़ालल	अष्टकल	२+२+२+१+१=८
०८	गाललग़ालल	अष्टकल	२+१+१+२+१+१=८
०९	गागाल़गाल	अष्टकल	२+२+१+२+१=८

उपरोक्त दोनों सूचि में एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं हुआ है और किसी एक संधि के आवर्तित स्वरूप में भी एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं होता है। एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग छंद की प्रवाहिता को कम कर देता है। अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी संधि की उपरोक्त सूचि में से कुछ संधि का प्रयोग अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी कुछ संधि के विकल्प के रूप में (छंद की अंतिम संधि के अलावा) किया जा सकता है जिसका वर्णन मैं बाद में करूंगा।

ग़ज़ल के छंदों में एक गुरुअक्षर के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग किया जा सकता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग वर्जित है तथा जहां दो लघुअक्षरों का प्रयोग हो वहां दो स्पष्ट लघुअक्षरों का ही प्रयोग करना होगा, दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग या एक गुरुअक्षर का प्रयोग वर्जित है। सिर्फ़ गुरुअक्षर के प्रयोगवाले छंदों में एक गुरुअक्षर के स्थान पर (मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के सिवा) दो स्पष्ट लघुअक्षरों का भी प्रयोग करने की छूट है मगर छंद का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही होना चाहिए। एक गुरुअक्षर के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों के प्रयोग के लिए यह नियम बाधक नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर नहीं किया जा सकता।

किसी भी मात्रामेल रचना के पठन या गायन में कुछ जगह पर विशेष ठनकार या आघात का अनुभव किया जा सकता है, उस विशेष ठनकार या आघात को पद्यभार कहते हैं। मात्रामेल रचना में प्रयुक्त संधि के आधार से निश्चित कालांतर पर पद्यभार (विशेष ठनकार या आघात) की पुनरावृत्ति होती रहती है। पद्यभार (विशेष ठनकार या आघात) के स्थान के लिए ताल-स्थान या ताल शब्द का भी प्रयोग होता है, मगर संगीत की परिभाषा में ताल

शब्द का अलग अर्थ में प्रयोग होने के कारन हम पद्यभार शब्द का ही प्रयोग करेंगे और वही ज़ियादा उचित है।

जिस तरह ग़ज़ल-रचना में प्रवाहिता के लिए छंद ज़रूरी है उसी तरह संगीत-रचना में प्रवाहिता के लिए ताल ज़रूरी है और ग़ज़ल गेय काव्य का ही प्रकार है, इस वजह से ग़ज़ल के छंद और संगीत के ताल के बीच में सीधा संबंध स्थापित होता है। ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि का पद्यभार निश्चित करने के लिए हम संगीत के ताल का ही प्रयोग करेंगे। ग़ज़ल के छंद में प्रयुक्त संधि पंचकल, षट्कल, सप्तकल और अष्टकल प्रकार की हैं कि जिसका पद्यभार निश्चित करने के लिए हम अनुक्रम से ताल झपताल (१० मात्रा), दादरा (६ मात्रा), रूपक (७ मात्रा) या दीपचन्दी (१४ मात्रा) और कहरवा (८ मात्रा) का प्रयोग करेंगे। सब से पहले मैं इन चारों ताल का विवरण प्रस्तुत करता हूं।

झपताल :

मात्रा : १०

खंड : ४ (२+३+२+३)

ताली की मात्रा : १, ३ और ८

खाली की मात्रा : ६

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
×		२			०		३		

ताल दादरा :

मात्रा : ६

खंड : २ (३+३)

ताली की मात्रा : १

खाली की मात्रा : ४

धा	धी	ना	धा	ती	ना
१	२	३	४	५	६
×			०		

ताल रूपक :

मात्रा : ७

खंड : ३ (३+२+२)

ताली की मात्रा : ४ और ६

खाली की मात्रा : १

ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
१	२	३	४	५	६	७
×			१		२	

ताल दीपचन्दी :

मात्रा : १४

खंड : ४ (३+४+३+४)

ताली की मात्रा : १, ४ और ११

खाली की मात्रा : ८

धा	धीं	-	धा	गे	तीं	-	ता	तीं	-	धा	गे	धीं	-
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
×			२				०			३			

ताल कहरवा :

मात्रा : ८

खंड : २ (४+४)

ताली की मात्रा : १

खाली की मात्रा : ५

धा	गे	न	ती	न	क	धी	न
१	२	३	४	५	६	७	८
×				०			

ताल के संदर्भ में कुछ पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत है।

सम :

किसी भी ताल की पहली मात्रा को सम कहते हैं कि जहां पर पूरी लय का वज़न आता है। सम किसी भी ताल की पहली और सब से ज़ियादा वज़नदार मात्रा है। सम दर्शाने के लिए × चिहन का प्रयोग किया जाता है।

ताली :

ताल में आघात के स्थान को ताली कहते हैं। सम के अलावा ताली के स्थान को दर्शाने के लिए अंकों का प्रयोग होता है।

खाली :

ताल की वह विषम मात्रा कि जिससे ताल का स्वरूप निर्धारित होता है उसे खाली कहते हैं। खाली को दर्शाने के लिए ० चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

सम, ताली और खाली की उपरोक्त व्याख्या एक संगीतकार ही अच्छी तरह से समझ सकता है। अगर आसान शब्दों में समझा जाए तो किसी रचना के गायन के दरमियान श्रोतागण ताली बजा कर साथ दें तो उनकी तालीओं का स्थान रचना में प्रयुक्त ताल के हरेक खंड की पहली मात्रा पर होगा। यानि कि श्रोतागण की तालीओं का स्थान रचना में प्रयुक्त ताल के सम, ताली और खाली पर होगा। जैसे कि झपताल में स्वरबद्ध हुई रचना के गायन में श्रोतागण ताली दे कर साथ दें तो उनकी तालीओं का स्थान झपताल की १, ३, ६ और ८ वीं मात्रा पर (अनुक्रम से झपताल के सम, ताली, खाली और ताली पर) होगा।

हमने ऊपर देखा कि ताल के हरेक खंड की पहली मात्रा ताल की अन्य मात्रा से ज़ियादा वज़नदार होती है और पहले खंड की पहली मात्रा (सम) अन्य खंड की पहली मात्रा के मुक़ाबले ज़ियादा वज़नदार होती है। संगीत के ताल के आधार से ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को निश्चित करते समय ताल में लघु-गुरु अक्षरों को इस तरह गूंथना होगा कि लघुअक्षर की १ मात्रा और गुरुअक्षर की २ मात्रा गिनते हुए ताल के हरेक खंड की पहली मात्रा पर जहां तक मुमकिन हो गुरुअक्षर ही आए। इसके बाद सम (ताल की सब से ज़ियादा वज़नदार मात्रा) के आधार से मूल संधि निश्चित करेंगे कि जिसके पहले ही अक्षर पर मुख्य पद्यभार होगा। अलग-अलग प्रकार की संधि के अनुरूप ताल का प्रयोग करके ताल के पहले खंड की पहली मात्रा (सम) के आधार पर मूल संधि का मुख्य पद्यभार निश्चित किया जा सकता है तथा ताल के दूसरे खंड की पहली मात्रा के आधार पर मूल संधि का गौण पद्यभार निश्चित किया जा सकता है। अलग-अलग प्रकार की मूल संधि के मुख्य और गौण पद्यभार के आधार पर अन्य सभी संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को निश्चित किया जा सकता है। इस तरह से पंचकल, षट्कल, सप्तकल और अष्टकल प्रकार की मूल संधि उनके अनुरूप ताल के आधार से निश्चित करने के बाद उसी मूल संधि के मुख्य और गौण पद्यभार के आधार पर ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त होनेवाली सभी प्रकार की संधि का मुख्य और गौण पद्यभार निश्चित किया जा सकता है। मूल संधि ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती। हरेक संधि के मुख्य पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया है और गौण पद्यभारवाले अक्षर को नीचे बिंदी करके दर्शाया है।

: पंचकल संधि :

पंचकल संधि में एक लघुअक्षर और दो गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हैं कि जिसकी कुल मात्रा ५ होती है। १० मात्रा के झपताल में पंचकल संधि दो बार इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
गा	-	ग़ा	-	ल	गा	-	ग़ा	-	ल
×		२			०		३		

ऊपर झपताल की १ से ५ मात्रा और ६ से १० मात्रा दोनों में से मूल पंचकल संधि गाग़ाल प्राप्त होती है। इसके आधार पर लगाग़ा और ग़ालगा संधि को प्राप्त किया जा सकता है।

: षट्कल संधि :

षट्कल संधि में दो लघुअक्षर और दो गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हैं कि जिसकी कुल मात्रा ६ होती है। ग़ज़ल के छंदों में षट्कल संधि दो प्रकार से प्रयुक्त होती है।

(१)	दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त न होते हो ऐसी षट्कल संधि
(२)	दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त होते हो ऐसी षट्कल संधि

दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त न होते हो ऐसी षट्कल संधि :

६ मात्रा के ताल दादरा में दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त न होते हो ऐसी षट्कल संधि इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६
गा	-	ल	ग़ा	-	ल
×			०		

ताल दादरा के आधार से दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त न होते हो ऐसी मूल षट्कल संधि गालग़ाल या ग़ालगाल प्राप्त होती है क्योंकि षट्कल संधि गालगाल त्रिकल संधि गाल का आवर्तित स्वरूप है। इसके आधार पर लगालग़ा या लग़ालगा संधि को प्राप्त किया जा सकता है।

दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त होते हो ऐसी षट्कल संधि :

६ मात्रा के ताल दादरा में दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त होते हो ऐसी षट्कल संधि इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६
गा	-	ल	ल़	गा	-
×			०		

ताल दादरा के आधार से दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त होते हो ऐसी मूल षट्कल संधि गालल़गा प्राप्त होती है। इसके आधार पर लल़गागा और गागालल़ संधि को प्राप्त किया जा सकता है।

: सप्तकल संधि :

सब से पहले ऐसा मान लेते हैं कि सप्तकल संधि में एक लघुअक्षर और तीन गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हैं। सप्तकल संधि की कुल मात्रा ७ होती है। ७ मात्रा के ताल रूपक में सप्तकल संधि इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६	७
गा	-	ल	ग़ा	-	गा	-
×			१		२	

ताल रूपक के आधार से मूल सप्तकल संधि गालग़ागा प्राप्त होती।

एक लघुअक्षर और तीन गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हो ऐसी सप्तकल संधि १४ मात्रा के ताल दीपचन्दी में दो बार इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
गा	-	ल	ग़ा	-	गा	-	गा	-	ल	ग़ा	-	गा	-
×			२				०			३			

ताल दीपचन्दी के आधार से भी मूल सप्तकल संधि गालग़ागा ही प्राप्त होती है।

गालग़ागा संधि के आधार से लग़ागागा, गागालग़ा, ग़ागागाल और गालग़ालल संधि को प्राप्त किया जा सकता है। लग़ागागा, गागालग़ा और ग़ागागाल संधि के आधार पर अनुक्रम से लग़ाललगा, ललगालग़ा और ग़ाललगाल संधि को प्राप्त किया जा सकता है।

: अष्टकल संधि :

सब से पहले ऐसा मान लेते हैं कि अष्टकल संधि में चार गुरुअक्षर प्रयुक्त होते हैं कि जिसकी कुल मात्रा ८ होती है। ८ मात्रा के ताल कहरवा में अष्टकल संधि इस तरह से आ सकती है।

१	२	३	४	५	६	७	८
गा	-	गा	-	ग़ा	-	गा	-
×				०			

अष्टकल संधि में प्रयुक्त चार गुरुअक्षर में से कौन सा गुरुअक्षर ताल कहरवा की पहली मात्रा पर स्थित है ये निश्चित करना मुश्किल है मगर सिर्फ़ गुरुअक्षर के प्रयोगवाले छंदों की रचना का पठन या गायन करने पर संधि के पहले या दूसरे गुरुअक्षर पर मुख्य पद्‌यभार का अनुभव किया जा सकता है। इस हिसाब से मूल अष्टकल संधि गागाग़ागा या गागागाग़ा को प्राप्त किया जा सकता है। गागाग़ागा संधि के आधार पर लगालग़ागा, गाललग़ागा, गागाग़ालल, गाललग़ालल और गागाल़गाल संधि को तथा गागागाग़ा संधि के आधार पर ललगागाग़ा, गागाललग़ा, ललगाललग़ा और गालगालग़ा संधि को प्राप्त किया जा सकता है।

ग़ज़ल के छंदों की रचना की इस पद्‌यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ मूल पंचकल संधि गाग़ाल का और मूल षट्‌कल संधि गालग़ाल या ग़ालगाल का प्रयोग ग़ज़ल के छंदों में नहीं होता क्योंकि इनका अंत्याक्षर लघुअक्षर है, जबकि मूल षट्‌कल संधि गालल़गा, मूल सप्तकल संधि गालग़ागा और मूल अष्टकल संधि गागाग़ागा या गागागाग़ा का प्रयोग ग़ज़ल के छंदों में होता है क्योंकि इनका अंत्याक्षर गुरुअक्षर है।

इस पद्‌यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ छंद निरूपण के लिए मुख्य पद्‌यभार को ही ध्यान में लिया जाता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट लेने के लिए मुख्य पद्‌यभार के अलावा गौण पद्‌यभार को भी ध्यान में लेना पड़ता है। एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट मुख्य और गौण पद्‌यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर नहीं ली जाती। मुख्य और गौण पद्‌यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट लेने से छंद की प्रवाहिता को नुकसान पहुंचता है।

अब मैं संधि के मुख्य और गौण पद्‌यभार को दर्शानेवाली तुलनात्मक सूचि प्रस्तुत करता हूं। दोनों सूचि में हरेक संधि के मुख्य पद्‌यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया है और गौण पद्‌यभारवाले अक्षर को नीचे बिंदी करके दर्शाया है।

अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी संधि के मुख्य और गौण पद्यभार

संधि क्रमांक	संधि का प्रकार	मुख्य और गौण पद्यभार के साथ संधि	मुख्य पद्यभार से गौण पद्यभार का मात्रा-अंतर	गौण पद्यभार से मुख्य पद्यभार का मात्रा-अंतर
०१	पंचकल	लगाग़ा	२	३
०२	पंचकल	ग़ालगा	२	३
०३	षट्कल	लगालग़ा या लग़ालगा	३	३
०४	षट्कल	लल़गागा	३	३
०५	षट्कल	गालल़गा	३	३
०६	सप्तकल	लग़ागागा	३	४
०७	सप्तकल	गालग़ागा	३	४
०८	सप्तकल	गागालग़ा	३	४
०९	सप्तकल	ललगालग़ा	३	४
१०	सप्तकल	लग़ाललगा	३	४
११	अष्टकल	गागाग़ागा या गागागाग़ा	४	४
१२	अष्टकल	लगालग़ागा	४	४
१३	अष्टकल	ललगागाग़ा	४	४
१४	अष्टकल	गाललग़ागा	४	४
१५	अष्टकल	गागाललग़ा	४	४
१६	अष्टकल	ललगाललग़ा	४	४
१७	अष्टकल	गालगालग़ा	४	४

अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी संधि के मुख्य और गौण पद्यभार

संधि क्रमांक	संधि का प्रकार	मुख्य और गौण पद्यभार के साथ संधि	मुख्य पद्यभार से गौण पद्यभार का मात्रा-अंतर	गौण पद्यभार से मुख्य पद्यभार का मात्रा-अंतर
०१	पंचकल	गागा़ल	२	३
०२	षट्कल	गालगा़ल या गा़लगाल	३	३
०३	षट्कल	गागालल़	३	३
०४	सप्तकल	गालगा़लल	३	४
०५	सप्तकल	गा़गागाल	३	४
०६	सप्तकल	गा़ललगाल	३	४
०७	अष्टकल	गागागा़लल	४	४
०८	अष्टकल	गाललगा़लल	४	४
०९	अष्टकल	गागाल़गाल	४	४

उपरोक्त दोनों सूचि के अभ्यास से कुछ तारण निकाल सकते हैं जो इस प्रकार है।

(०१)	किसी भी संधि में मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं हुआ है।
(०२)	जिस संधि में मुख्य या गौण पद्यभार लघुअक्षर पर स्थित हो उस संधि में मुख्य या गौण पद्यभारवाले लघुअक्षर के बाद गुरुअक्षर का ही प्रयोग हुआ है।
(०३)	मुख्य पद्यभार और गौण पद्यभार दोनों लघुअक्षर पर ही स्थित हो ऐसी एक भी संधि ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त नहीं होती।
(०४)	किसी भी एक संधि के आवर्तित स्वरूप में भी दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षर एकसाथ नहीं आते।
(०५)	हरेक पंचकल संधि में मुख्य पद्यभार से द्विकल संधि (गा) और गौण पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल) को अलग किया जा सकता है।

(०६)	हरेक षट्कल संधि में मुख्य पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल) और गौण पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल या लगा) को अलग किया जा सकता है।
(०७)	हरेक सप्तकल संधि में मुख्य पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल) और गौण पद्यभार से चतुष्कल संधि (गागा या गालल) को अलग किया जा सकता है।
(०८)	हरेक अष्टकल संधि में मुख्य पद्यभार से चतुष्कल संधि (गागा या गालल या लगाल) और गौण पद्यभार से चतुष्कल संधि (गागा या गालल या लगाल) को अलग किया जा सकता है।
(०९)	जिन अष्टकल संधि में दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त नहीं हुए हैं उन अष्टकल संधि में दो लघुअक्षरों के बीच में एक से अधिक गुरुअक्षर का प्रयोग नहीं हुआ है।
(१०)	अष्टकल संधि <u>ल</u>गालग़ागा और गा<u>ल</u>गालग़ा में ही मुख्य पद्यभार लघुअक्षर पर स्थित है क्योंकि दोनों संधि अनुक्रम से अष्टकल संधि <u>गा</u>गाग़ागा और गा<u>गा</u>गाग़ा के ही स्वरूप हैं।

अब मैं अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी संधि की वैकल्पिक संधि की सूचि और अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी संधि की वैकल्पिक संधि की सूचि प्रस्तुत करता हूं। दोनों सूचि में किसी भी संधि में एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं हुआ है तथा किसी भी संधि के आवर्तित स्वरूप में भी एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं होगा।

अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी संधि की वैकल्पिक संधि

संधि क्रमांक	संधि का प्रकार	मुख्य और गौण पद्यभार के साथ संधि	वैकल्पिक संधि (अंत्याक्षर गुरुअक्षर)	वैकल्पिक संधि (अंत्याक्षर लघुअक्षर)
०१	पंचकल	लगाग़ा	*	*
०२	पंचकल	ग़ालगा	*	*
०३	षट्कल	लगालग़ा या लग़ालगा	* *	* *
०४	षट्कल	लल़गागा	*	*
०५	षट्कल	गालल़गा	*	*
०६	सप्तकल	लग़ागागा	लग़ाललगा	*
०७	सप्तकल	गालग़ागा	*	गालग़ालल
०८	सप्तकल	गागालग़ा	ललगालग़ा	*
०९	सप्तकल	ललगालग़ा	*	*
१०	सप्तकल	लग़ाललगा	*	*
११	अष्टकल	गागाग़ागा या गागागाग़ा	लगालग़ागा, गाललग़ागा। ललगागाग़ा, गागाललग़ा, ललगाललग़ा, गालगालग़ा।	गागाग़ालल, गाललग़ालल, गागाल़गाल। *
१२	अष्टकल	लगालग़ागा	*	*
१३	अष्टकल	ललगागाग़ा	ललगाललग़ा	*
१४	अष्टकल	गाललग़ागा	*	गाललग़ालल
१५	अष्टकल	गागाललग़ा	ललगाललग़ा	*
१६	अष्टकल	ललगाललग़ा	*	*
१७	अष्टकल	गालगालग़ा	*	*

अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी संधि की वैकल्पिक संधि

संधि क्रमांक	संधि का प्रकार	मुख्य और गौण पद्यभार के साथ संधि	वैकल्पिक संधि (अंत्याक्षर गुरुअक्षर)	वैकल्पिक संधि (अंत्याक्षर लघुअक्षर)
०१	पंचकल	गागाल	*	*
०२	षट्कल	गालगाल या गालगाल	* *	* *
०३	षट्कल	गागालल	*	*
०४	सप्तकल	गालगालल	*	*
०५	सप्तकल	गागागाल	*	गालल गाल
०६	सप्तकल	गाललगाल	*	*
०७	अष्टकल	गागागालल	*	गाललगालल
०८	अष्टकल	गाललगालल	*	*
०९	अष्टकल	गागालगाल	*	*

अंत्याक्षर लघुअक्षर हो ऐसी वैकल्पिक संधि को अखंडित प्रकार के छंदों में अंतिम संधि के रूप में प्रयुक्त नहीं की जा सकती जबकि खंडित प्रकार के छंदों में छंद का अंत्याक्षर गुरुअक्षर आए इस तरह से अंतिम संधि के रूप में भी प्रयुक्त की जा सकती है। अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी वैकल्पिक संधि को अखंडित और खंडित दोनों प्रकार के छंदों में छंद का अंत्याक्षर गुरुअक्षर आए इस तरह से प्रयुक्त की जा सकती है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि का और उसकी वैकल्पिक संधि का प्रयोग छंद-रचना में इस तरह से करना होगा कि छंद का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही आए। फिर भी सिर्फ़ गुरुअक्षर के प्रयोगवाले छंदों में ही यानि कि गागागागा या गागागागा संधि के प्रयोगवाले छंदों में ही वैकल्पिक संधि का प्रयोग करना उचित होगा।

पद्यभार आधारित पद्धति के मुताबिक़ छंद निरूपण के लिए मुख्य पद्यभार को ही ध्यान में लिया जाता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट लेने के लिए मुख्य पद्यभार के अलावा गौण पद्यभार को भी ध्यान में लेना पड़ता है। एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर नहीं ली जाती।

एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट (वैकल्पिक संधि का प्रयोग) सिर्फ़ गागाग़ागा या गाग़ागाग़ा संधि के प्रयोगवाले छंदों में ही मुख्य और गौण पद्यभार को ध्यान में रख कर इस तरह से लेनी चाहिए कि छंद का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही आए।

अब मैं ग़ज़ल के कुछ प्रचलित छंदों की सूचि प्रस्तुत करता हूं कि जिसमें अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी संधि क्रमांक १ से १२ का ही प्रयोग हुआ है। हरेक छंद में मुख्य पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया गया है और गौण पद्यभारवाले अक्षर को नीचे बिंदी करके दर्शाया गया है।

ग़ज़ल के प्रचलित छंद

०१	लगाग़ा लगाग़ा लगाग़ा लगाग़ा तर्क-संगत नाम : ४लगाग़ा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
०२	लगाग़ा लगाग़ा लगाग़ा लगा तर्क-संगत नाम : ४लगाग़ा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
०३	लगाग़ा लगाग़ा लगाग़ा लगाग़ा लगाग़ा लगाग़ा लगाग़ा लगाग़ा तर्क-संगत नाम : ८लगाग़ा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
०४	ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा तर्क-संगत नाम : ४ग़ालगा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
०५	ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ा तर्क-संगत नाम : ४ग़ालगा-लगा प्रकार : शुद्ध-खंडित
०६	ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा तर्क-संगत नाम : ८ग़ालगा प्रकार : शुद्ध-अखंडित

०७	लगालग़ा लगालग़ा लगालग़ा लगालग़ा तर्क-संगत नाम : ४लगालग़ा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
०८	गालग़ा लगालग़ा गालग़ा लगालग़ा तर्क-संगत नाम : २(-ल+२लगालग़ा) प्रकार : शुद्ध-खंडित
०९	गागा लल़गागा लल़गागा लल़गागा तर्क-संगत नाम : -लल+४लल़गागा प्रकार : शुद्ध-खंडित
१०	लग़ागागा लग़ागागा लग़ागागा लग़ागागा तर्क-संगत नाम : ४लग़ागागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
११	लग़ागागा लग़ागागा लग़ागा तर्क-संगत नाम : ३लग़ागागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
१२	गालग़ागा गालग़ागा गालग़ागा गालग़ा तर्क-संगत नाम : ४गालग़ागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
१३	गालग़ागा गालग़ागा गालग़ा तर्क-संगत नाम : ३गालग़ागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
१४	गालग़ागा गालग़ा गालग़ागा गालग़ा तर्क-संगत नाम : २(२गालग़ागा-गा) प्रकार : शुद्ध-खंडित
१५	गागालग़ा गागालग़ा गागालग़ा गागालग़ा तर्क-संगत नाम : ४गागालग़ा प्रकार : शुद्ध-अखंडित

१६	ललगालग़ा ललगालग़ा ललगालग़ा ललगालग़ा तर्क-संगत नाम : ४ललगालग़ा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
१७	लगालग़ागा लगालग़ागा लगालग़ागा लगालग़ागा तर्क-संगत नाम : ४लगालग़ागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
१८	गागागाग़ा गागागाग़ा गागागाग़ा गागागाग़ा तर्क-संगत नाम : ४गागागाग़ा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
१९	गागाग़ागा गागाग़ागा गागाग़ागा गागाग़ा तर्क-संगत नाम : ४गागाग़ागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
२०	गागाग़ागा गागाग़ागा तर्क-संगत नाम : २गागाग़ागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
२१	गागाग़ागा गागाग़ा तर्क-संगत नाम : २गागाग़ागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
२२	गागागाग़ा गागा गागागाग़ा गागा तर्क-संगत नाम : २(२गागागाग़ा-गागा) प्रकार : शुद्ध-खंडित
२३	गागालग़ा लगाग़ा गागालग़ा लगाग़ा तर्क-संगत नाम : २(गागालग़ा+लगाग़ा) प्रकार : मिश्र-अखंडित
२४	ललगालग़ा लगाग़ा ललगालग़ा लगाग़ा तर्क-संगत नाम : २(ललगालग़ा+लगाग़ा) प्रकार : मिश्र-अखंडित

२५	**गालल़गा लगालग़ा गालल़गा लगालग़ा** **तर्क-संगत नाम : २(गालल़गा+लगालग़ा)** **प्रकार : मिश्र-अखंडित**
२६	**गागा लग़ालगा लल़गागा लग़ालगा** **तर्क-संगत नाम : -लल+२(लल़गागा+लग़ालगा)** **प्रकार : मिश्र-खंडित**
२७	**लग़ालगा लल़गागा लग़ालगा लल़गा** **तर्क-संगत नाम : २(लग़ालगा+लल़गागा)-गा** **प्रकार : मिश्र-खंडित**
२८	**गाल़गागा लल़गागा लल़गागा लल़गा** **तर्क-संगत नाम : ल+४लल़गागा-गा** **प्रकार : शुद्ध-खंडित**
२९	**गाल़गागा लल़गागा लल़गा** **तर्क-संगत नाम : ल+३लल़गागा-गा** **प्रकार : शुद्ध-खंडित**
३०	**गाल़गागा लग़ालगा लल़गा** **तर्क-संगत नाम : ल+लल़गागा+लग़ालगा+लल़गागा-गा** **प्रकार : मिश्र-खंडित**

छंद क्रमांक २७, २८, २९ और ३० में अंतिम संधि लल़गागा प्रयुक्त होती है और उस अंतिम संधि लल़गागा के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से अंतिम संधि लल़गा प्राप्त होती है कि जिसमें दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का या एक गुरुअक्षर का प्रयोग करने की छूट है।

छंद क्रमांक २८, २९ और ३० में पहली संधि गाल़गागा प्रयुक्त होती है कि जिसका मुख्य पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर (गालग़ागा) के बजाय संधि के अंतिम गुरुअक्षर (गाल़गागा) पर स्थित है। लल़गागा संधि की शुरूआत में एक लघुअक्षर बढ़ाने से ललल़गागा संधि प्राप्त होती है। ग़ज़ल के छंदों में दो से अधिक लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त नहीं होते। इस आधार पर ललल़गागा संधि के पहले और दूसरे लघुअक्षरों को मिला कर एक गुरुअक्षर गिनने पर गाल़गागा संधि प्राप्त होती है कि जिसका मुख्य पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर

(गालग़ागा) के बजाय संधि के अंतिम गुरुअक्षर (गाल़गागा) पर स्थित है। गाल़गागा संधि कि जिसका मुख्य पद्यभार संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर स्थित है उसका प्रयोग षट्कल संधि लल़गागा और लग़ालगा के साथ मिश्र रूप के जितना ही मर्यादित रहेगा। षट्कल संधि लल़गागा और लग़ालगा का मुख्य पद्यभार भी संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर ही स्थित है।

लघुअक्षर की १ मात्रा और गुरुअक्षर की २ मात्रा गिनने पर छंद क्रमांक २५ के अलावा सभी अखंडित प्रकार के (शुद्ध और मिश्र दोनों) छंदों में पद्यभार समान मात्रा के अंतर पर स्थित है और सभी खंडित प्रकार के (शुद्ध और मिश्र दोनों) छंदों में सिर्फ़ लोप के स्थान पर लोप किये हुए अक्षरों की मात्रा के जितनी ही विषमता रहती है जो स्वीकार्य है। छंद क्रमांक २५ में संधि के मिश्रण के कारन पद्यभार के अंतर में विषमता रहती है और इसीलिए उसमें पद्यभार अनुक्रम से ७ और ५ मात्रा के अंतर पर स्थित है। जिस छंद में संधि के मिश्रण के कारन पद्यभार के अंतर में विषमता जितनी ज़ियादा रहेगी उस छंद की प्रवाहिता और गेय-तत्व उतने ही कम होंगे और उस छंद के प्रचलित होने की संभावना भी उतनी ही कम हो जाएगी।

***

: सविनय विज्ञप्ति :

ग़ज़ल के छंद और ताल के संबंध में मैं स्वतंत्ररूप से सालों से संशोधन कर रहा हूं। यहां पर प्रस्तुत की गई सोच या विचारणा बहुधा मेरी मौलिक है, पर एक बात की स्पष्टता करना मैं ज़रूरी समझता हूं।

डो. रईश मनीआर गुजराती के जानेमाने ग़ज़लकार हैं। इस विषय में उन्होंने गुजराती में एक पुस्तक 'गझलनुं छंदोविधान' लिखकर सन २००७ में प्रकाशित की थी। उन की शुभेच्छा और सदभावना हंमेशा मेरे साथ रहे हैं।

छंद और ताल का संबंध समझाने के लिए पद्यभार का उपयोग मुझ से पहले वो कर चुके हैं। ग़ज़ल के छंदो का पंचकल, षट्कल, सप्तकल, अष्टकल में वर्गीकरण भी उन की पुस्तक में किया गया है। ग़ज़ल के छंदो के शास्त्रीय नाम देने का प्रयोग भी वो कर चूके हैं।

उन की कुछ विचारणा से मेरी असहमती रही, पर मुझे उन की पुस्तक में समाविष्ट बहुत सी बातें उपयोगी लगीं। इसी लिये मैंने अपनी पुस्तक को समृद्ध करने के हेतु से, अपनी तरह से कुछ परिवर्तन सहित, उन के पुस्तक से काफ़ी सारी बातों का प्रभाव ग्रहण किया है।

इस अर्थ में यह पुस्तक मेरा संशोधन होते हुए भी डो. रईश मनीआर के कार्य से काफ़ी हद तक प्रभावित है। इस मौक़े पर मैं उन का ऋण स्वीकार करता हूं और पुस्तक में जहां जहां उन के पुस्तक से ली हुई परिभाषा मैंने प्रयुक्त की है, वहां पर उन का उल्लेख न कर पाने पर अपना खेद प्रगट करता हूं।

उदय शाह
दादाटट्टू स्ट्रीट (सांई स्ट्रीट)
नवसारी-३९६४४५ (गुजरात)
Phone : (R) 02637-255511 & (M) 09428882632